राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय

नया
शब्द गुंजार

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज
तथा अन्य संतों के शब्दों का संग्रह

संरक्षक
हुज़ूर परम संत दयाल शिवमंगलसिंह जी महाराज

मनुष्य बनो

समर्पण :
राधास्वामी सतसंग आश्रम्
प्लॉट नं. ७, ए.ओ.सी. गेट, वेस्ट मारडपल्ली,
सिकन्द्राबाद - आन्ध्र प्रदेश - १८.

मंगलाचरण

करूँ बंदगी राधास्वामी आगे ।
जिन पर ताप जीव बहु जागे ।।
बारम्बार करूँ परनाम ।
सतगुरु पदम धाम सत नाम ।।
आदि अनादि जुगादि अनाम ।
संत स्वरूप छोड निज धाम ।।
आये भव जल नाव लगाई ।
हम से जीवन लिया चढाई ।।
शब्द दृढाया सुरत बताई ।
करम भरम से लिया बचाई ।।

कोटि कोटि करूँ बंदना अरब खरब दण्डौत ।
राधा स्वामी मिल गये खुला भक्ति का सोत ।।

भक्ति सुनाई सब से न्यारी ।
वेद कतेब न ताहि बिचारी ।।
सत्त पुरुष चौथे पद बासा ।
संतन का वहाँ सदा विलासा ।।
सो घर दरसाया गुरु पूरे ।
बीन बजे जहाँ अचरज तूरे ।।
आगे अलख पुरुष दरबारा ।
देखा जाय सुरत से सारा ।।
तिस पर अगम लोक इक न्यारा ।
संत सुरत कोई करत विहारा ।।

तहाँ से दर से अटल अटारी ।
अद्भुत राधा स्वामी महल सँवारी ।।
सुरत हुई अतिकर मगनानी ।
पुरुष अनामी जाय समानी ।।

निवेदन

छंगा अमल विमल निर्मल मन, चित्त सुरत निरत कर तव चरण वासा पाये ।

काशी माई तज काशी हो प्रकाशी, प्रभु चरण में रही समाये ।

शंकर मान सरोवर से आये, संतन दरस परस सुख सार पाये ।।

शाँता शाँत चित्त गुरु प्रेम प्रीति की हिय में जोत जगाये ।।

दीन दुखी की आरत सुन दीन बन्धु मज धार से नय्या पार लगाये ।।

दिनेश सुप्रभात की आभा ले, नव जीवन का मंगलप्रद संदेश सुनाये ।।

रेणुका निश्चित हो समर्पण, तुम्हरी दया अपार अचल सुहाग वर पाये ।।

तेज नारायण का सच्चा मित्र तुम्हरी शरण में सदा रहे लव लाये ।।

रेखा प्रसन्न चित्त अपने निष्काम सेवा से, सबकाक मन हर्षाये ।।

केदार, केदारनाथ की शरण में, लीन तुम्हरे द्वारे सुख ठौर पाये ।।

अर्चना रचना अनमोल, मन मन्दिर में साँझ सवेरे प्रेम दीप जलाये ।।

सीता शुद्ध बुद्ध शुभचिंतक हित चित से सबका मान बढाये ।।

मुकुन्द सहर्ष तन मन धन अर्पण कर तुम्हरी मौज में रहे मन मगनाये ।

शीला शीलवन्त गुरु दरबार में, हित चित से मंगल आरत साज सजाये ।।

नमन बाल गोपाल कनह्या सबको सादर नमनकर, शुभ आशीष पाये ।

हम सब तेरे सेवक दाता, प्रभु सेवक तुमको हैं प्यारे,

सतसंगी सब प्रेम रस माते, सतगुरु राधास्वामी हैं सबके रखवारे ।।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी, सतगुरु सबके है सबसे न्यारे ।।

सतगुरु का संदेश

SHIVA MANGAL SINGH
Guru Nivas Weekly Bazar
Nizamabad.

Dear Pujya kailashpathiji,

Radha swami.

It gives me immense pleasure, to write few words about this book "SHABDA GUNJAR" It is a known fact that Bhajans, Shabds have soothing effect on mind and soul of a person if he gets himself immersed in them. He will forget his pains and sufferings for some times, He feels very happy and relieved.

This book contains Bhajans and Shabda (Hymns) which depict several shades of life. Your selection of Bhajans and Shabds is laudible. I am sure that this book greatly will help the reader or singer to shed his anxiety and help him in getting peace of mind and soul.

May Huzoor Maharaj bless you and your family. I convey my sincere good wishes and wish you peace and happiness of mind and soul.

May Sat Guru bless all the readers and Singers
Radha Swami

Shiv Mangal Singh

Dt. 26-01-2008

Yours in Him

निवेदन

मालती मंगल सुमन सज आरत सतगुरु पद सरोज में आये
प्रभु चरणन का ध्यान सुमिरन, प्रेम प्रीत से शीश नवाये
जनम जनम धन्य भाग मोरे, तुम सों पितु मात पाये
दिनेश रहे सुप्रभात ही स्वरणिम किरण की आशा जोत जगाये
कल्याण तो अंक में तुम्हरे, बाबा बाबा कहे मन्द मन्द मुसकाये
वर्षा स्नेह की सरिता प्रथम वर्षा की ओस कण से चरणामृत तृप्ताये
लव लगी रहे सदा माँगू पल पल, चरण कमल सो प्रीति बढाये
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, गुरु दया साधु संगत जीवन सुफल कराये

सादर सप्रेम भेंट

शिव शब्द सागर की लहरों से गुंजित **शब्द गुँजार ।**
मन पावे विश्राम चित में शाँति आनन्द अपार ॥
तुम तो समरथ साईयाँ, सब जग के आधार ।
प्रेम भक्ति दान दीजे, कीजे सबका बेडा पार ॥

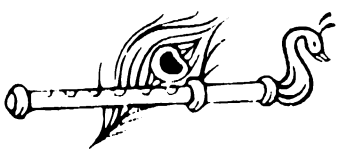

विनीत
मालती मंगल

सन्त अवस्था में स्थित हमारे श्रेष्ठ आचार्यों में आचार्य प्रवर कैलाशपति जी चैतन्य के अनन्त सागर में उठी एक ऐसी लहर है जिस ने राधास्वामी परम सन्तों की रस-धार को खूब पीया है। उन्होंने दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल के परम प्रिय आत्मज हजूर परम दयाल, हजूर नन्दू भाई जी व हजूर आनंदराव जी महाराज से ऊर्जा व प्रकाश पाया है जो अलौकिक व अद्वितीय है। उसी की सुन्दर अभिव्यक्ति इस [illegible] ~~पुस्तक~~ में मिलती है। साधकों व राधास्वामी अनुयायियों के लिए यह अमूल्य भेंट, [illegible], उनका सराहनीय प्रयास है। इस विशिष्ट देन के लिए समूचा अध्यात्म जगत, विशेषकर राधास्वामी समाज उनका सदा आभारी रहेगा।

(हस्ताक्षर)
22.1.2007
(विजयदयाल शून्यो)

तुम आये इस जगत में जीव दया के काज ।
अब तो तारे ही बने तुम्हें हमारी लाज ।।
हम तो आप ही पतित हैं तुम हो पतित उद्धार ।
आये पडे भव सिंध में कीजे भव जल पार ।।
शब्द जहाज चढायकर सुरत निरत की डोर ।
बेडा कीजे पार प्रभु निरख आपनी ओर ।।
दुःख भंजन मन रंजन साज भक्ति का साज ।
दीन दुःखी को तारिये संतों के सिर ताज ।।
तुम तो समरथ साईयाँ सब जग के आधार ।
साध संग नित दीजिये राधास्वामी परम दयाल ।।

सादर सप्रेम समर्पण

सजनी करूँ अर्पण श्रद्धा सुमन सन्तन चरण ।।
नन्दु दरस परस ते पायो निर्मल बुद्धि मन ।।
दयाल आनन्द की दया पायो आनन्द रतन ।।
परम दयाल की दात मिला अनमोल प्रेम धन ।।
सुनी शिवमंगल बाणी अमृत अनहद धुन ।।
कटी चौरासी मिटा भव भय जन्म मरण ।।
गुरु देव मिले दयाल शून्योजी जग तारण ।।
गुरु सेवा साध संगत पायो सतगुरु चरण शरण ।।

शंकरलाल अगरवाल
शान्ता अगरवाल

प्रार्थना

कृपा सिंधु पूरण धनी, तुम सब के हितकारी ।
मंगल मय मंगल सदन, गुरु मंगलकारी ।।
दीन बन्धु करुणा अयन, करुणा के सागर ।
सगुण अगुण गुणवान हो, नागर गुण आगर ।।
नहीं कोई महिमा कह सके, तुम अपरम्पारा ।
दया दृष्टि से देखिये, दे अपना सहारा ।।
नाम रूप के जगत से, प्रभु तुम हो न्यारे ।
नाम रूप दरसाय कर, बने सब के प्यारे ।।
भक्ति दान का दान दे, अपना कर लीजे ।
राधास्वामी नाम धन, कृपा मोहे दीजे ।।

*****

मंगल गुरु का नाम है, गुरु मंगल की खान ।
मंगल गुरु के नाम में, नाम है मंगल दान ।।१।।
मंगल नाम धराय कर, तजा अमंगल भाव ।
निशदिन गुरु का नाम लो, यही है पक्का दाव ।।२।।
मंगल दिन गुरु दर्शन भया, कटा पाप का फंद ।
मंगल जाल को मेटकर, रहो सदा निर्द्वन्द ।।३।।
तुम क्यों पड़े हो भूल में, भूल है दुख अज्ञान ।
गुरु का लेकर आसरा, तजो मोह मद मान ।।४।।
मंगलमय मंगल सदन, मंगल चारों ओर ।
मंगल जपो राधास्वामी का, लो सतपद में ठौर ।।५।।

प्रार्थना

दाता दयाला करदे संभाला ।
रख कर शरण में कर दे निहाला ॥
तेरी दया हो हम पर तेरा करम हो हम पर ।
हम सबपे दाता तेरा करम हो ॥
चरणों में तेरे हम शीष नवायें शीष नवायें ।
दाता दयाला करदे संभाला ॥
सुख दुख में स्वामी समता हो मन में ।
मन हो न चंचल सुमिरन भजन में ॥
जीवन धारा मेरा तू है रखवाला ।
दाता दयाला करदे संभाला ॥

(०)

राधास्वामी राधास्वामी सतगुरुदाता, दीन दयाल कृपा निधान ।
हम सबतेरे सेवक मालिक, हम सबका करदो कल्याण ॥
हाथ जोड़कर करें वन्दना, चरण कमल की धूर मिले ।
भक्ति भाव से ध्यावें तुमको, दीजे हमको सच्चा ज्ञान ॥
तन मन धन सब तेरा मालिक, हमरा जीवन तेरा दान ।
काल करम से जनम मरण से, मुक्ति पावें दीजे हमको यह वरदान ।

(०)

राधास्वामी राधास्वामी सतगुरु दाता, दीन दयाल कृपा निधान ॥टेक॥
हम सब तेरे सेवक मालिक हम सबका करदो कल्याण ।
तन मन धन सब तेरा मालिक, हमरा जीवन तेरा दान ॥
भक्ति भाव से ध्यावें तुमको, दे दो हमको सत ज्ञान ।
हम सब तेरी शरण में दाता, शरणागत धन का दो वरदान ॥

राधास्वामी सत चित आनन्द मूरत ।।टेक।।

जा दिन गुरु पद शीष झुकाया, समझा आया शुभ महूरत ।। राधा०
सत भी पाया चित भी पाया, देखी आनन्द वाली मूरत ।। राधा०
गुरु भक्ति का दीवा बाला, प्रेम प्रीति की बाती पूरत ।। राधा०
कर्म धर्म संयम जप तप की, मुझको अब नहीं रही जरूरत ।। राधा०
राधास्वामी मौज दिखाई, मिट गई मन की सभी कदूरत ।। राधा०

(०)

आनन्द मंगल साज साजकर आरत करना ।
सतगुरु हुये सहाय प्रेम का दम नित भरना ।।
प्रेम में है आनन्द प्रेम की बात है न्यारी ।
प्रेमी जन को लगे बात प्रीतम की प्यारी ।।
प्रेम है आनन्द रूप प्रेम नहीं विपत कलेशा ।
कहाँ मिले वह भगत सुनावे प्रेम संदेशा ।।
दुख स्थल है जगत जगत की चिंता जावे ।
प्रेम जो मन में बसे जगत नहीं कभी सतावे ।।
कहते हैं सब यही जगत में सुख नहीं भाई ।
हमको नहीं विश्वास प्रेम की परख बडाई ।।
प्रेम प्रेम है प्रेम प्रेम प्रीतम से कीजिये ।
दुख कलेश को मेट नाम आनन्द का लीजिये ।।
प्रेम है भव के सिंध की सुन्दर सुगम सुतरनी ।
सहज ही वह तर जावे करे जो प्रेम की करनी ।।
राधास्वामी दयाल प्रेम का लिया अवतारा ।
जीव निबल की बाँह पकड़ प्रेम का दिया सहारा ।।

(०)

सत में सत्ता चित में चेतन आनन्द है सुख धाम ।
सतचित आनन्द एक अवस्था समझ जप सतनाम ।।
देह गेह की सुध बुध भूलो इष्ट धाम चित्त लाओ ।
आनन्द उपजे भव दुख भागे सुगति अलौकिक पाओ ।।
राधास्वामी गुरु हम पाये जनम सुफल करलीना ।
राधास्वामी धाम की आसा मन ताही को दीन्हा ।।

सर पे भार आन संभारो, तुम सम और न दूजा ।
हम शरण तुम्हारे तुम रखवारे करें कमल पद पूजा ॥

दीन हीन चरणों में आया, भेंट भाव स्वामी लीजे ।
कृपा दृष्टि से दाता, शरणागत धन दीजे ॥
तुम तो आये जीव उबारन, नाम धरा अपना जग तारण ।
प्रगट भये आनन्द के कारण, हम पापी शरण, तुम पतित उधारण ॥

(०) सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय ।
हे भगवन यह अभिलाषा हम सबकी पूरी होय ॥
विद्या बुद्धि तेज बल सबके बेहतर होय ।
दूध पूत धन धान्य से वंचित रहे न कोय ॥
आपकी भक्ति प्रेम से मन होय भरपूर ।
राग द्वेष से चित मेरा कोसों भागे दूर ॥
मिले भरोसा नाम का हमें सदा दाता दयाल ।
आशा तेरे धाम की बनी रहे तुम हो कृपाल ॥
पाप से हमें बचा दया कीजे दीन दयाल ।
अपना भक्त बनाय कर सबको करो निहाल ॥
दिल में दया और उदारता मन में प्रेम प्यार ।
हृदय में धैर्य वीरता सबको दे करतार ॥
नारायण तुम आप हो पाप के विमोचनहार ।
क्षमा करो अपराध सबके कर दो भव से पार ॥
आनन्द हाथ जोड़ विनती करे सुनिये सतगुरु कृपा निधान ।
साधु संग सुख मुझे दीजिये दया नम्रता दान ॥

(०) **जब संत जगत में आते हैं ॥ टेक ॥**

दुखियों के दुख को हरते हैं सतपुरुष का नाम जपाते हैं ॥
वह जाति धर्म के बन्धुवे नहीं, हर दीन दुखी को अंग लगाते है ॥
कर्म कान्ड, ज्ञान मार्ग से ऊपर चढ प्रेम भक्ति पंथ सिखाते हैं ॥
ऊँच नीच का भरम मिटा सबको इनसान बनाते हैं ॥
बाह्याडंबर पाखंड छुडा मूल नाम भक्ति प्रेम का बताते हैं ॥
मीठी बाणी कोमल वचन सुना जीवों को सतसंग में चेताते हैं ॥
मन इन्द्रि को रोक, विषय वासना से सुरत को दसवें द्वार ले जाते हैं ॥
जो प्रेम करें आनन्द से उनको सतगुरु भव सागर पार कराते हैं ॥

सतगुरु का आशीर्वाद

अहसान बडा छंगा तेरा मै किस मुख से उसका जिक्र करूँ ।
मेरे तनके चाम की जूती भी पहना दूँ तो भी कभी न तरूँ ॥
दाता अब तुमको यश दें बदला अहसान का तुमको मिले ।
मैं रक्षक बनकर सदा रक्षा तुम सबकी करता रहूँ ॥
तुम्हारे दुख संकट सब कट जायें कीर्ति फैले संसार में अब ।
देवी देवता भी शरमायें मैं किस मुख से तुम्हारा गुणगान करूँ ॥
मैं दास तेरे चरणों का हूँ आस एक तुझसे हासिल मुझको ।
प्रचार गुरुमत का तुम करते रहो गुरु की दया शाँति मिले तुमको ॥
राधास्वामी बरकत दें तुम सबको, चरणों की भक्ति सबको मिले ।
[illegible] तेरे परिवार का अब युग युग में कीर्ति फैले ॥

(०)

श्रद्धा सुमन

श्रद्धा सुमन अर्पण करूँ, दाता के चरणों में सिर झुका ।
जिनके रहे वैकुण्ठ उनको सुख दुख सारे भूला ॥
निश्चित अचिंत अवस्था, संतोष चित में धार कर ।
पावें निर्वाण गति यह है गुरु चरणों की दया ॥
राधास्वामी चरणन में, इनको विश्राम मिले ।
जिनका कामना छोड दी बेफिक्री में जीवन बीते ॥

माता पिता के चरणों में वन्दना, गुरु पद का ध्यान ।
राधास्वामी सतगुरु की दया सबका हो कल्याण ॥

मात पिता के पूण्य स्मृति में

समर्पित
शंकरलाल अगरवाल

गुरु परायणता

..... पूज्य मालती मंगल

भक्ति अनुपम सुख स्वरूपम, भक्ति शुभ मति ज्ञान ।
भक्ति कर्मम, भक्ति धर्मम, भक्ति में कल्याण ।।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी नाम अति पावन ।।
सतगुरु परम दयाल प्रगटे जगमें सजनी प्रेम पंथ दरसावन ।।
गुरु धोबिया न्यारा सतसंगत अवघट घाट कर्म चदरिया धुलावन ।।
गुरु की सेवा साध की संगत सहज निज स्वरूप दरसावन ।।
गुरु भक्ति भव सागर सुगम तरनी संतन गुण गावन ।।
गुरु नाम रसायन औषधी, गुरु चरण त्रिविध ताप ज्वाला हरन ।।
गुरु नाम रतन धन पाय, निरधनता भाव मिटावन ।।
गुरु की संगत से कंचन देह हो कुंदन युक्ति सरल पावन ।।
गुरु खेवटिया चतुर मंजधार पडी नय्या पार लगावन ।।
गुरु बंदी छोड प्रगटे, काल से दुखी जीव छुडावन ।।
गुरु मात पिता भाई बन्धु सहायक अद्भुत बन्धन पावन ।।
गुरु पास बसे सोई पावे प्यारे सुख बसंत पावन ।।
गुरुपद प्रेम प्रीति परतीति सजनी सुरत सिंगार करावन ।।
गुरु से पाय प्रेम भक्ति का एक रस जीवन मुक्त दशा मन भावन ।।
गुरु सेवा तन शीतल गुरु ज्ञान मन निश्चल गुरु कृपा पद निर्वाण ।।
तीरथ राज समाज गुरु का सतगुरु संग स्नान सुरत धुलावन ।।
गुरु का सुमिरन ध्यान प्यारे, मिटे सकल गुणावन ।।
गुरु दरस परस संतन परम सुख सार प्रेम उमंग बढ़ावन ।।
गुरु की साज आरती सुरत सिया, मन राम अनहद जोत जगावन
जग की चिंता प्यारी आलस मोह नींद सुलावन ।।
गुरु का मंगल राग गुणगान, सतसंग मोह नींद से जगावन ।।
दया क्षमा करुणाशील सजनी सुरत सिंगार सजावन ।।
गुरु पद शीष झुके तज अभिमान अंतर सहस दल कमल खुलावन
गुरु चरण धूर धार हिये कुमति नसे सुमति बसे भाग जगावन ।।
गुरु शरणागति है मूल मंत्र, पहुंचावे राधास्वामी धाम पावन ।।

प्रार्थना

पूर्ण धनि दाता दयाल सतगुरु के चरण कमलों में

धन्य धन्य चेतन की मूरत धन्य धन्य शिव दयाला ।
धन्य धन्य तेरी अद्भुत लीला, धन्य सहज कृपाला ।।
प्रगट हो कर अज्ञान धरम को तूने दूर कराया ।
घट के अंदर चैतन मूरत अपनी आप दिखाया ।।
तू राधास्वामी परम तत्व है इष्ट अनाम कृपाला ।
नर स्वरूप में दर्शन देकर कीन्हा मुझको निहाला ।।

*****

मेरे घट में राधास्वामी राधास्वामी धाम है ।
मेरे घट में राधास्वामी राधास्वामी नाम है ।।
राधास्वामी राधास्वामी रात दिन रटता हूँ मैं ।
राधास्वामी योग युक्ति से मुझे विश्राम है ।।
प्रेम राधास्वामी का है, भक्ति राधास्वामी की है ।
राधास्वामी ज्ञान पाया, जगत से उपराम है ।।
राधास्वामी रम रहें एडी से चोटी तलक ।
राधास्वामी इष्ट में मेरे अब उन्हीं से काम है ।।
ढलते ढलते दिन ढला ढलने पे उसके शाम है ।
राधास्वामी की लगन अब नन्दु को आठों जाम है ।।

शिव का नान्दिया
नन्दु भाई

परम संत सतगुरु विजय दयाल शून्योजी महाराज

''मेरी नजर में मोती आया है''

जीवन को प्रभु का आशिर्वाद समझो । परमात्मा सदा गुरु रूप म **तुम्हारे साथ है** । परमात्मा ने कभी साथ छोडा नहीं, जिस दिन वह साथ **छोड देगा** तुम्हारा वजूद नहीं रहेगा ।

भगवान का भजन भगवान की भक्ति वह प्रकाश है । जिसके आलोक में बुरे से बुरा व्यक्ति भी चमक उठता है और प्रभु प्राप्ति का सुपात्र बन जाता है ।

सतगुरु प्रकाश का पुंज है । जो भीतर भी प्रकाशित करता है और बाहर भी ।

माँ का पल्लो दामन है **भक्ति** । बाप है **ध्यान** । **ध्यान** धोका दे सकता है । और **ज्ञान अहंकार** पैदा कर सकता है । **परन्तु भक्ति सदा रक्षा करती रहती है ।**

मनुष्य वह है जिसके जीवन में प्रेम उतर आया है । हम चाहते हैं नर से नारायण बन जाये । और मानव से महा मानव बन जाय । और महा मानव से दिव्य मानव बने । और परमात्मा की उपलब्धि को प्राप्त हो । और इनसान अपनी पूरी आभा में खिले ।

सतगुरु प्रकाश देता है । **भक्ति** देता है । और **ज्ञान** भी । निश्चिंत जीवन में खुशी प्राप्त होती है और तुम धन्य हो जाते हो । **परमात्मा स्वरूप सतगुरु के आशिर्वाद से जीवन में आलोक उतरता है** । जो **निराशा और कर्महीनता** के **अंधकार** को दूर कर देता है । उसके आशिर्वाद से **एक दीपक जल उठता है । उसका प्रकाश तुम्हें जीवन में राह दिखाता है ।**

सतगुरु तुमसे अहंकार माँगता है । अहंकार ही अंधकार है हिंसा है । और दैत्यरूपी सब विकार काम क्रोध ... आदि भयंकर रूप दिखाते हैं । यही दुख का मूल है । अहंकार से बड़ा कोई पाप नहीं अहंकारी सबसे बडा नास्तिक है । **अहंकार छोडना ही सतसंग है ।**

निवेदन

भजन : - 'भजन' भगवान की भक्ति वह प्रकाश है जिसके आलोक में बुरे से बुरा भी चमक उठता है और प्रभु की प्राप्ति का सुपात्र बन जाता है ॥

..... परम संत सतगुरु शून्योजी महाराज ....

हम आये आये आये आज तुम्हारे द्वार पर प्रभु भिक्षा मांगन आये ।
रूप अनूप तुम्हारा देखा । मिट गया काल करम का लेखा ।
सबका सब विधि किया परेखा । प्रेम प्रीत का यही बिसेखा ।
नयनो जल भर लाये ॥
हित चित रहूँ आज्ञाकारी । नख सिख उर बसो हमारी ।
तुम हो दीन बन्धु हितकारी । राधास्वामी चरण शरण बलिहारी ।
लो अब अंग लगाये ॥

संतो के भजन और अनहद राग धुन शब्दों को परमतत्व कल्याणकीरी ''शिव'' शब्दसागर की अथाह लहरों की गूँज में बिखरे शब्दों को राग रागिनियों को दयाल स्वरूप नन्दु भाई जी महाराज ने संग्रहित और चयन कर शब्द झंकार, शब्द टंकार ... शब्द गुँजार के रूप में सतसंगियों को महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज का प्रसाद भेंट किया । जो परमतत्व ज्ञान, सतगुरु, सतगुरु शरण, सतसंग, मानुष जनम के सुधार विकास तथा निज स्वरूप, सतचित आनन्द स्वरूप पर प्रकाश डालता है जिस से सतचित आनन्द स्वरूप की अनुभूति, परमशाँति और परमसुख की अनुभूति प्राप्त हो सकती है । परम दयाल जी महाराज के शब्दों में **मानवता ही प्रधान धर्म है । और शिव संकल्प एवं प्रेम प्रभु शरणागति ही सुखी जीवन का मूल है ।** इसी को दृष्टि में रखते हुये किये गये इस प्रयास के राधास्वामी बाग के कोमल सुगन्धित पुष्प सतगुरु के चरण कमलों में अर्पण है । आप सब सतसंगियों के आभारी हैं । जिन्होंने विशेष सहयोग दिया है । भूल चूक क्षमा करे सतगुरु सबका कल्याण करें।

आपके मंगलमय जीवन की श्रेयोभिलाषी,
सप्रेम सादर भाव से समर्पित
मालती मंगल

गुरु महिमा

गुरु ज्ञाता गुरु ज्ञान गम, गुरु ज्ञान के रूप ।
गुरु के चरण सरोज में सूझे ज्ञान अनूप ।।
गुरु विदेह गुरु गुण रहित, गुरु सबके आधार ।
गुरु की दया अपार से उतरे भव जल पार ।।
जा सुमिरत ब्रह्मा थके, सुर नर मुनि देवा ।
कहें कबीर सुन साधुवा, कर सतगुरु सेवा ।।

गुरु कृपा

गुरु के दर्शन करने हम आये अब दूर से ।। टेक ।।
आये अब दूर से चल आये हम दूर से ।।
दीन अनाथ भिखारी दर के हुये मंगता हम धुर घर के ।
गुरु मिलावें मूर से ।।
और आस विश्वास न कोई, चरण गुरु के पकडे सोई,
वही छुड़ावें कूर से ।।
सुरत डोर चरण में लागी, चित चंचलता सब ही भागी,
वही लगावें तूर से ।।
अनहद बाजे बजें गगन में, सुरत चढ़ी और लगी धुन में,
दृष्टि मिली अब नूर से ।।
कायरता अब मन से भागी, सुरत शब्द में छिन छिन लागी,
डरे काल गुरु सूर से ।।
सहसकमल तज त्रिकुटी आई, सुन्न परे महासुन्न चढ़ाई,
भेद मिला गुरु पूर से ।।
भंवर गुफा का ताला तोडा, अमर नगर जा सुरत को जोड़ा,
मिल गई सत्त ज़हूर से ।।
अलख पुरुष की प्रीत समानी, अगम लोक जा बैठक ठानी,
हुई पावन गुरु धूर से ।।
राधास्वामी चरण तुम्हारे, लगे मोहे अब अतिकर प्यारे,
आरत करूँ शऊर से ।।

मंगलाचरण

नमामी सतगुरुम शांन्तं, प्रत्यक्षं सत रुपिणाम ।
प्रसन्न वदनाक्षयं, सर्व देव समूह मयम ।।
अचिन्त्या व्यक्त रूपाय, निर्गुणाय गुणात्मने ।
नमस्ते जगदाधारं, निराधारं च केवलम ।।
गुरु पादोदकं पानं, गुरो रुच्छिष्ठ भोजनम ।
गुरु मूर्ति सदा ध्यानं, गुरुस्तोत्रं सदा जपः ।।
गुकारश्चान्धकारस्तु, रुकारस्तम निरोधकृत ।
अन्धकारं बिना शित्वा, चिन्तां बिनाशित्वा दुहेः ।।
गुकारश्च गुणातीतो, रुपातीतो, रुकारकः ।
गुण रूप विहीनत्वाद्, गुरुरित्युभिधीयते ।।
सर्वश्रुति शिरोरत्नः निराजित् पादाम्बुजम् ।
यस्य स्मरण मात्रेण, ज्ञानमुत्पद्यते स्वयम् ।।
एवं गुरु पदं श्रेषुं, देव नामषि दुर्लभम् ।
ध्रुवं तेषायं सर्वेषाम्, नास्ति तत्वं गुरोर्परम् ।।
राधास्वामी गुरोनमि, परम नामं तथैवच ।
सकर्मणा मनसा वाचा, सर्व दाराध्ययेद गुरुम् ।।
शुद्ध चैतन्य चिन्मयम् सर्वं, त्रैलोक्य परमं परम् ।
तुर्य्या तुर्य्यातीतं, राधास्वामी वरानन्म् ।।

- प्रार्थना -

तू उधर ले चल जिधर राहत मिले फरहत मिले ।
दूर रख उस राह से जिस राह में कुलफ़त मिले ।।
पाप का टेढ़ा है रस्ता उससे हमको दूर रख ।
धर्म के रसते को रौशन कर के चल पुर नूर रख ।।
धन्य सतगुरु राधास्वामी भक्ति दे चरणों की तू ।
लीन करले अपने में अब अभय पद की दौलत मिले ।।

(०)

बन्दनम्

बन्दनं सतज्ञान दाता, बन्दनम सत ज्ञान मय ।
बन्दनं निर्वाण राता, बन्दनम निर्वाण मय ।।१।।

भक्ति मुक्ति योग युक्ति, आपके आधीन सब ।
आप ही हैं सिंध सदगति, जीव जंतू मीन सब ।।२।।

आप गुरु सतगुरु दया, और प्रेम के भंडार है ।
आप करता धरता हैं, करतार जगदा धार है ।।३।।

ऋद्धि सिद्धि शक्ति नव निधि, है चरण में आपके ।
बच गया भव दुख से जो आया शरण में आपके ।।४।।

भक्ति दीजिये नाम की, सतनाम में विश्राम दे ।
राधास्वामी अपना कीजे, राधास्वामी धाम दे ।।५।।

(०)

चरण शरण की बन्दना, नित कोई और न काम ।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम ।।
तेरी शरणागत हुआ, फिर किसकी राखूँ आस ।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूँ उदास ।।
रूप ध्याऊँ नाम गाऊँ, शब्द राता मन ।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ।।
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाये ।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय ।।
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग ।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरण जाग ।।

राधा स्वामी दयाल कि दया । राधा स्वामी सहाय ।

प्रार्थना

नमो सद्गुरुम्, सच्चिदानंद रूपम् ।
नमो अद्भूतम् अद्वितीयम् अनूपम् ।।
नहीं रूप कोई हैं, सब रूप तेरे ।
तेरे सब ही परजा हैं, औंर भूप तेरे ।।
धरा संत अवतार, जग को चिताया ।
दुखी दीन को अंग, अपने लगाया ।।
दिया संग सत का, मिला सत का जीवन ।
तेरे नाम पर सीस, तन मन हे अर्पन ।।
झुके राधा स्वामी, चरन हसते हसते ।
तुझे कहते हैं सब, नमसते नमसते ।।

मंगलाचरण

साज मंगल साज आये, जगत्गुरु दातार ।
भक्त काज समाज साजी, धन्य पतित उधार ।।
शब्द नाव चढाये जन को, किया भव जल पार ।
दीन हीन अधीन की सुध, लीन कृपा धार ।।
भक्ति भाव की रीति निर्मल, जाने क्या संसार ।
आप सतगुरु ने सिखाई, धार संत अवतार ।।
नाथ बिनती सुनो मेरी, तुम हो परम दयार ।
जो न पकडो बाँह को तुम, बूडूँ काली धार ।।
सर्व समरथ आईयाँ, दुख विपत मेटन हार ।
राधा स्वामी कृपा सागर, तुम मेरे रखवार ।।

प्रार्थना

दीन बन्धु दया के सागर कीजिये, हम पर दया ।
छूट जाये इस जगत का, हम से सब मोह मया ।।
शुद्ध तन मन हो हमारा, शुद्धताई ऐसी दो ।
हो भला हम से जगत का, तुम भलाई ऐसी दो ।।
कर्म से मन से वचन से, हम तुम्हारे दास हों ।
पाके भक्ति पद कमल की, पद कमल के पास हों ।।

मंगलाचरण

मंगलम् गुरु देव मूरति, मंगलम् पद पंकजम्
मंगलम् त्रय लोक स्वामी, मंगलम् जन रंजनम्
धन्य महिमा आपकी है, धन्य अद्भुत ज्ञान है
आप ही के पद कमल में, सद्गति निर्वाण है
राधास्वामी भक्ति दीजे, पार भव से कीजिये
निज दया से अपना करके, तार मुझको लीजिये

मंगलाचरण

मंगलम् गुरुदेव मूरति, मंगलम् पद पंकजम् ।
मंगलम् अव्यक्त अनुपम्, मंगलम् भव गंजनम् ।।
मंगलम् धुरपद निवासी, मंगलम् सत आसनम् ।
मंगलम् निर्वाण सद्गति, मंगलम् जन रन्जनम् ।।
मंगलम् ज्ञान स्वरूपम्, मंगलम् आनन्द रूप ।
मंगलम् चैतन्य सद नमो, मंगलम् सत सत्य भूप ।।
मंगलम् योगेन्द्र मायातीत मंगल दायकम् ।
मंगलम् संसार सारम्, अद्भूतम मुनि नायकम् ।।
मंगलम् त्रय गुण रहित, अपरोक्ष परोक्ष निवासनम् ।
मंगलम् त्रय काल ज्ञाता, मंगलम् भव नाशनम ।।
आदि कारण मूल कारण, मध्य आदि अनन्त जो ।
मंगलम् करुणा सदन शूभ तत्व परम जगत प्रभो ।।
आप प्रगटे इस जगत में जीव काज सुधारने ।
शब्द नाव बनाये सुन्दर, जीव दुखित उबारने ।।
प्राण तन मन कर्म बानी, सब ही अर्पण लीजिये ।
मैं हूँ शरणागत तुम्हारा दास अपना कीजिये ।।
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी जप सदा ।
त्याग जग के मोह धन्धे, पाऊँ भक्ति संपदा ।।

सतगुरु आयो सरन तुम्हारी ।। टेक ।।
मिले सुख नाम हर सुभ चिंता लावहु हमारी ।
नानक दास संत पाछे परेऊ राख लेवहू इह बारी ।।

नाम महिमा

राधास्वामी नाम की बलिहारी, गुरु नाम महा मंगलकारी ।।टेक।।

राधास्वामी नाम को जो गावे तर जाय ।
कलि कलेश सब नाश हों, सुख पावे दुख जाय ।।
इस नाम की महिमा है भारी ।। राधास्वामी ०

ऐसा नाम अपार यह भेद न कोई जान ।
जो जाने सो पार है, जग नहीं जनमे आन ।।
मिलती है बंध से छुटकारी ।। राधास्वामी ०

राधास्वामी गायकर, जनम सुफल करले ।
यही नाम निज नाम है, मन अपने धरले ।।
नहीं कृत्रिम नाम हो हितकारी ।। राधास्वामी ०

राधा सुरत का मूल है, स्वामी शब्द का मूल ।
निज स्वरूप के वृक्ष में, डाल पात फल फूल ।।
यह नाम नहीं है संसारी ।। राधास्वामी ०

अलख स्वामी अद्भूति, राधा निरखन हार ।
और न कोई लख सके, शोभा अगम अपार ।।
निज सुरत है शब्द की दरबारी ।। राधास्वामी ०

सुरत रूप जहाँ धारिया, राधा स्वामी नाम ।
बिना भेद नहीं पावई, जहाँ कोई विश्राम ।।
बड भागी कोई हो अधिकारी ।। राधास्वामी ०

अलख अगम अनाम का राधास्वामी नाम ।
सतलोक के है परे, राधास्वामी धाम ।।
वहाँ रंग न रूप न रेखा री ।। राधास्वामी ०

मंगलाचरण

मंगलम् गुरु शब्द रूप, अनाम नाम प्रकाशनम् ।
मंगलम् शब्दार्थ शब्दाधार, शब्द निवासनम् ॥ १ ॥
गुप्त अपने आप में, जब अलख अगम अनाम आप ।
जब प्रगट आनन्द ज्ञानाकार, और सतधाम आप ॥ २ ॥
साज संत समाज मंगल, काज जीव उद्धार को ।
आपने धारन किया है, परम संत अवतार को ॥ ३ ॥
आप हैं आधार सब के, आप के आधार सब ।
वार पार से रहित आप हैं, आप वारापार सब ॥ ४ ॥
संग देकर सत का संगत में जीव अधीन को ।
सिंध सद्गति से मिलाया, जीव रूपी मीन को ॥ ५ ॥
सैन बैन का आसरा, सतसंग द्वारा दान दे ।
शब्द योग सिखाया अनहद, धामपद निर्वान दे ॥ ६ ॥
धन्य सतगुरु राधास्वामी, पार भव से कीजिये ।
भक्ति युक्ति योग जुगती, ज्ञान शक्ति दीजिये ॥ ७ ॥

मंगलाचरण

मंगल गुरु के चरण कमल में, मंगल साज सजाओ ॥ टेक ॥
सुमिरन भजन ध्यान रहे छिन छिन, सुरत निरत ठैराओ ॥ मंगल०
अंतर में लख गुरु की मूरत, ज्योत में ज्योत मिलाओ ॥ मंगल०
ज्योत अपार दहे है घट में, ज्योत निरख हरषाओ ॥ मंगल०
अनहद शब्द गूँज रहा अंतर, सुन सुन चित्त लगाओ ॥ मंगल०
राधास्वामी चरन चरन बलिहारी, धुरपद बासा पाओ ॥ मंगल०

(०)

दीन बन्धु कृपाल स्वामी जगत के आधार ।
प्रेम भक्ति दान दीजे, कीजे बेडा पार ॥
मुक्ति की नहीं मन में इच्छा, भक्ति दीजे दान ।
प्रेमियों का साथ दीजे, साध संगत मान ॥
तारलीजे अधम पापी को, दया से आज ।
राधास्वामी सतगुरु अब मेरी तुमको लाज ॥

सतगुरु

पूज्य मालती मंगल

आदि संत कबीर जी की वाणी

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाईये ।
की जे साहब से हेत परमपद पाइये ॥
प्रेम बिना धीरज नहीं प्रेम बिना वैराग ।
सतगुरु बिना मिटे नहीं मन मनसा का दाग़ ॥
तीरथ नहाये एक फल, संत मिले फल चार ।
सतगुरु मिले अनंत फल, कहे कबीर विचार ॥
बलिहारी जाऊँ सतगुरु के मेरा दरस परस करते भरम भागा ।
धरम राय से तिनका तोडा जम दुसमन से दूर किया ॥
सबदपान परवाना दिया काग करम तज हंस किया ।
गुरु की मिहर अगम निगम लखि बिन गुरु कोई न मुक्त भया ॥
कहे कबीर सुनो भई साधो आवागमन से राख लिया ।

सतगुरु के प्रताप से मिट गया दुख सुख द्वंद ।
कहें कबीर दुविधा मिटी गुरु मिले रामानन्द ॥
सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार ।
लोचन अनंत उधारिया, अनन्त दिखावन हार ॥
समदर्शी सतगुरु किया भरम भया सब दूर ।
हुआ उजारा ज्ञान का उगा निरमल सूर ॥
कबीर कमलन जल बसे, जल बस रहें असंग ।
साधो जन तैसे रहें, सुन सतगुरु परसंग ॥

साधो शब्द सबन से न्यारा, जानेगा कोई जानन हारा।
जोगी जति तपि सन्यासी अंगलगाये छार ॥
मूल मंत्र सतगुरु के दिये बिन, कैसे उतरे पारा ।
निगम नेति जा के गुण गावे शंकर जोग अधारा ॥
ब्रह्मा विष्णु जेहि ध्यान धरत हैं सो प्रभु अगम अपारा ।
लागा रहे चरन सतगुरु के चंद चकोर की धारा ॥

मंगलाचरण

सतगुरु चीन्हो रे भाई ।। टेक ।।
सतनाम बिन सब नर बूडे नरक पडे चतुराई ।।
वेद पुराण भागवत गीता इन को सबै दृढावै ।
जाको जनम सुफल रे भाई सो गुरु पूरा पावै ।।
बहुत गुरु संसार कहावै मंत्र देत हैं काना ।
उपजे विनसे या भव सागर मर्म न काहू जाना ।।
सतगुरु एक जगत में गुरु हैं सो भव से परिहारा ।
कहें कबीर जगत के गुरुआ मर मर ले अवतारा ।।
साहब तव दयाल हो तुम लग मेरी दौड ।
जैसे काग जहाज को सूझे और न ठौर ।।
कबीर करत है बिनती सुनो संत चित लाय ।
मारग सिरजन हार का दीजे मोहि बताय ।।

अपने घट दियना बार रे, अपने घट ।
नाम काक तेल सुरत की बाती ब्रह्म अग्नि उद्गार रे ।।
झूटा जान जग का नाता बारम बार विचार रे ।
कहे कबीर सुने भाई साधो, सतगुरु नाम पुकार रे ।।

अब मैं भूला रे भाई मेरे सतगुरु जुगत लखाई । टेक ।
क्रिया करम आचार मैं छाँडा, छाँडा तीरथ का नहाना ।।
सगरी दुनिया भई सयानि मैं ही एक बौराना ।
ना मैं जानूँ सेवा बंदगी ना मैं घंटाट बजाई ।।
ना मैं मूरत धरी सिंहासन ना मैं पुष्प चढाई ।।

दया राख धरम को पाले जग से रहे उदासि ।
अपना सा सब का जाने ताहि मिले अविनासी ।।
सहे कुशब्द वाद को त्यागे छाँडे गर्व गुमाना ।
सत्त नाम ताहि को मिलिहे कहें कबीर सुजाना ।।

सतगुरु तोहि बिसार के काके सरने जाहीं ।
शिव विरंची सुन नारदा हृदय नाहीं समाही ।।
कर जोर बिनतीत करूँ प्रभु भव सागर अपार ।
बंदे उपर मेहर कर प्रभु आवागमन निवार ।।

गुरु नानक देवजी महाराज की बाणी

सत्त पुरुष जिन वविकिया सत गुरु तिसका नाम ।
ताके संग शिष्य उतरे नानक हरि गुण जान ॥
जिभ्या एक अस्तुति अनेक । सत्त पुरूष है पूर्ण विवेक ॥

चरण कमल तेरे धोये पियूँ मेरे सतगुरु दीन दयाल ॥ टेक ॥

सिमर सिमर सिमर नाम जीवा, तन मन होय निहाल ॥
पार ब्रह्म परमेश्वर सतगुरु, आप करन हारा चरण धूलि तेरी ।
सेवक माँगे तेरे दर्शन की बलिहारी ॥ चरणकमल ॥
मेरे राम राय ज्यों रखे त्यौं रहिये, तुझे पावे ता नाम जपावे ।
सुख तेरा जो सरन आये ॥ चरणकमल ॥
मुख भगत जगत तेरी सेवा, जिसे तू आप कराय ।
तु ही वैंकुण्ठ जा कीर्तन तेरा, तू आप सरधा लाय ॥ चरणकमल ॥
कुरबान जाय उसपे वे सुहावे जित तुम्हरे द्वार आय ।
नानक प्रभु भय कृपाला सतगुरु पूरा पाय ॥ चरणकमल ॥

दुख भंजन तेरा नाम जी, दुख भंजन तेरा नाम ॥ टेक

आठपहर आराधिये पूरण सतगुरु ग्यान ॥
सेवा सुरत ना जानिया ना जापे आराध ।
ओट तेरी जग जीवना मेरे ठाकर अगम अगाध ॥ दुख भंजन०
भये कृपाल गोसाईयाँ मिटे सोग संताप ।
तत्ती दाऊ न लगाई सत गुरु रखे आप ॥ दुख भंजन०
गुरु नारायण देव गुरु, गुरु सच्चा सिरजन हार ।
गुरु तुत्थे सब कुछ पाइयाँ जिन नानक सद बलिहार ॥ दुख भंजन०

सतगुरु ते दृढय्या इक एकै । नानक दास हर हर हरे ॥ टेक ॥

राखो अपनी सरन प्रभु मोहे कृपा धारे ।
सेवा कुछ ना जानऊँ नीच मूर्खा रे ॥
तुझ ते बाहर कुछ नहीं भव काटन हारे ।
कहे नानक सरन दयाल गुरु लेवहू मुग्ध उद्धारे ॥

मंगलाचरण

विनती

करूँ विनती दोऊ कर जोरी । अरज सुनो राधास्वामी मोरी ॥
सत्तपुरुष तुम सतगुरु दाता । सब जीवन के पितू और माता ॥
दया धार अपना कर लीजे । काल जाल से न्यारा कीजे ॥
सतयुग त्रेता द्वापर बीता । काहु न जानी शब्द की रीता ॥
कल युग में स्वामी दया विचारी । प्रगट करके शब्द पुकारी ॥
जीव काज स्वामी जग में आय । भव सागर से पार लगाय ॥
तीन छोड चौथा पद दीन्हा । सत्त नाम सत गुरु गति चीन्हा ॥
जगमग ज्योत होत उजियारा । गगन सोत पर चन्द्र निहारा ॥
स्वेत सिंहासन छत्र बिराजे । अनहद शब्द गैब धुन गाजे ॥
क्षर अक्षर निःह अक्षर पारा । बिनती करे जहाँ दास तुम्हारा ॥
लोग अलोक पाऊँ सुख धामा । चरण शरण दीजे विश्रामा ॥

(०)

गुरु सरण आज मैं पाई । मेरे आनन्द अधिक बधाई ॥१॥
गुरु कृपासिंध मैं पाये । मेरे घर दर बजत बधाये ॥२॥
गुरु परम पुरुष सुख दाता । उन चरण मोर मन राता ॥३॥
गुरु भक्ति करूँ दिन राती । मन चित से अति गुन गाती ॥४॥
गुरु दर्शन सुरत लगाऊँ । मन अंतर प्रेम बढ़ाऊँ ॥५॥
गुरु मूरत नैनन ताकूँ । शशि भान कोटि छबि झाँकूँ ॥६॥
गुरु सम अब कोई न दिखाई । मैं फेरूँ यही दुहाई ॥७॥
अब जन्म सुफल कर अपना । गुरु प्रेम करो जग सुपना ॥८॥
गुरु से कोई बडा न मेरे । सब पडे काल के घेरे ॥९॥
गुरुमुख कोई सतगुरु हेरे । मनमुख सब काल के चेर ॥१०॥
गुरु महिमा मुख से कहते । अंतर में प्रीत न धरते ॥११॥
भरमों में भटके फिरते । गुरु पद में चित्त न धरते ॥१२॥
वह जीव अभागी जानूँ । मैं गुरु बिन और न मानूँ ॥१३॥
अब आरत गुरु की करता । राधास्वामी चरण पकडता ॥१४॥

सत्त गुरु शरण

सतगुरु सरन गहो मेरे प्यारे । कर्म जगत चुकाय ।।
भूल भरम में सब जग पचता । अचरज बात न काहू सुहाय ।।
भाग हीन सब जग माया बस । यह निरमल गति कोई न पाय ।।
जिन पर दया आदि करता की । सो यह अमृत पीवन चाही ।।
कहाँ लग महिमा कहूँ इस गति की । बिरले गुरु मुख चीन्हत ताही ।।
बिन गुरु चरन और नहीं भावे । इस आनन्द में रहे समाये ।।
दर्शन करत पिंड सुध भूली । फिर घर बाहर सुधि क्या आय ।।
ऐसी सुरत प्रेम रंग भीनी । तिनकी गति क्या कहूँ सुनाय ।।
जोग बैराग ज्ञान सबरूखे । यह रस उन में दीखे न ताय ।।
बड भागी कोई बिरला प्रेमी । तिन यह न्यामत मिली अधिकाय ।।
राधा स्वामी कहत सुनाय । यह आरत कोई गुरुमुख गाय ।।

कौन करे आरत सतगुरु की ।। टेक ।।

ब्रह्मा दिक सब तरस रहे हैं । मिली नहीं यह पदवी ।।
कोटि तेतीसों राग वैरागी । इन्द्र मुनिन्दर भटकी ।।
सतगुरु बिना खोज नहीं पाया । करम भरम बिच अटकी ।।
बडे भाग जानो अब उनके । जिनको सरन परापत गुरु की ।।
गुरु समान समरथ नहिं कोई । जिन धुर घर की आन खबर दी ।।
मेरे भाग बडे अब जागे । मिल सतगुरु संग आरत करती ।।
गाय भक्ति क्या क्या दिखलाऊँ । मै सतगुरु बिन और न परखती ।।
गुरु की दया सहसदल पाया । त्रिकुटी चढ कर सुन्न परखती ।।
महा सुन्न और भँवर गुफा लख । सत्त लोक चढ अधिक हरखती ।।
अलख अगम दरसे पद दोनों । आगे राधा स्वामी चरण परसती ।।

गुरु भक्ति दृढ के करो पीछे और उपाय ।
बिन गुरु भक्ति मोह जग कभी न काटा जाय ।।
मोटे बंधन जगत के गुरु भक्ति से काट ।
झीने बंधन चित्त के कटें नाम प्रताप ।।
मोटे जब लग जायें नहीं झीने कैसे जायें ।
ताते सबको चाहिये नित गुरु भक्ति कमायें ।।
एक जन्म गुरु भक्ति कर जन्म दूसरे नाम ।
जन्म तीसरे मुक्ति पद चौथे में निज धाम ।।

गुरु बिन कौन उबारेगा । नाम बिन कौन सुधारेगा ।।
भजन बिन कौन निस्तारेगा । सरन बिन कौन सँवारेगा ।।
शब्द बिन कौन सिंगारेगा । संग बिन कौन निहारेगा ।।
काल को कौन गारेगा । कर्म किस भाति हारेगा ।।
संत कोई आन मारेगा । भक्त कोई दोऊ जारेगा ।।
काम सतसंग सारेगा । जोई तन मन को वारेगा ।।
सोई निज नाम धारेगा । जगत को आन तारेगा ।।
सरन सतगुरु संम्हारेगा । नाम पद सो निहारेगा ।।
राधास्वामी जो सरावेगा । सोई वह धाम पावेगा ।।

गुरु मोहे दीजे अपना धाम ।। टेक ।।

मैं तो निकाम भरम बस रहता । तुम दयाल लो मो को थाम ।।
ना जानूँ क्या पाप कमाये गहे न सुरत नाम ।। गुरु ०।।
कैसी करूँ जोर नहीं चाले मन नहीं पावे दृढ विश्राम ।
हे सतगुरु अब दया विचारो मैं दुख में रहूँ आठों जाम ।। गुरु ०।।
न सुरत चढे न मन ठैरावे शब्द महातम नहीं पतियाम ।
संतमता ऊँचा सुन पकडा, क्यौं नहीं संत करें मेरी साम ।। गुरु ०।।
संतमता को लज्जा आवे जो मेरा नहीं पूरण काम ।।
अपनी मत ले करूँ पुकारा, मौज तुम्हारी मैं नहीं जाम ।। गुरु ०।।
बार बार मैं विनय पुकारूँ जस जानो तस देवो निज नाम ।
राधास्वामी कहें निज नामी दरदी को चहिये आराम ।। गुरु ०।।

(०)

पायो जी हम तो राम रतन धन पायो ।। टेक ।।
वस्तु अमोलक दी हमारे सतगुरु कृपा कर अपनायो ।।
जनम जनम की पूँजी पाई जग में सभी खोवायो ।।
खरचे नहीं कोई चोर न लेवै दिन दिन बढ़त सवायो ।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु भवसागर तर आयो ।।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर हरत हरत जस गायो ।।

परम संत सतगुरु हुजूर राय शालिग्राम जी महाराज की प्रेम वाणी

परम पुरुष पूरण धनी राधा स्वामी नाम ।
तिन के चरण पदम पर कोटि कोटि परनाम ॥
प्रेम सहित नित गावें राधास्वामी नाम ।
सुरत डोर चरनन लगी बिसर गये सब काम ॥

प्रीत लगी अब सतगुरु चरणा । मन और सुरत शब्द में धरना ॥
उमंग उठी हिय में अब भारी । सतगुरु आरत लीन सँवारी ॥
दुरलभ समाँ मिला नर तन घर । भक्ति भाव का पाय औसर ॥
सहज ही सतगुरु दर्शन पाया । निज घर का मोहि भेद सुनाया॥
निज घर है वह राधास्वामी धाम । अकह अपार अनंत अनाम ॥
अलख अगम के पार रहाई । सत्त लोक तिस नीचे आई ॥
सत्त लोक वह धाम अनूप । सत्त पुरुष जहाँ धारा रूप ॥
अमर अजर यह लोक सुहाई । माया ब्रह्म जहाँ से आई ॥
तिर लोकी का कारण सोई । संत बिना वहाँ जाये न कोई ॥
सत्त पुरुष राधास्वामी धाम । गुप्त रहा नहीं पाया मरम ॥
मैं बड भाग सराहूँ अपना । सतगुरु ने मोहि निज अपना ॥
सुरत शब्द की राह बताई । यासे हंसा निज घर जाई ॥
और जतन सब थोथे जानो । भर जाने की राह न मानो ॥
इन का संग करो मत भाई । जो चौरासी छूंटन चाही ॥
सतसंग उनका करो चेतकर । रूप निहारो हिया हेत कर ॥
नर देही का फल तब पाओ । अमर लोक को सीधे जाओ ॥

सतगुरु महिमा क्या कहूँ किससे ।
सतगुरु सरन छुडावत जमसे॥
राधास्वामी महिमा निस दिन गाऊँ ।
राधास्वामी मेहर प्रशादी पाऊँ ॥

सतसंग महिमा

सतसंग महिमा सुन कर आया । राधास्वामी दर पर माथ नवाया ।
राधास्वामी गत मत अगम अपारा । सुरत शब्द मारग मैं धारा ।
कर सतसंग मिटा अंधियारा । घट में शब्द किया उजियारा ।
देखा सब जग काल पसारा । जीव बहें चौरासी धारा ।
माया ब्रह्म उसी का नामा । सप्तम चक्र तासु विश्रामा ।
वेद कते ब्रह्म उपजाये । करम धरम में जीव फसाये ।
करम भोग उनका नहीं छूटे । फिर फिर चौरासी जम लूटे ।
बिन **सतगुरु** कोई राह न पावे । सुरत शब्द बिन घर नहीं जावे ।
तासे कहूँ पुकार पुकारी । शब्द गुरु को लेव सम्हारी ।
मेरा भाग जगा अब भारी । सतगुरु ने मोहि लिया सुधारी ।
निज घर है वह राधास्वामी धामा । बारबार उन चरन प्रनामा ॥
दीन अधीन होय आरत करता । सुरत चरन में छिन छिन धरता ॥
वर माँगूँ सोई देव मोंहि दाता । मन रहे लुरत शब्द रंग राता ॥
दृढ परतीत चरन में राखूँ । राधास्वामी राधास्वामी निस दिन भाखूँ ॥

राधास्वामी **सतगुरु** पूरे । मैं आया सरन हुजूरे ॥
मैं अवगुण हारा भारी । तुम बखशो भूल हमारी ॥
मैं जग में बहु भरमाया । कहीं घर का पता न पाया ॥
तुम कीन्ही दात अपारी । निज घर का भेद दिया री ॥
सुरत शब्द जुगत समझाई । सुमिरन और ध्यान बताई ॥
गुरु मेरा भाग जगाया । मन सुरत शब्द लगाया ॥
गुरु वचन लगे मोंहि प्यारे । सुन सुन हुआ जग से न्यारे ॥
मेरे औगुण चित न विचारे । गुरु कीन्ही दात अपारे ॥
गुरु भक्ति रीत पिछानी । निश्चय कर मन में मानी ॥
सोई जन है बड भागी । जिन हिरदे भक्ति जागी ॥
राधास्वामी से करूँ पुकारी । मोही दीजे भक्ति करारी ॥
नित सुरत शब्द में भरना । चित रहे तुम्हरे चरना ॥
माया से लेओ बचाई । राधास्वामी नाम ध्याई ॥
गुरु आरत निस दिन गाऊँ । राधास्वामी चरन समाऊँ ॥

बिनती

करूँ बेनती राधास्वामी आगे । गहरी प्रीत चरण में लागे ॥
मन चंचल को थिर कर लीजे । दृढ परतीत चरन में दीजे ॥
भोग वासना सब छुट जावे । करम भरम संशय हट जावे ॥
मन होय दीन सुरत लौलीना । गुर चरनन में सदा अधीना ॥
नित्त नवीन प्रीत हिय आवे । सेवा भजन करत रस पावे ॥
सतसंग की चाहत रहे निसदिन । हरख हरख नित गावे तुम गुन ॥
काल करम से लेओ बचाई । सुरत शब्द करूँ कमाई ।
यह अर्जी मेरी सुन लीजे । कृपा कर मोहीं बखशिश दीजे ॥
राधास्वामी दाता दीन दयाल । अपनी दया से करो निहाल ॥
मैं बलहीन नहीं गुण कोई । चरण तुम्हारे पकडे सोई ॥
सरण अधारे जिऊँ दिन राती । राधास्वामी राधास्वामी हिय बिच गाती ॥
राधास्वामी मात पिता पति मेरे । राधास्वामी चरनन सुख घनेरे ॥
राधास्वामी बिनाकोई नहीं बाचे । राधास्वामी हैं गुरु सतगुरु सांचे ॥
राधास्वामी दया करें जिस जनपर । सोई बचे शब्द धुन सुनकर ॥
दीन दयाल जीव हित कारी । राधास्वामी पर छिन छिन बलिहारी ॥

आओ मेरे सतगुरु है मेरी जान । नैना दरस को तरस रहे ॥ टेक ॥
आओ प्यारे राधास्वामी हे मेरे प्राण । जीव विकल अब तडप रहे ॥
आओ मेरे सतगुरु दातादयाल । दर्शन देकर करो निहाल ॥
आओ मेरे सतगुरु हे बंदी छोड । काल करम का काटो जोर ॥
आओ मेरे सतगुरु परम उदार । जीवन को अब लेओ उबार ॥
आओ मेरे सतगुरु क्यों एति देर । काल लिया जीवन को घेर ॥
सुनो मेरे सतगुरु बिनती मोर । प्रेम रंग से करो सरा बोर ॥
आओ प्यारे राधास्वामी काटो जाल / चरन सरन दे करो निहाल ॥

प्रेम की बखशिस दे राधा स्वामी ॥ टेक ॥

प्रेम की दौलत अपर अपार । प्रेम से मिलता सिरजन हार ॥
प्रेम बिना सब झुँठा ध्यान । प्रेम बिना सब थो था ज्ञान ॥
प्रेम बिनारे सब ही विकार । प्रेम से होवे जग से न्यारे ॥
प्रेम से दीखे घट में नूर । प्रेम रहा घट घट भरपूर ॥

पूरण धनी दाता दयाल शिवब्रतलालजी महाराज
सतपुरुष स्वामी शिव दयाल सिंह जी महाराज के
चरण कमलों में बिनती ।

गुरु तुम दीन दयाल हो, जगतपति स्वामी ।
तुम्हरे चरन सरोज में, सत बार नमामी ॥
दीन निबल के काज आप, प्रगट हुए आय ।
बूडत लिया बचाय, शब्द की नाव चढाय ॥
शब्द सुरत का भेद दिया, सत पन्थ चलाया ।
भटके जीव अनाथ को, मारग दिखलाया ॥
धन्य धन्य **सुदयाल,** धन्य आरत दुख हारन ।
धन्य धन्य प्रतिपाल, धन्य साँचे भव तारन ॥
नाम दान दे मेहर से, अपना कर लीजे ।
राधास्वामी कृपाल, चरन की भक्ति दीजे ॥
दीन बन्धु शिवदयाल गोसाईं गुरु अनाम अमाया ।
बचा शरण जो तेरे आया राधास्वामी की दाया ॥

प्रार्थना

दीन बन्धु दयाल स्वामी, तुम दया के सिन्ध ।
निज दया से बन्ध काटो, छूटे द्वन्द का बन्ध ॥
काल करम का कडा बन्धन, जीव रहे लपटाय ।
विधि न जाने छूटन की, उरझ उरझ फँसाय ॥
दया कीजे भक्ति दीजे, तार लीजे आप ।
पुण्य फल तुम्हरे दरश, कटें जग के पाप ॥
सुरत शब्द का योग निर्मल, सहज सुगम सुहेल ।
जीव पावें परम पद को, चित चरन से मेल ॥
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी नाम ।
सब जपें हित चित से निस दिन, पावें अमृत धाम ॥

हुजूर परम संत सतगुरु राय शालिग्रामजी के चरण कमलो में

बन्दनम अद्वैत द्वैत, अभाव भाव प्रकाशनम ।
बन्दनम संसार त्रिविधि, विकार ताप विनाशनम ।।१।।
बन्दनम आदर्श इष्ट, अपार पार निवासनम ।
बन्दनम गुरु पद्म पदरज, तिमिर दोष विभंजनम ।।२।।
नित्य मुक्त विशुद्ध निर्मल, सत्त चित्त आनन्दमय ।
शान्त बुद्ध अपार अद्भुत, संत सतगुरु पद गहे ।।३।।
ज्ञान ध्यान न कर्म सेवा, भक्ति प्रेम न लह सके ।
गुरु दया बिन मुक्ति धाम का, रूप न कोई कह सके ।।४।।
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाईये ।
राधास्वामी चरण कमल की, ओर सीस झुकाईये ।।५।।

बिनती

करुणानिधान कृपाल सतगुरु प्रणत पाल महेश्वरम् ।
सतरुप सतपद धाम धुर, सत भाव सत विश्वम्भरम् ।।
दे भक्ति शक्ति मुक्ति युक्ति, तार लीजे दीन को ।
आया शरणागत तुम्हारे, शरन दीजे हीन को ।।
अति कठिन काल कराल माया जाल बन्धन में पडे ।
हम जीव निबल समर्थहीन, सहते दुख संकट बडे ।।
नहीं बुद्धि समझ विवेक ज्ञान, न भक्ति ध्यान की सम्पदा ।
केवल तुम्हारी एक आस, भरोस रहती है सदा ।।
नाम दीजे प्रेम दीजे, दान दीजे भक्ति का ।
राधास्वामी अपना जन समझ कर दया कीजे सर्वदा ।।
* गुरु ने अस कृपा करी दिया ठौर ठिकाना ।
काल की फाँसी कट गई, मिला शब्द प्रमाना ।।
गुरु मेरे समरथ साइयाँ, सच्चे दातारा ।
गुरु चरनन बल जाइये, गुरु परम उदारा ।।
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु है, गुरु है त्रिपुरारी ।
सतगुरु ब्रह्म स्वरूप हैं, गुरु की बलिहारी ।।
गुरु मेरे जान व प्राण हैं, गुरु ही मन बानी ।
राधास्वामी की दया, गुरु पद पहचानी ।।

राधास्वामी सतगुरु हितकारी ।। टेक ।।

राधास्वामी ब्रह्म राधास्वामी विष्णु राधास्वामी शिव की मूरत ।
राधास्वामी पूरन ब्रह्म अखंडित पार ब्रह्म की सूरत ।। हितकारी०
राधास्वामी अगूण सगुण राधास्वामी, राधास्वामी इनसे न्यारे ।
राधास्वामी रक्षक राधास्वामी दानी राधास्वामी सत रखवारे ।। हिताकरी
सत्त कबीर हैं राधास्वामी, नानक राधास्वामी जानो ।
राधास्वामी गुरु के एक रूप में, सब संतों को मानो ।। हितकारी०
रामकृष्ण और बुद्ध विवेकी, और सकल अवतारा ।
राधास्वामी रूप में सबको समझो, यही सार का सारा ।। हितकारी०
राधास्वामी सतगुरु प्रगटे कलि में, सुरत शब्द मत दीना ।
राधास्वामी चरन शरन में आकर, जनम सुफल कर लीना ।।हितकारी०

राजों के महाराज तुम मेरे सतगुरु स्वामी ।। टेक ।।

हित अनहित सब के हितकारी, प्रगटे जन के काज तुम ।। मेरे०
परमारथ के कारन आये, साज के संत समाज तुम ।। मेरे०
दुखियों का मेटो दुख दारुन, रखलो उनकी लाज तुम ।। मेरे०
ज्ञानी ध्यानी ऋषि मुनि देवा, सबके हो सिरताज तुम ।। मेरे०
राधास्वामी परम दयाला. चरन शरन दो आज तुम ।। मेरे०

(०)

गुरु भक्ति के पंथ में दया से मुझको, लगा दिया सतगुरु प्यारे ने
मेरी पकड के बांह को प्रेमनगर पहुँचा दिया सतगुरु प्यारे ने ।। १ ।
तीरथ देखे मूरत देखे, इन से क्या सार हाथ आता
सतसंग में सार तत्व का मरम, जता दिया सतगुरु प्यारे ने ।। २ ।
बाहर मुख्ता के जाल फँसा, तडपा तरसा बेचैन हुआ
अन्तर साधन की विधी सिखलाके, चिता दिया सतगुरु प्यारे ने ।। ३ ।
मैं कौन हूँ क्या हूँ कैसा हूँ, यह बात न समझा था अब तक
घट की गुत्थी उलझी थी बहुत, सुलझा दिया सतगुरु प्यारे ने ।। ४ ।
शबरी को राम ने तारा था, मीरा को श्याम ने तारा था
मैं तो राधास्वामी के चरन पडा, तरवा दिया सतगुरु प्यारे ने ।। ५ ।

(०)

क्यों भूला तू प्यारे मग में, भरमा क्यों डाकू और ठग में ॥ टेक ॥

सतगुरु आये तोहि चितावन, दया से अंग लगाया ।
भवजल पार उतारन कारन, शब्द जहाज बनाया ॥ हाँ मग में ॥
बडे बने तो हुये कबीरा, नन्हे बने तो नानक ।
दोनों रूप बिसारा तूने, राधास्वामी आये अचानक ॥ हाँ मग में ॥
विद्या अविद्या फाँस फँसा तू, द्वंद जाल में उरझा ।
दुविधा दुचिताई के बन्धन, कैसे कहूँ तू सुरझा ॥ हाँ मग में ॥
कर सतसंग विवेक धार चित, सीख शब्द मत रीति ।
सहज योग का सहज है साधन, धर मन में प्रतीती ॥ हाँ मग में ॥
सहज समाध अखंड लुन्न पद, घट में अघट का बासा ।
राधास्वामी की शरन में आजा, कर सतलोक निवासा ॥ हाँ मग में ॥
अजपा जाप सहज है साधन, साधन अनुभव जागे ।
बिन साधन अनुभव नहीं भाई, बिन अनुभव क्या माँगे ॥ हाँ मग में ॥
कुछ दिन सतसंग कुछ दिन साधन, कुछ दिन मुक्ति विलासा ।
बंधन मुक्ति मानसिक लीला, कामी देखे तमासा ॥ हाँ मग में ॥
जाप मरे अजपा मर जाये, अनहद भी मर जाये ।
सुरत समानी शब्द में आकर, ताहि काल नहीं खाये ॥ हाँ मग में ॥
नानक और कबीर की बानी, विविध एनेक सुनाई ।
वही अलाप अब नये ढंग में, राधास्वामी ने गाई ॥ हाँ मग में

(०)

तुम ही प्राण आधारे सतगुरु, तुम ही प्राण आधारे ॥ सतगुरु
हम तो दीन अधीन सकल विधि, साई तुम रखवारे ॥ सतगुरु
भव जल नाव पडी मँझधारा, लीजो काढ किनारे ॥ सतगुरु
भजन बन्दगी भक्ति न जानी, जिये तुम्हारे सहारे ॥ सतगुरु
जब जब विपत कष्ट दुख पाया, तब तब तुम ही सँभारे ॥ सतगुरु
मात पिता भाई सुत बन्धु, कोई नाहीं हमारे ॥ सतगुरु
तुम समान रक्षक नहीं कोई, देखे हृदय बिचारे ॥ सतगुरु
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, हम सों पतित उद्धारे ॥ सतगुरु

सतगुरु भेद बताया न्यारा ॥ टेक ॥

काम क्रोध मद मोह बिसारा, प्रेम का किया विस्तारा ।

[illegible] की गम कुछ पाई, मन मनसा को मारा ॥ सतगुरु ०

सत की संगत सत सुध पाई, सत का भया निरवारा ।

अब नहीं काम असत से हमको, गुरु का मिला सहारा ॥ सतगुरु

करम को समझा धरम को समझा, मेटा हिये का विकारा ।

गुरु की दया से अब लख पाया, अर्थ तत्व का सारा ॥ सतगुरु

बिन सतसंग विवेक न सुझे, संगत गुरु दरबारा ।

ज्ञान गुरु के रहे सहारे, गुरु मत अगम अपारा ॥ सतगुरु ०

राधास्वामी जग में आये, धार संत अवतारा ।

शालिग्राम ने अलख लखाया, खोला मर्म का द्वारा ॥ सतगुरु ०

(०)

तू दया का रूप प्यारे, तू दया भंडार है ।
कर दयादृष्टि दया मय, तुझ ही से अधिकार है ॥ १ ॥
सन्त सतगुरु तुझको कहते हैं, नहीं मै जानता ।
मेरे अनुभव में दया करुणा का तू भंडार है ॥ २ ॥
मेरे दाता सीस पर मेरे, दया का हाथ रख ।
तू है दानी दीनबन्धु, जगत का दातार है ॥ ३ ॥
मेरे अंतर में समाना, मेरे साँसों साँस में ।
तू है व्यापक यह समझ दे, सच्चा जो अधिकार है ॥ ४ ॥
आस रख कर गुरु कृपा की, नित करो अभ्यास तुम ।
रात दिन छिन छिन तुम्हारा, वह सदा रखवार है ॥ ५ ॥
छोडो ममता छल कपट चतुराई, गुरु से नेह जोड ।
भक्ति उसकी कर वह सच्चा प्रेम का भंडार है ॥ ६ ॥
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी को सुमिर ।
राधास्वामी सर्व रक्षक सर्वदा हितकार है ॥ ७ ॥

तू दयाल है दया की मूरत, तेरी दया का दान मिले ।
भक्ति मिले शुभ शक्ति मिले, सतसंगत में गुरु ज्ञान मिले ॥
जग की सहज होय कठिनाई, सुख साधन का है अवसर ।
नाम मिले सतधाम मिले, साधु सेवा सन्मान मिले ॥
टेढ़े जतन को कर दे सीधा, युक्ति निराली बतलादे ।
थोडे ही में समझा दे तू, सतमत की पहचान मिले ॥
ज्ञान के तीन रूप हैं स्वामी, अनुभव है उनकी चोटी ।
शब्द मिले अनुमान मिले, अनुमान के साथ प्रमाण मिले ॥
राधास्वामी सतगुरु दाता, हम सब हैं तेरे सेवक ।
सहज योग की सहज समाध का, सुमिरन भजन और ध्यान मिले ॥

(०)

हम दीन अधीन दुखी जीवों को, चिता दिया सतगुरु स्वामी ने ।
भव सिंध में डूबने वाले को तैरा दिया, सतगुरु स्वामी ने ॥१॥
गद मोह माया के मारे थे, दुख आपत्ति से दुखियारे थे ।
कर दया दृष्टि छुटकारा इनसे, दिला दिया सतगुरु स्वामी ने ॥२॥
अज्ञान ने भरमाया था हमें, और करम ने बहकाया था हमें ।
सतसंगत के वचन से, भरम मिटा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥३॥
पहले नहीं गुरु गम को जाना, जब आँख खुली तब पहचाना ।
निज रूप का दर्शन अपने घट में करा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥४॥
तज पिंड को पहुँचा ब्रह्मांडा, आगे बढ गया सच खंडा ।
सतधाम से सत का विमल स्वरूप, दिखा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥५॥
लख अलख अगम की गम पाई, ली राधास्वामी पद की शरनाई ।
पुर धाम संत विसराम लोक, पहुँचा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥६॥
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी ।
राधास्वामी के नाम का मरम जता दिया सतगुरु स्वामी ने ॥७॥

(०)

तू सच्चा है मुझे सचाई, बख्श बख्श सतगुरु प्यारे ।
तू प्रकाश है तेरी दया से, प्रगटे घट रवि शशि तारे ॥

तू दाता है दान दे मुझको, नाम रतन धन का स्वामी ।
मेरे मन में आ के समाजा, जो तू है अन्तरयामी ॥
तू है ज्ञान ज्ञान मुझको दे, मेट तिमिर अज्ञान मेरा ।
तेरे रूप का दर्शन पाऊँ, छिन प्रति छिन रहे ध्यान तेरा ॥
तू सत है अपनी सत्ता दे, जीवन मेरा सुधर जावे ।
तू चित है निश्चल कर चित को, निश्चित ज्ञान मुझे भावे ॥
सत चित आनन्द रूप है तेरा, दे आनन्द मुझे सतगुर ।
नाम रूप के तेरे सहारे, जीते जी जाऊँ सतपुर ॥
राधास्वामी परम पुरुष करतारा, तू दुखियों का सहारा है ।
दुख दरिद्र को मेट दे मेरे, दुखदाई संसारा है ॥
चरन शरन की ओट गहूँ मैं, आनन्द मंगल साज सजूँ ।
राधास्वामी राधास्वामी हित से सुमिरूँ, राधास्वामी राधास्वामी नित भजूँ ॥

(०)

सतगुरु परम दयाल री, कोई कदर न जाने ॥ टेक ॥
देह धरे जीव भार उठावें, कार्टे यम का जालरी कोई ॥ कदर ०
जीव अनादी जग झकमारें, दुख सुख संग बेहालरी कोई ॥ कदर ०
दया मेहर निज वचन सुनावें, मेटें घट दुख सालरी कोई ॥ कदर ०
छूटन की वह युक्ति बतावें, घट में चलावें चाल री कोई ॥ कदर ०
दया मेहेर से करनी करावें, कर दें माला माल री कोई ॥ कदर ०
घट के बैरी सभी नसावें, मारे काल कराल री कोई ॥ कदर ०
निस दिन तेरी दया विचारें, जस माता संग बालरी कोई ॥ कदर ०
अन्त समय जब तेरा आवे, आप हुये रखवाल री कोई ॥ कदर ०
तेरे घट में प्रगट करावें, अपना रूप विशाल री कोई ॥ कदर ०
पकड चरन तू निज घर जावे, काल करम पामाल री कोई ॥ कदर
राधास्वामी सतगुरु मोहि अस भेंटे, हो गई मैं खुशहाल री कोई ॥ कदर ०

अपनी दो पहचान तुम मेरे सतगुरु दाता ।। टेक ।।
सत हो या आनन्द की मूरत, या हो तत्त्व के ज्ञान तुम ।। मेरे ०
कोई कहे गुण सगुण हो निर्गुण, कोई रचना की जान तुम ।। मेरे ०
निराकार साकार आकारा, इन के नाम निशान तुम ।। मेरे ०
शब्द अशब्द सुरत भंडारा, या इनसे अलगान तुम ।। मेरे ०
कौन हो क्या हो क्या कोई जाने, अपनी करो बखान तुम ।। मेरे ०
जगदाधारी जगत से न्याने, निराधार निर्वाण तुम ।। मेरे ०
निगम अगम भूले चतुराई, ''नेति एति'' की खान तुम ।। मेरे ०
साखी शब्द कहत सकुचाऊँ, ज्ञान अनुमान प्रमान तुम ।। मेरे ०
राधास्वामी अपना भेद बताओ, मेरी ओर दो कान तुम ।। मेरे ०

सतगुरु के चरण कमलों में वंदना ।।

होथ जोड नवाय मस्तक, चरण कमल की वंदना ।
शुद्ध मन से ध्यान सुमिरन जनम को लूँ मैं बना ।।
नींद में हो दंडवत, जाग्रत परिकरमा मेरा ।
जब सुषुप्ती का समय हो, हृदय में हो घर तेरा ।।
देखूँ तेरा रूप पल पल, गाऊँ तेरे नाम को ।
रूप नाम के आसरे गुरु, पाऊँ मैं बिसराम को ।।
नाम का रसना में रस हो, कान अनहद धुन सुनें ।
तेरी लीला की कथा को, बुद्धि मन चित सब गुनें ।।
बोलूँ जब तेरा कथन हो, चुप रहूँ तेरा मनन ।
मेरा सब कुछ तुझपे अरपन, देह बानी चित्त मन ।।
दृष्टि दे ऐसी मुझे यह, जगत तेरा रूप हो ।
गोते मारूँ तुझ पे छिन छिन, तू अमी का कूप हो ।।
तू हो मेरा, मैं हूँ तेरा, और से क्या काम है ।
तेरा सेवक जब हुआ, होठों पे तेरा नाम है ।।
तू है दाता तू विधाता, तेरी केवल आस है ।
हो गया भँवरा कमल पद का, चरन में बास है ।।
देख अवगुण को न मेरे, मैं हूँ अवगुण से भरा ।
तू गुणागर है दयामय, दे चरण का आसरा ।।
प्रेम तेरा तेरी भक्ति, तेरी सेवा ध्यान हो ।
तेरा सुमिरन और भजन हो, तेरा अंतर ज्ञान हो ।।
राधास्वामी सतगुरु करतार संकट काट दे ।
छीन ले सब संपदा, भक्ति का मुझको ठाट दे ।।

सतगुरु की चरणों में प्रार्थना

परमदयाल पंडित फकीरचंद जी महाराज

एक पतित जीवन फकीर का, रूप धार करता पुकार ।
ऐ परम तत्व दाता दयाल, तुम सारे जगत के हो आधार ॥
मैं हूँ कौन ? और क्या हूँ मैं ? चेतन का एक बुलबुला ।
जिससे बना, उसी खोज में जीवन दिया अपना गुजार ॥
समझता हूँ बहुत कुछ और कहता हूँ बहुत कुछ ।
पर दर असल ऐ दाता पा न सका तेरा पार ॥
जैसा बनाया तू ने वैसा कराया काम, कुदरत ने मुझ से सारा ।
इसलिए मुझे नहीं है अपने काम में अहंकार ॥
दौड दौड के दौड देखा अंत में थक गया हार ।
सोच समझ विवेक अनुभव से हो गया लाचार ॥
खींच ले सब ज्ञान अनुभव खींच ले बुद्धि विकार ।
दे शरण अपनी तू दाता भूलूँ मैं अब यह संसार ॥
जब तक है होश जीवन में बर माँगू यह सदा ।
दे अपनी जात पाक का मुझे अपना सच्चा प्यार ॥
कह नहीं सकता हूँ मैं कौन हूँ ? तू कौन हैं ?
मगर तेरी हस्ति से मैं कर सकता नहीं इनकार ॥
विश्वास है मुझे तेरा तू बन कर आया दाता दयाल ।
खेल खेलाया तूने ऐसा जिससे समझा तू है अपरंपार ॥
शरणागतम् शरणागतम् शरणागतम् दाता दयाल ।
हर तरफ से हार के आया हूँ शरम में सतगुरु परम दयार ॥
भेंट हैं मन करम बाणी, तू ही करता पुरूष है ।
मैं न कुछ किया न कर सका, तू ही सब का आधार ॥
चरणों में आकर तेरे, अब शाँति मिलती है मुझे ।
मौज तेरी काम तेरा तू ही करता सारे कार ॥
राधास्वामी तुम हो सतगुरु, दे चरण का आसरा ।
पाऊँ चरणों में बसेरा और चरणों से प्यार ॥

चलो चलो निज धाम सुरतिया, चलो चलो निज धाम ।। टेक ।।

यह वाणी थी सुनी बचपन से, इच्छा थी आठों जाम ।। सुरतिया०
निजधाम है अद्भुत एक हालत नौबत बजती मुदाम ।
यहाँ नहीं फुरना है, अप्रगटी हस्ति पावे विश्राम ।। सुरतिया ० ।।
ना कोई गुरु ना कोई चेला ना स्वामी न गुलाम ।
यह है हालत एक हस्ति की देख पाया विश्राम ।। सुरतिया ० ।।
दयाल शिव की दया से पाया हस्ति का निज धाम ।
सुरत शब्द के मार्ग चला तब पाया विश्राम ।। सुरतिया ० ।।
दयाल शिव के अनुग्रह से मुझे हुआ पूर्ण अब काम ।
सुरत सत है,सत संतन मत,सत है उनका कलाम ।। सुरतिया०।।
सतगुरु की दया से भेद है पाया प्रेम किया निष्काम ।
चलते चलते पहुँचे वहाँ जिसे कहें निजधाम ।। सुरतिया ० ।।

(०)

गुरु मता धारण करो इसके बिना नही जीवन का कल्याण ।।

गुरु बिन न धन धाम है, न मुक्ति शक्ति और सत ज्ञान ।
ताते सबको चाहिए ढूँढे कोई पूरण इनसान ।।
जो गुरु आज्ञा में बरतें उनको समझो चतुर सुजान ।
जीवन के आदेश को समझ कर करो अपना कल्याण ।।
जीवों के हित प्रगट हुआ हूँ बन कर तामिल इनसान ।
यदि तुम अहंकारी समझ कर कहोगे मुझको नादान ।।
जीवों के हित के लिये धारा भेस फकीर ।
ताकि प्रगट कर जाऊँ सत पुरुषों का सत ज्ञान ।।
दो दिन का यह जीवन है कायम द्वार है खुला ।
सतसंग कर यदि जी चाहे पाओ निर्मल ज्ञान ।।
बानी पढ पढ भरम में भूले और दुख पाया महान ।
बिन जीवत पूरण पुरुष सतगुरु के कभी नहीं मिटता है अज्ञान ।।

दयाल स्वरुप हुजूर परम संत नन्दु भाई जी महाराज की

दाता दयाल सतगुरु सर्व शक्ति वाले ।
तेरी शरण में आया नन्दु को अब बचाले ॥
न मुझसा पतित कोई न तुमसा पतित पावन ।
बिगडी बना दे मेरी कौन मुझको अब संभाले ॥
मेरी फँसी है नय्या मझधार में दयाला ।
यह जिंदगी है तेरी और तेरे है हवाले ॥
नही आसरा किसीका एक आस तेरी दाता ।
दे कर सहारा मुझको कर देना अब किनारे ॥
गुरु देव राधास्वामी तेरी शरण में आया ।
नन्दु को अब बचाले तेरे पडा है पाले ॥

प्रार्थना

सतगुरु कीजे जन पर दाया ॥ टेक ॥

प्रेम भाव रहे मन में छाया । करे अकाज न जग की माया ॥
काल करम ने अति भरमाया । भूल भरम से बहु दुख पाया ॥
भिक्षा माँगन आया ॥ सतगुरु ० ॥
तीन ताप से रहूँ अकुलाना । मेरा कहीं नहीं ठौर ठिकाना ॥
देखा फिरा सब का स्थाना । अब सतगुरु मोहे दीजे दाना ॥
ध्यान चरण में लाया ॥ सतगुरु ० ॥
उमंग प्रीत बाढे मन छिन छिन । सुमिरूँ नाम तुम्हारा गिन गिन ॥
लौ लगी रहे चरणों में दिन दिन । देखूँ रुप न जग का भिन भिन ॥
रहूँ असोच अमाया ॥ सतगुरु ० ॥
ज्ञान योग की अकथ कहानी । समझ न आवे रहे हैरानी ॥
जप तप संयम एक न जानी । सुनूँ तुम्हारी नित मृदु बाणी ॥
हिया जिया मन उम गाया ॥ सतगुरु ० ॥
तुम तो आये जीव उबारन । नाम धरा अपना जग तारण ॥
प्रगट भये नन्दु के कारण । हम पापी तुम पतित उधारण ॥
राधास्वामी भेद बताया ॥ सतगुरु ० ॥

राम की भक्ति हो जिस में उसका जीवन धन्य है ।
तन मन धन सभी करतब उसका धन्य है ॥
राम जगत आधार हैं श्रृष्टि के माता पिता हैं ।
जहाँ उनके चरण पडें वह भूमि घर धन्य हैं ॥
काल वश संस्कार है काल के आधीन सब हैं ।
भक्त जन करे नाम सुमिरन, उनका साधन धन्य हैं ॥
राम स्वामी है मेरे और राम का मैं दास हूँ ।
राम मेरे मन में है, मैं मन से उनके पास हूँ ॥
राम तन में राम मन में राम मेरे साँस में ।
राम का सुमिरन, भजन विश्वास में और आस में ॥
राम मेरे, राम का मैं राम मुझ में रम गये ।
राम मेरे जब हुये, सारे नियम संयम हुये ॥
तन वचन और करम से सेवक हूँ अपने राम का ।
दास सच्चा बन गया मैं राम शोभा धाम का ॥
ज्ञान मेरा राम है अनुमान मेरा राम है ।
लोभ मेरा राम है, अभिमान मेरा राम है ॥
राम को तन में बसाये, नाम का सुमिरन हो ।
सतगुरु दया, नन्दु समता में रहे निषकाम हो निषकाम हो ॥

(०)

गुरु चरणों में वंदना निसदिन आठों जाम ।
बिन गुरु दया बने नहीं परमारथ का काम ॥
गुरु वन्दना योग्य हैं गुरु की कीजे सेवा ।
गुरु सम इस संसार में और नहीं कोई देवा ॥
गुरु चरण की छाँह में मन मलीन हुआ, शाँत ।
अब संशय कोई नहीं गुरु ने किया निर्भ्रांत ॥
मन बुद्धि चित में बसी गुरु दातार की लार ।
सार पाय कर तृप्त हूँ नहीं व्यापे संसार ॥
भरम भ्राँति सब मिट गये सतगुरु के उपकार ।
राधास्वामी की दया पहुँचा भवजल पार ॥

(०)

मिट्टी के पुतले बोलता क्यों नहीं सतनाम ॥ टेक ॥
दो दिन का ठाट बाट सब दो दिन का है रहना सहना ।
दो दिन की माया नगरी है, दो दिन का है पूरण ब्रह्म ज्ञाना ॥ मिट्टी ॥
कभी मूढ बना तो, कभी गँवार है, कभी ज्ञानी विज्ञानी है ।
कभी करम धरम में फँस कर हैरानी ही हैरानी है ॥ मिट्टी ॥
कभी दुखी तो कभी सुखी तो, होता कभी धर्म अवतार बन ।
कभी ज्ञानी बन बचन सुनावे, कभी करता बन बेकार बन ॥ मिट्टी ॥
तेरा स्वामी तेरे घट में रोम रोम में व्याप रहा ।
अणु अणु में लीला उसकी फिर भी तुझे संताप रहा ॥ मिट्टी ॥
मन इन्द्रियों को बस में कर ले, देख लीला अंतर की अभी ।
निज स्वरूप का ज्ञान तू पाले वह नहीं तुझ से जुदा कभी ॥ मिट्टी ॥
सुमिरन ध्यान भजन से पार होगी सफाई इस मन की ।
मन दरपण जब साफ हो गया झलके झलक आत्मबर की ॥ मिट्टी ॥
तेरी आत्मा अटल और निश्चल एक रस हालत में रहे ।
मन तेरा जो डोलता रहता, कर उपासना रूप बने ॥ मिट्टी ॥
गुरु दयाल की दया भई हैं, दया रूप धारा गुरु ने ।
सतगुरु की चरण शरण दृढ कर, मुक्ति लहे और भक्ति गहे ॥ मिट्टी ॥

(०)

गुरु गुरु पल पल जपूँ राधास्वामी के गुण गाय ।
अब कुछ मुझको भय नहीं, सतगुरु हुये सहाय ॥
राधास्वामी नाम है सुरत शब्द भंडार । नन्दु गुरु नाम से उपजे विमल विचार ॥
तुम दातात मै दीन हूँ आया गुरु दरबार । शरणागत की लाज को रख लीजे दातार ॥
अब आरत पूरण भई मन पाया विश्राम । राधास्वामी चरण पर कोटी कोटी प्रणाम ॥

(०)

ना सुख विद्या बुद्धि में, ना सुख भोग विलास ।
सुख अपना निज रूप है, समझे गुरु का दास ॥
राधास्वामी नाम को ले तज दे भरम विकार ।
गुरु तेरा निज रूप है, यही रूप संभार ॥

(०)

*गुरु केचरणों में पडा जब बन गया मेरा **जनम** ।*
मेरे मन से सहज में सब मिट गये रंज व **अलम** ॥
प्रेम दाता से किया और प्रेम का पाया **निशान** ।
प्रेम जब मुझको मिला अब क्या बिगाडेगा **करम** ॥
गुरु का है एक आसरा और गुरु का एक है **विश्वास** ।
ध्यान और सुमिरन भजन सब बने दिल के **नियम** ॥
मंजिल मकसूद है सतगुरु उसमें पाता हूँ **विश्राम** ।
सतगुरु की संगत से मिटे है मेरे दिल के सब **भरम** ॥
राधास्वामी नाम जीवन का **सहारा** हो गया ।
सतनाम है उद्गीत श्रृति मंगलम् और धुरपदम् ॥

(०)

गुरु की संगत को समझ ले है वह गंगा के समान ।
ठंडे होंगे सारे तन मन जब करे कोई गुरु संग स्नान ॥
देखने से छूने से पीने से नहाने से सदा ।
शांति मिलती है इस से इसमें संदेह क्या ॥
यूँही संगत से गुरु की भाग सोया जाग उठेगा ।
भव का सुख दुख भागने पर आया तब भागेगा ॥
जब नहीं **सतगुरु** ते भक्ति ध्यान क्या और ज्ञान क्या ?
साधना कैसे बनेगी और अनुभव और अनुमान क्या ॥
सतगुरु आदर्श हैं धुरपद हैं और सर्वाधार हैं ।
जब मिले **सतगुरु,** समझ लो जग से बेडे पार हैं ॥
गुरु को सिर पर रख के गुरु के आज्ञाकारी तुम बनो ।
गुरु की संगत कर के **सतगुरु** के भिकारी तुम बनो ॥

(०)

ज्ञान दाता ज्ञान दीजिये ज्ञान के भंडार से ।
ज्ञान देकर मुक्ति दीजे जग के कारागार से ॥
बैठो तुम सतसंग में नित चित देकर सुमिरन मनन ।
दुख न पाऊँ मन की चंचलता से न मन की अहंकार से ॥
एक रस जीवन बिता दूँ अपने तुम्हरे उपकार से ।
हे ***राधास्वामी सतगुरु*** भवदुख न पाऊँ मै कभी संसार से ॥

सजनी सुमिरन तार न टूटे ॥ टेक ॥

सुमिर सुमिर सुमिरन को भूले, जुबाँ का सुमिरन छूटे ।
ध्यान धारणा तब ही प्रगटे, देह गेह से रूठे ॥ सजनी ० ॥
दीन हीन अधीन हो शब्द का धन वह लूटे ।
सुरत शब्द के मिलने को मन को मन में कूटे ॥ सजनी ० ॥
त्याग वैराग अनुराग बंधे दया क्षमा के खूंटे ।
घट में शब्द प्रगट होते ही सब से रिशता टूटे ॥ सजनी ० ॥
चुप के सिवा कुछ ना सूझे सबक मिले अनूठे ।
क्या भर लावें सिंध से भी जिन के बरन फूटे ॥ सजनी ० ॥
अपने भीतर आप विराजे ना बरतन चाटे जूठे ।
फैल फैल कर महक फैली चहुँ दिस, जब फैले प्रेम के बूटे ॥ सजनी ० ॥
जो विश्वास न लावें सतगुरु, ताके भाग है फूटे ।
पीरे मुगाँ के दाता शिव जी, चरण शरण में लोटे ॥ सजनी ० ॥

(०)

एक अद्भुत बात बताऊँ ॥ टेक ॥

अंदर बाहर वह ही रमता, फिर मैं ढूँढने जाऊँ ।
बात समझी अन समझी में, कैसे मैं बताऊँ ॥ एक अद्भुत ॥
ढूँढने की आदत हम को, बिन ढूँढे न रह पाऊँ ।
जनम जनम के संस्कारों को कैसे गिनाऊँ ॥ एक अद्भुत ॥
हाथ लगा है हीरा मोरे, जिससे जनम बनाऊँ ।
पीरे मुगाँ के सतगुरु राधास्वामी, राधास्वामी गाऊँ ॥ एक अद्भुत ॥

मैं अपने बली बली जाऊँ ॥ टेक ॥

अपने आप में सुंदर बना, अब कैसे तुम्हे बताऊँ ।
अपना आपा हुआ जो अपना, अपने में रहाऊँ ॥
आपा अपना आप भी अपना, गैर अपना अपनाऊँ ।
अपने मन में अपने भाव से शीतलता में नहाहूँ ॥
रैन दिवस से रहूँ, निःशंकता मौज सदा मनाऊँ ।
सतगुरु कहुँ अपना आपा तब राधास्वामी गाऊँ ॥

सजनी आँखें जुदा जुदा ॥ टेक ॥

जिस्म की आँख, दिल की आँख में खुशी जुदा जुदा ।
एक हाल में कभी न ठहरे सर्द गरम हवा ॥ सजनी ० ॥
जिस्म की आँख से सब ही देखें, मन की आँख सपना ।
रूह की आँख से कोई कोई जाने जिसे दे खुदा ॥ सजनी० ॥
आँख बतावे सबको सब कुछ, अच्छा बुरा भला ।
खयाल का नक्षा आँख के अंदर सब कुछ दे बता ॥ सजनी०॥
आँख बतावे सब कुछ जो कुछ अंदर छुपा ।
आँख मारे आँख जियावे दे गिरे को उठा ॥ सजनी ० ॥
आँख का मारा जी भी सके न आँख ही दे दगा ।
वैर प्रेम इस में छुपा सब भेद को दे बता ॥ सजनी ० ॥
स्वपन की आँख खोल बतावे जो जो करम किया ।
किस आँख से सपना देखा समझो सोचो जरा ॥ सजनी ० ॥
कौन शरीर उडे उछले कहाँ जाये समा ।
जागृत स्वपन भेद न किंचित स्थूल सूक्ष्म जिया ॥ सजनी ० ॥
रूह की आँख वही जाने जो सतगुरु शरण पडा ।
कहन सुनन में कबहूँ न आवे, न ही किसीने कहा ॥सजनी०॥
अभेद का भेद जो कोई जाने भव सागर से है तरा ।
पीरे मुगाँ वह भेद जाने जो खुद में जाय समा ॥ सजनी ० ॥

(०)

आखिर मौज पे बात आवे ॥ टेक ॥

योग भक्ति मुक्ति तेरी दया से पावे ।
तेरी दया बिन कुछ कर सके न भले ही लाख जोर लगावे ॥
साँची कहूँ बुरा न मानो बिन गुरु दया राह न पावे ।
मौज में आकर जनम जनम के अँधकार मिटावे ॥
मौज आसरे जो भी मौजी शरणागति दृढ़ावे ।
मौज होवे तो पीरे मोगाँ सतगुरु पर विश्वास लावे ॥

सजनी तूने मन का रूप न जाना ।। टेक ।।

अग्नि पानी दोनों एक संग यह अद्भुत स्थाना ।
सागर के भी महा सागर ज्वाला मुखी है नाना ।। सजनी ० ।।
लोक अलोक इसमें बसते फिर भी है वीराना ।
जीव फँसाय बहु रूप धर कोटी कोटी बहाना ।। सजनी ० ।।
रूप स्वरूप कुरूप में किसी किसी ने पहचाना ।
बच कर निकला कोई कोई गुरु मुख है यह बधिक पुराना ।। सजनी ०
काम सकाम निष्काम भाव में विचित्र अद्भुत सयाना ।
त्याग वैराग अनुराग में ग्रहस्थ का ताना बाना ।। सजनी ० ।।
योग संजोग भोग का रसिया ज्ञान विज्ञान अज्ञान अज्ञाना ।
क्या कहूँ इस में क्या नहीं, गुप्त प्रगट समाना ।। सजनी ० ।।
स्थूल सूक्ष्म और कारण बहु रूपिया दरम्याना ।
अंदर बाहर ऊपर नीचे सबका करे निशाना ।। सजनी ० ।।
इस के बिन त्यागे, सजनी मिटे न आना जाना ।
त्याग का भी त्याग कर, बिन जिभ्या गाना गाना ।। सजनी ० ।।
सतगुरु चरण शरण जो आवे वह ही चतुर सयाना ।
पीरे मुगाँ के दाता शिव जी मौज से मौज दिखाना ।। सजनी ०

(०)

धर्म कर्म और शर्म नहीं तो सब कुछ ही मिट जायेगा ।
संभाले वही इस धन को जो कर्म काटने आयेगा ।।
इनसान का धर्म इनसानियत है इनसानियत फैलाना कर्म बने ।
मन में कुछ जुबाँ पे कुछ वह नरक कुँड में नहायेगा ।।
धर्म कर्म और शर्म का धन इकट्ठा जो करे है महा पुरुष ।
वह तो यहाँ आकर के फिर कभी न वापस आयेगा ।।
शुभ कर्म से मिले राज और राज से नरक मिलता है ।
इस झंझट से वह आजाद जो सतगुरु शरण में जायेगा ।।
फिर रासता मिलेगा उसको अपनी शरण में जानेका ।
सवाल जवाब खतम सब चुप में चुप हो जायेगा ।।
मय मस्ति खुद खुदा मौज से जिसको दे ।
मौज मालिक मौज मालिक पीरे मोगाँ गायेगा ।।

सतगुरु स्वरुपा श्रद्धेय माँ निर्मलाजी की गंगोत्री की प्रेमांजली

- प्रेषक आचार्य सु श्री सुजाता जी -

एक प्रेम की गंगा बहती है सतगुरु देव तुम्हारे चरणों में ।
फल मिलता है सब तीर्थों का, गुरु देव तुम्हारे चरणों में ॥
मैं जनम की भटकी हूँ अब शरण तुम्हारी आई हूँ ।
हम भूले भटके जीवों का कल्याण तुम्हारे हाथों में ॥
दुखियों के कष्ट मिटाते हैं, दुख हर कर सुख पहुँचाते हैं ।
मिले जनम मरण से झुटकारा, जो आये तुम्हारे चरणों में ॥
एक बार जो दर्शन पाता है, दिल तुमको ही दे जाता है ।
गुप्त भरे हैं भक्ति के भंडार, तुम्हारे चरणों में ॥
जन्मों से बिछडी शरण पडी अब हाथ जोड तेरे द्वार खडी ।
चौरासी का काटो चक्कर है दासी शरण तुम्हारे चरणों में ॥

(०)

हे मेरे सतगुरु प्रणाम बार बार ॥ टेक ॥
होठों पर हो आप का ही नाम बार बार ।
चरणों में हो मन सदा, चरण हो मंजिल सदा ॥
हे दयालु भक्ति का दे दान बार बार ॥ हे मेरे०
मेरे बाबा क्या नहीं दिया हमें ।
धन्य धन्य आपको प्रणाम बार बार ॥ हे मेरे सतगुरु०
सोये जग को फिर जगाने आए बार बार ।
भक्ति में मन को लगाना बार बार ॥ हे मेरे सतगुरु०
बार बार हो जन्म हर जन्म में आप हम ।
गुरु जी हमको देना ज्ञान बार बार ॥ हे मेरे सतगुरु०
चांदनी का दीप लेकर, शाल फूलों से सजा ।
आरती हम आपकी करें रोज़ बार बार ॥ हे मेरे सतगुरु०

राम नाम की नय्या लेकर सतगुरु करे पुकार ।। टेक ।।

आओ मेरी नय्या में ले जाऊँगा भव पार ।
इस नइया में जो कोई चढ जायेगा ।
जन्म जन्म का पाप सभी धुल जायेगा ।
कटें चौरासी के बन्धन, पडे न यम की मार ।। आओ मेरी ० ।।
पाप गठरिया शीश धरे कैसे आऊँ मैं ।
अपने ही अवगुण से खुद शरमाऊँ मैं ।
नैय्या तेरी सांची भगवन, मेरे पाप हजार ।। आओ मेरी ० ।।
जीवन अपना सौंप दो मेरे चरणों में ।
स्वांस स्वां को जोड दो मेरी यादों में ।
पाप पुण्य का मैं तेरे बन आया ठेकेदार ।। आओ मेरी ० ।।
करके दया सतगुरु ने चुनरिया रंग डाल ।
दाग भरी थी मेरी चुनरिया कर दी लालो लाल ।। आओ मेरी ०
बडे भाग्य से सतगुरु जी का ज्ञान मिला ।
मुझ प्रेमी को जीने का अधिकार मिला ।
लगी डूबने बीच भंवर में आ गया सेवनहार ।। आओ मेरी ० ।।

(०)

बरसा सतगुरु सुख बरसा । आंगन आंगन सुख बरसा ।। टेक ।।

चुन चुन कांटे नफरत के । प्यार अमन के फूल खिला ।।
बरसा सतगुरु सुख बरसा । आंगन आंगन सुख बरसा ।।
तन से कोई है दुखी । मन से कोई है दुखी ।।
हे प्रभु दया करो । कुल जहाँ हो सुखी ।।
सब के दुखों की तुम हो दवा । आंगन आंगन सुख बरसा ।।
वैर द्वेष को मिटा तुम । सकल संसार से ।।
नाम का सुमिरण करे । मिल के सारे प्यार से ।।
मानव मानव हो न जुदा । आंगन आंगन सुख बरसा ।।
बरसा सतगुरु सुख बरसा । झोलियाँ सुखों से तुम ।।
चाहे दाता भर भी दो । पर मेरे प्रभु हमें तुम सब्र श्रद्धा भी दो ।।
हर पल मांगे यही दुआ । आंगन आंगन सुख बरसा ।।
बरसा सतगुरु सुख बरसा ।।

घट

संत कबीर

यह घट धुंद अंध्यारा रे संतो ॥ टेक ॥

या घट भीतर बाग बगीचे याही में सरजन हारा रे ॥ संतो०
या घट भीतर चाँद और सूरज याही में नौलख तारा रे ॥ संतो०
या घट भीतर काशी द्वार का याही में ठाकुर द्वारा रे ॥ संतो०
कहे कबीर सुनो भाई साधो याही में गुरु हमारा रे ॥ संतो०

(०)

घट में कर दर्शन गुरु का, घट की महिमा जान ले ।
पिंड में ब्रह्माण्ड है, सतसंग कर पहचान ले ॥ १ ॥
साक्षी के रूप में सुन, शब्द की धुन को सदा ।
शब्द है गुरु रूप गुरु है, शब्द इसको मानले ॥ २ ॥
शब्द है आकाश का गुण, शब्द ही है तत्वसार ।
शब्द नामी है अनामी, शब्द मथ कर छान ले ॥ ३ ॥
शब्द है प्रकाश ज्योती, शब्द के है आसरे ।
रूप नाम हैं शब्द, शब्द की टेक मन में ठान ले ॥ ४ ॥
शब्द ब्रह्मा शब्द विष्णु, शब्द शिव है ब्रह्म शब्द ।
शब्द गुरु के साथ रह कर, शब्द ही का ज्ञान ले ॥ ५ ॥
शब्द केक अभ्यास से, मन में आई शान्ती ।
लोक और परलोक में यश, कीरती सन्मान ले ॥ ६ ॥
शब्द सुन सुन्न दर में जा, सुन्न की समाधी साधकर ।
सहज जीवन मुक्ति का धन, तू मेरे धनवान ले ॥ ७ ॥
शब्द साखी की समझ, अब तक तुझे आई नहीं ।
राधास्वामी शब्द सुन, धुरधाम पद निरवान ले ॥ ८ ॥

(०)

कहता हूँ सच घट में तेरे राधास्वामी धाम है ।
घट में सतगुरु सत की संगत, सत सभा सत नाम है ॥ १ ॥
हो गया बाहर मुखी तब, भूला अपने आपको ।
धँस के अन्तर खोज अन्तर ही में सबका ठाम है ॥ २ ॥
राधास्वामी धाम का दर्शन जो घट में हो तुझे ।
जीते जी निर्वाण सुख, आनन्द और विश्राम है ॥ ३ ॥

कर आँख बंद घट में तब दर्शन, गुरु स्वामी का पावेगा ।।टेक।।

देह में आँख, आँख में तिल है, तिल में ज्योत उजाला ।
ज्योत निरख कर ज्योत में दर्शन ज्योत का बोल है बाला ।।
बिन आँख बन्द किये लाख यतन कर, कुछ भी नजर न आवेगा ।। कर०।।
देह में कान, कान आकाशा, शब्द आकाश का बासी ।
शब्द को सुनकर भजन शब्द का, बस सुख मन सुखरासी ।।
बिना कान बन्द किये अनहद धुन को, कैसे प्रगट करावेगा ।। कर०।।
देह में रसना अग्नि, अग्नि नाम पसारा ।
रूप से पहले नाम का सुमिरन, नाम का भेद अपारा ।।
बिन जीभ बन्द किये अजपा जाप की, विधि क्या कोई समझावेगा ।। कर०
देह में मन मन चित हंकारा, अहंकार बुद्धि खानी ।
मन को बस कर शम दम साधन, तभी बने गुरु ज्ञानी ।।
बिन इस मन साधन के प्राणी, काल करम भरमावेगा ।। कर ० ।।
देह में सिंध सिंध में धारा, धार में बुन्द पसारा ।
दरिया लहर बुन्द लख लीला, जा भव जल के पारा ।।
बिना बुन्द सिंध गति समझे, तत्व हाथ नहीं आवेगा ।। कर ० ।।
देह में आँख कान और जिभ्या, मन तीनों में व्यापा ।
तीन बन्द जब तक न लगावे, कैसे सूझे आपा ।।
बिना बन्द यह तीन लगाये, आपा लखा न जावेगा ।। कर ०।।
देह में सब कुछ देह में संगत, संगत सतसंगी प्यारे ।
सतसंगी मन प्रेम परख हो, राधास्वामी के मतवारे ।।
बिन सतसंग विवेक न होगा, सतसंग काम बनावेगा ।। कर ० ।।

घट मांहि बसे राधास्वामी संत । मैंने समझा मूल बसंत का तंत ।।
जब लग घट निकट न बसे कंत । तब न बसन्त का सूझे मन्त ।।
बिन बसन्त सब जीव जन्त । चौरासी लक्ष रहे भरमन्त ।।
जब मन में बसे कोई आके सन्त । सब दुख कलेश का होये अन्त ।।
गुरु पास में बसना है बसन्त । भक्ति बास में बसना है बसन्त ।।
नहीं कोई बसन्त का अर्थ और । जो समझे पावे ठिकाना ठौर ।।
राधास्वामी मरम लखाया आन । बसे सन्त शरण में कोई सुझान ।।

दसहरा

दसहरा दस को हरा जब, फिर दिवाली आ गई ।
मिट गया घट का अंधेरा, और उजाली आ गई ॥ १ ॥
दस हमारी इन्द्रियाँ हैं, पाई है उन पर विजय ।
जीत कर अंतर में सुरत, भोली भाली आगई ॥ २ ॥
तीसरे तिल के सहसदल, के कमल के बिगसते ।
देख ले सुख की अवस्था, मन के माली आगई ॥ ३ ॥
खिल गये अन्तर कमल, और फूट निकली उनकी बास ।
प्रेम के रस में तरावट, डाली डाली आगई ॥ ४ ॥
लाल गुरु का रूप है, त्रिकूट के स्थान पर ।
देखने लाली चला, आँखों में लाली आ गई ॥ ५ ॥
टूटा गढ लंका का, रज रावण का भय जाता रहा ।
अब तो रमता राम के, चित में निहाली आगई ॥ ६ ॥
जोत जगमग हो रही है, राज है प्रकाश का ।
कौन कहता है अविद्या, काली काली आगई ॥ ७ ॥
संतमत की इस दिवाली को कोई जानेगा क्या ।
घट में सुरज चाँद तारों की, उजाली आगई ॥ ८ ॥
राधास्वामी ने दिया हमको, दिवाली का पता ।
घट में भक्ति आप सुख की देने वाली आगई ॥ ९ ॥

(०)

घट का भेद न्यारा साधु, घट का भेद न्यारा ॥ टेक ॥

इस घट भीतर बिजली चमके, बरसे अखंडित धारा ।
घट के भीतर सुरज चाँद है, घट में लाखों तारा ॥ साधु ० ॥
घट में विष्णु करे जग पालन, घट में शम्भु सिंधारा ।
घट में ब्रह्मा वेद बखाने, घट में ज्ञान विचारा ॥ साधु ० ॥
घट में हिरण्यगर्भ अव्याकृत, घट विराट पसारा ।
घट में तप जन महर लोक हैं, घट सबका भण्डारा ॥ साधु०॥
घट के अंदर उन्मुनि लागी, घट भीतर संसारा ।
घट उपजे घट ही बिनसे, घट ही सार असारा ॥ साधु ० ॥
घट का भेद समझ में आवे जो गुरु देवे सहारा ।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, गुरु छबि तन मन वारा ॥ साधु ० ॥

क्यों तु भरम रही संसार, तेरा स्वामी तेरे घट में ॥ टेक ॥

मन्दिर पूजा तीरथ नहाया, तिलक लगाया भाई ।
माला फेरी ध्यान जमाया, घट का मरम न पाई ॥ तेरा ० ॥
पुरी द्वारिका काशी मथुरा, भरम फिरा चौदेसा ।
अटपट खटपट उमर गँवाई, ज्ञान नही लव लेसा ॥ तेरा ० ॥
गीता पढी भागवत बाँची, रामायण पढ भूली ।
सार पदारथ हाथ न आया, आगे यम की सूली ॥ तेरा ० ॥
स्वंग बनाया भेस बनाया, यह पाखंड पसारा ।
भेस से न्यारा साहेब तेरा, लख निज घट मत सारा ॥ तेरा ० ॥
अपने घट में बैठक ठानो, घट में करो गुरु पुजा ।
राधास्वामी भेद बतावें, स्वामी और न दूजा ॥ तेरा ० ॥

(०)

राधास्वामी नाम हित चित प्रेम भाव से गाईये ।
जीते जी यश कीर्ती निरवान सदगति पाईये ॥
घट में गाना नाम का हो घट में हो सुमिरन मनन ।
घट के अंदर उसका श्रवण, घट में हो उसका भजन ॥
घट में अघट है घट में, घट के घाट का है पता ।
बैठ अपने घट में निसदिन, घट ही में मन को लगा ॥
घट में सुन धुन नाम की तू, श्रुति मत को साध कर ।
नाम की है रागनी उलटी, इधर से मुड उधर ॥
सुरत के कानों से सुन, नित नाद अनहद राग की ।
शब्द की डोरी पकड यह राग है अनुराग की ॥
है यही उद्गीत सच्चा उसका प्रणव नाम है ।
प्राण गाता है इसे और प्राण ही से काम है ॥
कान आँख और मुख को गाने के समय में कर ले बन्द ।
राधास्वामी नाम गायकर छुटेगा खेद द्वंद ॥
है यही निज नाम, और इस नाम में चित को लगा ।
घट के परदे तब खुलेंगे, घट के अनुभव को जगा ॥
राधास्वामी नाम का, साधन हो सोते जागते ।
त्याग आलस नींद बन आवे जो तुझसे त्यागते ॥

घट में दीवा बालरी, आज आई दिवाली ।। टेक ।।

सुरत की सूत की पूरे बाती, प्रेम तेल हिये डालरी आज ।।आई० ।।
शब्द अग्नि की जोत जलावे, वायु विषय से संभालरी आज ।। आई०
जगमग जोत प्रकाशे चहुदिस, तिमिर अविद्या टालरी आज ।। आई०
राधास्वामी घट की दिवाली मनावे और सकल जनजालरी आज ।।आई०

(०)

कर आपन घट उजियार रे आपन घट ।। टेक ।।

घट में माया ब्रह्म हैं दोऊ ब्रह्म अग्नि उद्गार रे ।। आपन०
घट में गुरु घट ही मे चेला, घट में शब्द है सार रे ।। आपन०
घट में परमारथ स्वारथ सब, घट में कुल परिवार रे ।। आपन०
घट में करम, भक्ति सत ज्ञाता, घट है सहज विचार रे ।। आपन०
घट में हाट दुकान हवेली, घट में कर व्यौपार रे ।। आपन०
घट में उन्मुनी सुन्न समाधी, घट का हो व्यवहार रे ।। आपन०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, घट सतनाम पुकार रे ।। आपन०

(०)

चल घट की ओर सुरत प्यारी, जहाँ नित अमृत जल बरसे ।।टेक।।

घटकी लीला अगम अलौकिक, घट से काज सभी सरसे ।। जहाँ ०
घट में नूर सुरूर शब्द सब, घट का बासी नहीं तरसे ।। जहाँ ०
घट में राधास्वामी चरण निवासा, घट में चरण कमल परसे ।। जहाँ ०

(०)

सुन फकीर आई ऋतु बसन्त की । धार हिये अब रीति संत की ।।
गुरु के पास बसे जो बसन्त । गुरु के बास बसे सो सन्त ।।
तू राधास्वामी के शरण में आया । चरन कमल में बासा पाया ।।
ऋतु बसन्त की यह एक रीत । पाल चरन की प्रेम प्रीत ।।
कर सतसंग विचार के साथ । तेरे सीस रहे गुरु का हाथ ।।

दोहा

प्रेम बास से जो बसे, सोई बसन्त कहाय ।
बसे जो निकट में सन्त के, वह बसन्त सुख पाये ।।
राधास्वामी की दया, हिये में धार फकीर ।
हो जा सबका पीर तू, समझ पराई पीर ।।

ब्रह्म और माया

.....एम. मार्कण्डेय जी आचार्य

लीला तेरी न्यारी प्रभुजी लीला तेरी न्यारी ।। टेक ।।
ब्रह्म विष्णु भेद नहीं पावे, नहीं जाने त्रिपुरारी ।। प्रभु जी०
माया बस सब रहे भुलाने, भटक भटक भटकानी ।। प्रभु जी०
करम जाल और काल चक्र में, निस दिन जिया दुखारी ।। प्रभु जी०
सबही नचावत नाच अनोखा, राजा रंक भिकारी ।। प्रभु जी०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, चकित भय नर नारी ।। प्रभु जी०

बिनती

सबका आदि अंत तू दाता, धन्य धन्य तेरी माया ।
व्यापक सतचित आनन्द स्वामी, कर निज दासों पर दाया ।।
तेरी थाह न पावे कोई, अगम अपार से पार है तू ।
लीला तेरी सब से अद्भुत, एक तीन दो चार है तू ।।
जड चेतन में तेरी छाया, क्या कोई भेद तेरा जाने ।
योगी ऋषि मुनि ध्यान लगावें सबमें विभो तुझको मानें ।।
हम सब तेरे बाल ग्वाल हैं, तू पितु मात सखा स्वामी ।
सबमें रमा सकल से न्यारा, घट घट का अन्तरयामी ।।

(०)

राधास्वामी दया ले जा भव पार ।। टेक ।।

माया तुझसे अलग नहीं है, माया तेरी बुद्धि ।
माया का कुछ रूप समझले, तब चित आवे शुद्धि ।। जा भवपार०
बुद्धि का प्रपंच है सारा, बुद्धि ही भवसागर ।
बुद्धिवान हो बुद्धिमान हो, चतुर सियाना नागर ।। जा भवपार०
दशा बदलगई समय को पाकर, समय **काल** है भाई ।
काल से कैसी व्याकुलताई, तज मिथ्या दुचिताई ।। जा भवपार०
माया काल के भरम भुलाना, भरमा भूला डरना ।
बालक ने निज छाया देखी, छाया लख घबराना ।। जा भवपार०
कर **सतसंग** विवेक सहित नित, शब्द सार निरवारी ।
शब्द समझ कर रूप परख ले, राधास्वामी की बलिहारी ।। जा भवपार०

सुनो मेरे भाई कथा यह पुरानी । नहीं जानते आज तक जिस को ज्ञानी ।।१।।
नहीं ब्रह्म माया में है भेद कोई । जो है ब्रह्म माया भी है वस्तु सोई ।।२।।
जो सत है वही सुख वही चित है प्यारे । कथन के लिये तीन है एक सारे ।।३।।
परम सत में और चित में है ज्ञान की गम । यही आत्मा में है आनन्द उत्तम ।।४।।
जहाँ सत वहीं, वहीं सुख है व्यापा । जो तीनों को समझे लखे अपना आपा ।।५।।
इसी आपे का रूप अपना समझना । समझ कर न अज्ञान में फँस भटकना ।।६।।
करे गुरु की संगत समझ तब यह आवे । मिले राधास्वामी जुगत जोग पावे ।।७।।

(०)

नहीं कोई बचा अवगुणी गुनी, ठगनी ने ठग लिये ऋषि मुनि ।। टेक।।

बनी मेनका बन में आई, बनवासी के भेषा ।
विश्वामित्र का भंग किया तप, पटक काम के देसा ।। नहीं०
शिव भगवान काम के बैरी, काम के हाथ फँसाने ।
मोहिनी रूप देख भये मोहित, बुद्धि न रही ठिकाने ।। नहीं०
नारद भक्त शिरोमनी ज्ञानी, आदि ऋषि विज्ञानी ।
मोहे लक्ष्मी की सुन्दरता लख, बने मूढ अज्ञानी ।। नहीं०
कहीं ज्ञान कहीं जप तप क्रिया, कहीं ठीठोल कहीं हांसी ।
माया हाथ में लेकर डोले, भूल भरम की फांसी ।। नहीं०
दीनबन्धु शिवदयाल गोसाई, गुरु अनाम अमाया ।
बचा शरन जो तेरे आया, राधास्वामी की दाया ।। नहीं०

(०)

ढूँढ़ मुझको अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूँ ।
मैं न कासी हूँ न मथुरा, मैं न गिर कैलास हूँ ।।१।।
तू हुआ मेरा तो मैं भी, देख तेरा बन गया ।
कर भरोसा तेरा मैं ही, तेरी सच्ची आस हूँ ।।२।।
तेरे भीतर मेरी बैठक, आँख से ले देख अब ।
मैं नहीं पृथ्वी की मूरत, मैं नहीं आकास हूँ ।।३।।
किस भरम में है पड़ा, निर्भ्रान्त चित्त से शाँत हो ।
आप मैं हूँ योग युक्ति, आप शब्द अभ्यास हूँ ।।४।।
राधास्वामी नाम ले और नाम में विश्राम ले ।
सुख ले और आनन्द ले, मुझसे मैं ही सुख रास हूँ ।।५।।

ब्रह्म में माया है यह उससे अलग होती नहीं ।
चाँद और सुरज से न्यारी दोनों की जोति नहीं ।।१।।
जागता है ब्रह्म तब माया है उसकी जागती ।
भिन्न होकर ब्रह्म से, माया कभी सोती नहीं ।।२।।
बल सदा बलवान में, और शक्ति शक्तिवान में ।
शिव से शक्ति न्यारी होकर हँसती ओर रोती नहीं ।।३।।
सत में जो सत्ता है वह, सत्ता नहीं सत से पृथक् ।
सत की सत्ता साथ है, और साथ से खोती नहीं ।।४।।
राधास्वामी संग में, आई समझ अब रूप की ।
भिन्न सागर से कभी मूँगा नहीं मोती नहीं ।।५।।

(०)

माया छाया एक रूप हैं पकडे हाथ न आवे ।
रूप जान ले इनका भाई, फिर नहीं यह भरमावे ।।१।।
जो भागे माया के भय से, वह कायर अज्ञानी ।
माया मिथ्या कल्पित झूठी, नाटक खेल की खानी ।।२।।
नाटक शाला सब जाते हैं, देखन खेल तमाशा ।
किसी के चित्त उदासी आई, किसी को हर्ष हुलासा ।।३।।
साधु साक्षी रूप से देखें, अपना रूप न त्यागें ।
नहीं वह भिडें न लड भिड कल्पें, नहीं माया से भागे ।।४।।
माया नहीं है दुख का कारण, दुख अज्ञान है भाई ।
समझले अपना रूप अनूपा, फिर यह हो सुख दाई ।।५।।
काम है माया धर्म है माया, अर्थ है माया रूपा ।
जो नहीं इनका रूप पिछाने, गिरे भरम के कूपा ।।६।।
सन्त समागम जो कोई आवे, सार भेद कुछ बूझे ।
राधास्वामी गुरु की दया, निज स्वरूप की सूझे ।।७।।

नन्दु माया की निन्दा नहीं करना ॥ टेक ॥

माया अगुण सगुण की खानी, निराकार साकारा ।
माया चेतन जड की सुरत, माया ब्रह्म पसारा ॥ नहीं करना०
माया रोक थाम है प्यारे, माया सिद्धि शक्ति ।
माया जोग जुगत व्यवहारा, माया प्रेम और भक्ति ॥ नहीं करना०
माया बुद्धि विवेक जगत में, माया असत सत ज्ञाना ।
माया जप तप संयम क्रिया, माया सुमिरन ध्याना ॥ नहीं करना०
माया अंत आदि है सबकी, माया मध्य की बासी ।
त्रिगुणात्मक माया को जीते, तब हो पुरुष अविनासी ॥ नहीं करना०
माया पार्वती सावित्री, माया लक्ष्मी मूरत ।
माया काली कराल विक्राली, माया सारद सूरत ॥ नहीं करना०
माया बिन कोई रहे न जगमें, माया पाले पोसे ।
कैसा मूरख है वह प्राणी नित उठ माया जो कोसे ॥ नहीं०
माया बनी सहाई सबकी, करतब करम सिखाये ।
धरम मरम की राह दिखाकर, सत्तलोक पहुँचावे ॥ नहीं०
करनी करो तो रहनी आवे, रहनी अनुभव जागे ।
नन्दु गुरु सेवा में रहकर, और वस्तु नहीं माँगे ॥ नहीं०
राधस्वामी मत में आकर, कोई यथार्थ गति बूझे ।
करनी की जब करे कमाई, सार तत्व तब सूझे ॥ नहीं०

(०)

माया की निंदिया बुरी निन्दिया अति हान ।
नन्दु क्यों निन्दा करे माया रूप पहचान ॥
माया से सब होता है लोक पर लोक सुधार ।
खाले खर्च ले नन्दुआ गुरु पर तनमन वार ॥
अरपण कर गुरु चरण में माया के सामान ।
गुरु अरपण माया भई, करे न फिर कुछ हान ॥
मेरा मुझ में कुछ नहीं, गुरु का सर्वस्व होय ।
गुरु पद गहले नन्दुआ मन का आपा खोय ॥
यह सार उपदेश है, यही ज्ञान का सार ।
राधास्वामी की दया नन्दु भवजल पार ॥

गुरु पद सरोज में नमस्कार ।। टेक ।।

नमस्कार जी नमस्कार, गुरुपद सरोज में नमस्कार ।।
भव भय भंजन कष्ट निकंदन, खंजन सकल मोह माया ।
शांती चैन सुख सहज में व्यापा, जो कोई छांह में आया ।। नमस्कार०
हरि इच्छा माया में फँस गये, भरम अज्ञान के फंदे ।
गुरु की कृपा से बंदन काटे, भक्ति प्रेम के धंदे ।। नमस्कार०
जब लग मन मत की सूझी, स्वारथ सूझ सुझाई ।
जब गुरुमत गुरुदेव का सेवक, परमारथ लव लाई ।। नमस्कार०
कठिन सुगम भया बूंद सिंध बना, भव भय आप ही नासा ।
चिन्ता गई चाह उठ भागी, मिटी त्रिलोकी आसा ।। नमस्कार०
सहसकमल त्रिकुटी सुन्न महासुन्न, भँवर गुफा सत धामा ।
अलख अगम के पार दूर है, राधास्वामी पद निर्वाना ।। नमस्कार०

(०)

चलो गुरु दरबार आज दर्शन के कारन ।
दरस परस सुख सार, हुये प्रगट जग तारन ।।
प्रेम प्रीति उमगाय, झुके पद कमल में माथा ।
सतसंत गंगा नहाय, रहो सतगुरु के साथा ।।
वचन सुनो चितलाय, तजो मन की दुचिताई ।
सतगुरु होंय सहाय, भरम संकट मिट जाई ।।
मानुष जनम सुधार, काज अपना कर लीजे ।
भक्ति भाव हिय धार, दुविधि दुर्मति तज दीजे ।।
सुरत शब्द अभ्यास, साध लो गुरु का नामा ।
जीते जी विश्वास, जाओ राधास्वामी धामा ।।

बिन गुरु निष्फल करम सब, बिन गुरु निष्फल धर्म ।
बिन गुरु ध्यान न भक्ति कुछ, यह सत भेद का मर्म ।।

गुरु

गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पडे अज्ञानी ।।टेक।।
गुरु को मानुष जान कर भक्ति का करे व्यवहार ।
सो प्रानी अति मूढ हैं, कैसे जायें भव पार ।
देह के बने अभिमानी ।। भरम में०
गुरु को मानुष जानकर, शीत प्रसादी ले ।
सो तो पशु समान है, संशय में अटके ।
गुरु तत्व न जानी ।। भरम में०
गुरु को मानुष जानकर, मानुष करे विचार ।
सो नर मूढ गँवार हैं, भूल रहे संसार ।
मोह के फाँस फँसानी ।। भरम में०
गुरु को मानुष जानकर, भेड की चलते चाल ।
यह बन्धन को क्यों तजें, व्याप माया काल ।
पडे योनि की खानी ।। भरम में०
गुरु नाम आदर्श का, **गुरु** है मन का इष्ट ।
इष्ट आदर्श को ना लखे, समझो उसे कनिष्ट ।
बास बूझे मन मानी ।। भरम में०
गुरु भाव घट में रहे, अघट सुघट की खान ।
जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ समान ।
नहीं **गुरु** रूप पिछानी ।। भरम में०
चेला तो चित में रहे, **गुरु** चित के आकास ।
अपने में दोनों लखे, वही **गुरु** का दास ।
रहे गुरुपद घट ठानी ।। भरम में०
सुरत शब्द **गुरु** शब्द है, शब्द **गुरु** का रूप ।
शब्द **गुरु** की परख बिन, डूबे भरम के कूप ।
नर जनम गँवानी ।। भरम में०
गुरु ज्ञान का तत्व है, **गुरु** ज्ञान का सार ।
गुरु मत **गुरु** गम लखे, फिर नहीं भव भय भार ।
कमल जैसी गति आनी ।। भरम में०
राधास्वामी सतगुरु संत ने, कही बात समझाय ।
जो नहीं माने बचन को, उरझ उरझ उरझाय ।
कौन समझे यह बानी ।। भरम में०

गुरु

- शान्ता अगरवाल

धन्य धन्य गुरु परम सनेही, धन्य दीन हितकारी ।
धन्य कृपाला सहज दयाला, भव भय मेटनहारी ।।
लीला अगम अपार अमाया, अद्भुत क्या कोई जाने ।
ऋषि मुनि जोगी पार न पावें, ज्ञानी नहीं पहचाने ।।
अगुन सगुन के मध्य विराजे, नहीं ब्रह्म नहीं माया ।
रूप अरूप के वरे परे तुम, नहीं प्रकाश नहीं छाया ।।
सब में व्याप्त तुम्हारी सत्ता, सत्त असत्त के पारा ।
मन बानी की गम नहीं तुममें, सब में सब से न्यारा ।।
क्या कह करूँ तुम्हारी स्तुति, अजर अमर अविनासी ।
निरालम्ब सब के आधारा, चेतन धन सुख रासी ।।
गो गोचर जहाँ लग मन जाई, सो नहीं देश तुम्हारा ।
माया काल के परे ठिकानी, क्या कोई बरने पारा ।।
तत्व अतत्व असार सार नहीं, शब्द सुरत नहीं होई ।
सन्त कहें तुम शब्द रूप हो, और अशब्द गति सोई ।।
ऊँची दृष्टी करे जो प्राणी, सार भेद कुछ पावे ।
भेद पाय शरणागत आवे, आवागवन मिटावे ।।
दया करो करुणा चित लाओ, दो मोहि भक्ति विवेका ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, रहूँ शब्द मिल एका ।।

(०)

धन धन सुख दाता जग पितु माता, आदि अनन्त अमाना ।
धन धन परितिपाला दीन दयाला, सार भक्ति अरु ज्ञाना ।।
पूरन काम अनाम अमाया, गुणातीत अविनाशी ।
भव दुख भंजन कष्ट निकन्दन, जन रन्जन सुखराशी ।।
महिमा गोतीता चरित पुनीता, गावें निस दिन जती सती ।
शारद अज शेषा गौरि महेशा, ध्यावें पावें ज्ञान अती ।।
धन धन दुसुरारी जय हितकारी, दीन जनन के सुखकारी ।
धन मंगलकारी भव दुखहारी, धन धन गुरु हितकारी ।।

गुरु मध्य आदि अनन्त अद्भुत, द्वमल अगम अगोचरम ।
विभव विरज पार अपार निर्गुन, सगुन सत्य विश्वेश्वरम ॥
जेहि मति लखे नहीं गति लखे, यह शुद्ध तत्व विचार है ।
जो चरण कमल की ओट आया भव से बेडा पार है ॥
गुरु विष्णु मूरत शिव की सूरत गुरु को ब्रह्मा जान तू ।
गुरु ब्रह्म है परब्रह्म है, यह सोच समझ के मान तू ॥
कर गुरु की संगत रात दिन, नर जनम अपना सुधार ले ।
दे फेंक माया बोझ सिर से यम का सीस न भार ले ॥
सीस दे तन मन को दे, गुरु भक्ति रतन अमोल ले ।
राधास्वामी भेद बतायें तुम को हिय तराजु तोल ले ॥

प्रार्थना

तेरी स्तुति हित चित से गाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ।
तेरे ध्यान में हिय जिय उम गाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥१॥
गुरु रूप में प्रगट हुआ जग में, जीवों को चिताके किया मग में ।
है निय तेरा दर्शन पाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥२॥
मंगल मय मंगल की खानी, मंगल स्वरूप मंगल दानी ।
क्षण प्रति क्षण मैं तुझको ध्याऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥३॥
तू सब में है सब से न्यारा, तेरा रूप लगे अति ही प्यारा ।
तेरा चरण छोड नहीं कहीं जाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥४॥
तू निस दिन मेरे मन में बसे, अब मन नहीं माया मोह फँसे ।
राधास्वामी नाम जप हरषाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥५॥

साधु गुरु का रूप लखाऊँ ॥टेक॥

जो कोई आवे मेरी सभा में, गुरु का रूप लखाऊँ ॥ साधु०
सतरज तम के हद से बाहर, गुरु मूरती दरसाऊँ ॥ साधु०
निर्गुण सगुण देह नहीं जाके, अद्भुत भेद जताऊँ ॥ साधु०
हाड माँस नाडी नहीं जाके, वाके रूप न नाऊँ ॥ साधु०
सबका सब में सबसे न्यारा, मरम विचित्र जताऊँ ॥ साधु०
रूप अरूप स्वरूप अनूपा, निराकार ठहराऊँ ॥ साधु०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, पल पल गुरु गुन गाऊँ ॥ साधु०

गुरु महिमा

गुरु महिमा अगम अपार, गुरु गति कौन कहे ॥टेक॥
बिन गुरु धर्म न कर्म कुछ, बिन गुरु भक्ति न ज्ञान ।
जनम जनम यम फाँस है, बिन गुरु नहीं निरवान ।
चरन धूर सिरधार, शुद्धमति सोई लहे री ॥ गुरु०
देवी देवा ऋषि मुनी, सुर नर साध सुजान ।
हंस बंस अवतार सब, गुरु महिमा को जान ।
गुरु हैं सत करतार, बिन गुरु कौन रहे री ॥ गुरु०
रामकृष्ण के गुरु हैं, गुरु मत गुरु वसिष्ठ ।
सत्त कबीर ने गुरु किया, गुरु है सबके इष्ट ।
बिन गुरु भव जल धार, निगुरे सकल बहे री ॥ गुरु०
दुख कलेश आपत विपत, चहूँ दिस जग में व्याप ।
जीव छुडावन सतगुरु, प्रगटे आप ही आप ।
सबका किया उद्धार, जो कोई शरण चहे री ॥ गुरु०
राधास्वामी आदि गुरु, परम दयाल प्रवीन ।
अभय करें पद भक्ति दें, तारे जीव अधीन ।
नहीं उसका वारा पार, जो गुरु भक्ति लहे री ॥ गुरु०

गुरु की महिमा कौन गाये, उसका गाना है कठिन ।
पहुँचने वाले कहां तुझ, तक हैं बानी और बचन ॥ १ ॥
बुद्धि निर्णय कर नहीं सकती, न चित चिंतन के योग ।
सोचने और समझने की शक्ति पाता है न मन ॥ २ ॥
ज्ञानी अपनी युक्ति भूले, ध्यानी भूले ध्यान कर ।
योगी थककर हार बैठे, कर चुके जब तब जतन ॥ ३ ॥
तू नहीं काशी न मथुरा, द्वारका में तू नहीं ।
ढूंढने बन खंडी और, तपसी चले हैं सूना बन ॥ ४ ॥
मेरे हृदय में बसा रहता है, निस्सन्देह तू ।
राधास्वामी भेद बतलाया, लगी तुझसे लगन ॥ ५ ॥

भजले गुरु अविनासी, प्यारे भजले गुरु अविनासी।।टेक।।
गुरु का सुमिरन भजन ध्यान कर, गुरु आनन्द सुख रासी ।। प्यारे०
गुरु माया से आन छुडावें, गुरु काटे यम फाँसी ।। प्यारे०
गुरु की दयाय अविद्या भागे, घट में सूर प्रकासी ।। प्यारे०
मिटा अँधेरा भया सवेरा, चहूँ दिस छाई उजासी ।। प्यारे०
गुरु महिमा हित चित्त में बसाले, होजा गुरु की दासी ।। प्यारे०
गुरु पर बलि बलि जा निस बासर, मोह कपट छल जासी ।। प्यारे०
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, मन भया सहज उदासी ।। प्यारे०

(०)

आँखों का तारा सबका सहारा, हित चित से तू प्यारा है।
निर्मल शुद्ध बुद्ध हितकारी, सुख सम्पति परिवारा है ।।
घट घट बासी आनन्द रासी, अविनासी मंगलकारी ।
रोम रोम में रमता जोगी, रोग सोग से न्यारा है ।।
गुणातीत गोविंद मुरारी, पुरुषोत्तम करुणा सागर ।
जन मन रंजन दोष विभंजन, प्रेम प्रीति भंडारा है ।।
नाम लेत भव सिंधु सुखावें, ध्यान धरत कलि मल जावे ।
भव दुख मेटन दोष नसावन, भक्ति रीति का सारा है ।।
करम धरम वैराग ज्ञान तत, विज्ञानी पूरा सच्चा ।
हे दयाल करो दृष्टि दया की, हृदय दुखी हमारा है ।।
अब तो शरन में आना पडा हूँ, एक आस तेरी मुझको ।
राधास्वामी चरन से प्रीति रहे नित, वही धुर इष्ट सहारा है ।।

गुरु ने आन छुडाया साधु, गुरु ने आन छुडाया ।।टेक।।
माया काल की बडी जेवरी, बन्धन बांध बँधाया ।
गुरु की दया से बन्धन छूटा, यम का फांस कटाया ।। गुरु०
भव की नदी अथाह बही है, डूब गया जो आया ।
गुरु की कृपा शब्द का बेडा, भाग जगे तब पाया ।। गुरु०
एक आस विश्वास गुरु का, गुरु ने पार लगाया ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु गुन चित से गाया ।। गुरु०

गुरु भक्ति

कर पहले से कुछ जतन मीत, इस जगत से न्यारा होना है ।। टेक

और युक्ति कोई काम न आवें, इनमें जनम तो खोना है ।
गुरु की भक्ति सदा हितकारी, बीज भक्ति मन बोना है ।। कर०
सकल रसायन छोड दे भाई, भक्ति सार का होना है ।
भक्ति का साबुन गुरु से पावे, करम चदरिया धोना है ।। कर०
तज दे मोह नींद का आलस, अंत समय फिर सोना है ।
राधास्वामी चरन बांध दृढ प्रीती, नहीं फिर अंत में रोना है ।। कर०

गुरु भक्ति चित धार मनुआ ।।टेक।।

प्रेम प्रीत के रस में पगजा, सुमिरन भजन ध्यान में लगजा ।
काम क्रोध के मग से अलगजा, भक्ति प्यार प्रतीत के लगजा ।
कर जीवन से पार, मनुआ गुरु भक्ति चितधार ।। मनुआ०
कोमल हृदय शाँति के बैना, अपनी भलाई परख निज नैंना ।
समझ सोच सतसंग के सैना, राख विवेक विचार ।। मनुआ०
राधास्वामी नाम रहे होटों पर, इस नौके से तर भव सागर ।
नाम प्राप्ति का कुछ साधन कर, गुरुबल हो जा पार ।। मनुआ०

भक्ति की शक्ति मिली, और शक्ति वाली होगई ।
शक्ति वाली सहज में अब भक्ति वाली होगई ।।१।।
किसकी मुक्ति किसका बंधन, खोल दोनों मन में है ।
जो नहीं इसको समझते, समझ लो उलझन में हैं ।।२।।
मौंज में रहती हैं दासी, नाम जपती है सदा ।
नाम में विश्राम, सुख और शाँति है सर्वदा ।।३।।
सोते बैठते जागते, होठों पे गुरु का नाम है ।
चाहे जैसी हो अवस्था, नाम ही से काम है ।।४।।
राधास्वामी की दया से घट में गुरु दर्शन मिला ।
अब नहीं दासी को चिंता, नाम धन जब पा लिया ।।५।।

गुरु ने अमृत नाम पिलाया ।।टेक।।

मोह जाल की फाँसी काटी, चौरासी से आन छुडाया ।
अब नहीं काल कर्म का भय कुछ, अभय दान देजीव चिताया ।। नाम०
खटका झटका छूटा, सत मारग की राह चलाया ।
भूल भरम दुविधा संशय से, सहज रीति से सहज बचाया ।। नाम०
सहज योग विधि सहज कमाई, सहज सहज भव सिंध तराया ।
सहज शब्द गति सहज समाधी, सहज सुन्न में सहज रचाया ।। नाम०
एक रस जीवन प्रेम भक्ति का, दया कृपा से सब ही दिलाया ।
आओरे जीव करो सतसंगत, समय अमोलक काहे गँवाया ।। नाम०
राधास्वामी आये जीव चेतावन, संत रूप धर जीव चिताया ।
धन जो जीव शरण में आये, बिना कष्ट निज काम बनाया ।। नाम०

पिला दे भक्ति का ऐसा प्याला, ममत्व में अपने मन का खोदूँ ।
न बुधि रहे और न सुधि रहे कुछ, अहंपना सारा मनका खोदूँ ।।टेक।।
जपूँ तपूँ और भजूँ न सुमिरूँ, न योग युक्ति के पन्थ दौडूँ ।
न नाम की माला हाथ में हो, हिये की माला का मनका खोदूँ ।। पिला०
यह राग क्या जिसमें राग आये, वह त्याग क्या त्याग में फँसाये ।
न बन्ध और मुक्ति का हो खटका, विवेक घर और बन का खोदूँ ।। पिला०
न दुख की दुविधा न सुख की चिंता, न चित की दुचिता का भय हो किंचित ।
न ज्ञान और ध्यान की हो इच्छा, विचार साधन यतन का खोदूँ ।। पिला०
न द्वन्द निरद्वन्द का हो झगडा, न द्वैत अद्वैत का हो बखेडा ।
शुका के सिर राधास्वामी पग में विचार तक दास पन का खोदूँ ।। पिला०

हम तो निस दिन गुरु रंग राते ।। टेक ।।

गुरु की सेवा भजन बन्दगी, कहीं नहीं आते जाते ।। हम तो०
गुरु का बल ले गुरु की दया से, करम के फन्द कटाते ।। हम तो०
उठत बैठत कबहूँ न बिसरे, ध्यान गुरु का लाते ।। हम तो०
जब जागे तब गुरु का सुमिरन, नीन्द में गुरु संग पाते ।। हम तो०
खुली आँख गुरु मूरत निरखें, बन्द तो मन बीच लाते ।। हम तो०
छिन छिन पल पल दरस दिवाने, दरशन में मगनाते ।। हम तो०
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, बल बल गुरु पर जाते ।। हम तो०

गुरु नाम में हिय जिय उम गाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी
गुरु दरस पाये मन मगनाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥१
गुरु रूप में दरस दियो जग में अपना के कियो मुझको मग में ।
तेरा चरण छोड नहीं कहीं डाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥२॥
तेरा सुमिरन ध्यान भजन नित हो, तेरा श्रवण मनन निध्यासन हो ।
धारूँ मन में तेरा रूप सदा, धन धन धन धन राधास्वामी ॥३॥
तू दाता दीन दयाला है, भक्तों का तू प्रतिपाला है ।
तेरे चरण में तन मन बिसराऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥४॥
राधास्वामी ने की है दया भारी, गुरु चरण कमल पर बलिहारी ।
गुरु वचन सुनू और नित गाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥५॥

भज भज ले राधास्वामी नाम सदा ॥ टेक ॥

नाम की महिमा संत बखानें, नाम संग लव लायें ।
विषय वासना स्वाद त्याग कर, नाम राग धुन गावें ॥ नाम सदा०
सदना तरगया मीरा तरगई, तरगई गणिका गायन ।
जनम का पापी तरा अजामिल, सोधा नाम रसायन ॥ नाम सदा०
नाम प्रताप की महिमा भारी, नाम विपत को टारे ।
गो खुर जग का सिंध लँघावे, जनम के पातकी तारे ॥ नाम सदा०
योग वैराग त्याग जप ध्याना, संजम नियम अचारा ।
नाम बिना है सब ही निष्फल, करले आप विचारा ॥ नाम सदा०
अषट सिद्धि नौ निधि की खानी, भक्ति मुक्ति सुखदाई ।
राधास्वामी नाम जो हित से लेवे, लहे धन धाम बडाई ॥ नाम सदा०

राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाईये ॥ टेक ॥
माया से नाता तोड, काल कर्म सीस फोड ।
गुरु चरनन चित्त जोड, और सब भुलाईये ॥ राधास्वामी०
त्याग जग के द्वेष राग, आसा तृष्णा से भाग ।
गुरु चरनन नित जाग, भक्ति युक्ति पाइये ॥ राधास्वामी०
झूटे सब धाम ठाम, झूटे धन और दाम ।
साँचा राधास्वामी नाम, उससे लव लगाइये ॥ राधास्वामी०

सदा नाम से लव लगाया करो तुम ।
सुफल अपना जीवन बनाया करो तुम ।।१।।
बसाकर गुरु मूरती मन के मन्दिर ।
सिर्फ प्रेम दीपक जलाया करो तुम ।।२।।
कभी तो उन्हे भी खबर हो रहेगी ।
करुणा राग अपना सुनाया करो तुम ।।३।।
वह दाता दयालु अवश्य देंगे दर्शन ।
सदा ध्यान उनका लगाया करो तुम ।।४।।
भजन ध्यान से यह भटकने न पावे ।
निदुर मन को निसदिन चिताया करो तुम ।।५।।
मिलेंगे गुरु अपने जीवन के साथी ।
तडप मन में दर्शन बढाया करो तुम ।।६।।
मनो कामना होगी पूरन तुम्हारी ।
राधास्वामी का नाम गाया करो तुम ।।७।।

गुरु नाम का ले आधार सखी ।। टेक ।।
सांस सांस पर नाम सुमिरना, नाम का तार न टूटे ।
जो कोई इस विधि नाम को सुमिरे, सुख सम्पत्ति जग लूटे।।आधार०
राजा रानी रंक भिखारी, बडा जो नाम को सुमिरे ।
उसे बडा तुम सबसे जानो, नाम न कबहूँ बिसरे ।।आधार०
दुख नहीं व्यापे विपत न आवे नाम महा सुखदाई ।
नाम की महिमा सन्त बखानें, नाम से सबकी भलाई ।।आधार०
फेंक के माला हाथ की सजनी, मन की सुमिरनी लेना ।
बिना जीभ और होंटके सुमिरन, नाम को निज चित देना ।।आधार०
मन थिर तन थिर सुरत निरत थिर, घट की गुफा में पैठो ।
राधास्वामी नामका छिन छिन सुमिरन, सुख आसनसे बैठो।।आधार०

जिन नाम लिया तिन काम किया ।। टेक ।।

राना रानी दातात दानी, मान प्रतिष्ठा भागी ।
यह सब बडे हैं इनसे बडे हैं, नाम राग अनुरागी ।।१।।
नाम से नाम होत है सबका, नाम की महिमा भारी ।
मीरा सहजो दया को देखो, नाम से जगत उजारी ।।२।।
नाम सकल दुख आपत नासे, दुख में नाम जो लेवे ।
दुख दरिद्र कभी निकट न आवे, सुख में नाम चित देवे ।।३।।
जप तप योग पाठ और पूजा, नाम संग सब रहते ।
नियम धरम हैं नाम अधीना, साध सन्त यूँ कहते ।।४।।
मन से समझ नाम चित लाओ, नाम कभी न भलाना ।
राधास्वामी मत में आकर, राधास्वामी जप जपवाना ।।५।।

नाम रस पीले मेरे भाई ।। टोक ।।

ध्रुव प्रहलाद नाम रस माते, माती मीरा बाई ।
शिव सनकादिक नाम दिवाने, गनिका सदन कसाई ।।नाम०
ब्रह्म नाम जपे निस बासर, शिव रहे तारी लाई ।
विष्णु गणेश नाम आधारा, शेष सहस मुख गाई ।।नाम०
नानक जपे नाम गुरु निस दिन, संत कबीर बताई ।
शबरी भीलनी नाम के पुन से, राम से नेह लगाई ।।नाम०
तुलसी जपे प्रभु नाम निरन्तर, जपत सदा लौ लाई ।
सूरदास नाम के बल से, हिये की आँख खुलाई ।।नाम०
नाम बिना जीवन है वृथा, बहु पाछे पछताई ।
गुरु की कृपा मिला शुभ अवसर, नाम रतन धन पाई ।।नाम०
गुरु की सेवा साध की संगत दिन दिन बढे सवाई ।
राधास्वामी नाम गुरु से मिलिया, परगट तोहि जताई ।।नाम

नाम गुरु नित गाओ मेरे साधु, नाम गुरु नित गाओ ।।टेक
नाम ही ज्ञान ध्यान पुन नाम ही, नाम ही गाय सुनाओ ।
नाम ही पाठ नाम ही है पूजा, नाम से नेह लगाओ ।। साधु०
नाम की महिमा क्या कोई जाने, नाम जपो जपवाओ ।
नौका नाम नाम पुन खेवट, नाम से तरो तराओ ।। साधु०
नाम दरस और नाम परस है, नाम रूप दरसाओ ।
नाम सेतबंध रामेश्वर, नाम से लंक जिताओ ।। साधु०
लव लगी रहे नाम से निस दिन, नाम पदारथ पाओ ।
जप तप तीरथ सब कुछ त्यागो, नाम की ज्योत जगाओ ।। साधु०
नाम से रूप हिये गुरु दरसे, नाम से अलख लखाओ ।
नाम द्वैत का भर्म बिनासे, पद अद्वैत में आओ ।। साधु०
प्रेम प्रतीत रहे हिये अन्तर, नाम भजो भजवाओ ।
नाम सार है घट के भीतर, नाम की धूनी रमाओ ।। साधु०
नाम अमीरस प्रेम प्याला, अमृत नाम चखाओ ।
नाम की बंसी नाम की मुरली, नाम का शंख बजाओ ।। साधु०
मोर तोर की कठिन जेवरी, नाम से बंध कटाओ ।
रात दिवस गुरु संग रहोगे, नाम की रटन लगाओ ।। साधु०
दाह जगत से चित्त हटा दो, घट में शोर मचाओ ।
राधास्वामी नाम दान है गुरु का, नाम हिये में बसाओ ।। साधु०

(०)

नाम की औषधी मिली, संसार का क्यों रोग हो ।
नाम लेने वालों को क्यों, इस जगत में सोग हो ।।१।।
नाम का साधन किया जिसने उसे सब कुछ मिला ।
लाभ दायक अब उसे क्या, ज्ञान कर्म और योग है ।।२।।
तीन तापों की है औषधी, राधास्वामी नाम एक ।
दुख सतावे किसको जब गुरु नाम का संजोग है ।।३।।
राधास्वामी नाम के सुमिरन में सिद्धि शक्ति है ।
योगी पूरी कर कमाई, नाम ही का जोग है ।।४।।

नाम दान

सुन फकीर होजा फकीर अब, रूप संभारे अपना ।
जग में प्राणी तेरे रूप में, मेट दे उनका तपना ॥
तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही ।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही ॥
देह के बंध फकीरा आवे, बंध निरबंधन सोई ।
बंध कर बंधवे जीव छुडावें, समझे यह गति कोई ॥
तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा ।
दुखी जीव को अंग लगा कर, लेजा गुरु के देसा ॥
तीन ताप से जीव दुखी है, निबल अबल अज्ञानी ।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ॥
नाम फकीर धरा जब तू ने, काम फकीर का करले ।
गुरु की दया साथ ले अपने, भक्ति की झोली भरले ॥
तू इराक से अब की आया, सत संगत के कारण ।
ले प्रसाद यह सतसंगत का होजा भव निधि तारन ॥
राधास्वामी दया के सागर होंगे तेरे सहाई ।
फुक्र में उतरे साँच फकीरा सब की करे भलाई ॥

(०)

स्तुति

नाम दान प्रदान कीजे, गुरु दीन दयाल ।
चरन का नित ध्यान सुमिरन, चित न व्यापे काल ॥
सर्व समरथ सर्व अंग संग सर्व जगत आधार ।
शुद्ध मन से पद कमल को, करूँ निस दिन प्यार ॥
सिंधु भव अति अगम दुस्तर, सूझे वार न पार ।
विकल मन रहे सोच छिन छिन, कैसे जाऊँ किनार ॥
दया कीजे मेहेर कीजे, लीजे चरन लगाय ।
भक्ति दीजे तार लीजे, कीजे मेरी सहाय ॥
शब्द में रत रहूँ पल पल, सुरत पावे चैन ।
राधास्वामी दया सागर भजूँ मैं दिन रैन ॥

गुरु चरन

- रेणुका अगरवाल

गुरु के चरण सरोज में कोटी कोटी दंडौत ।
गुरु की दया अपार से, छूटे भव के खोट ।।
तीन ताप के भँवर में बूडे बारं बार ।
गुरु समरथ ने दया की, बूडत लिया निकार ।।
गुरु समान दाता नही, गुरु समान नहीं देव ।
गुरु की पल पल बंदना, निस दिन कीजे सेव ।।
गुरु आज्ञा में जायकर, तन मन सीस छुकाय ।
काल करम से बचन का, और न कोई उपाय ।।
गुरु से कुछ माँगूँ नहीं, उनसे माँगूँ यह ।
राधास्वामी दया करो, कर चरनन की खेह ।।

(०)

गुरु चरन कमल में सीस झुका, दिन रात करूँ सेवा पूजा ।
गुरु स्तुति नित करूँ मन से, गुरु सम कोई और नहीं दूजा ।।
गुरुदेव दयाल ने की जो दया, भवसिंधु से पार किया मुझको ।
नहीं वार रहा नहीं पार रहा, सब भाँति अपार किया मुझको ।।
गुरु दाता दानी अपार महा, याचक जग जीव हुये सारे ।
गुरु अर्थ देत गुरु धर्म देत, गुरु काम मोक्ष देने हारे ।।
गुरु महिमा जाने न ऋषि मुनि, शिव शारद शेष की पार नहीं ।
संसार असार की प्रीति छुटी, गुरु भक्ति सम कुछ सार नहीं ।।
बहु दरस किये बहु दान दिये, बहु तीरथ में जाकर भटके ।
गुरु चरन कमलसे प्रीति नहीं, यमजाल में सो निसदिन लटके।।

(०)

चरण कमल की धूर बख्शो, **चरन कमल की धूर** ।। टेक ।।
यह दूरी जीवन की मूरी, करे रोग भव दूर ।। बख्शो०
माँज माँज मन मकुर का दरपन, देखूँ सतपद नूर ।। बख्शो०
आँख लगाऊँ अंजन निर्मल, मिटे तिमिर भरपूर ।। बख्शो०
दिव्य दृष्टि की जोत अनुपम, ज्ञान ध्यान का सूर ।। बख्शो०
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी निरखूँ रूप हुजूर ।। बख्शो०

गुरु पद

पद कमल में सिर झुके नित दोनों कर को जोडकर ।
आपही का हो रहूँ, मन तोड मोड मरोडकर ॥१॥
कठिन माया जाल है, और कठिन काल कराल है ।
कठिन जग जंजाल है, दुख पाया नाता जोडकर ॥२॥
शान्ति जाती रही और भ्रान्ति चित में बसी ।
आप पर दृष्टि गई, आया शरण सब छोडकर ॥३॥
दया कीजे मेहर कीजे, लीजे चरनों में लगा ।
आपका मैं हो रहूँ, भरमों का मटका फोडकर ॥४॥
राधास्वामी दीन हित, भवनिध से बेडा पर कर ।
यह है मेरी बंदना, संसार से मुख मोड कर ॥५॥

(०)

गुरु पद का करले ध्यान री, मेरी सुरत सहैली ॥ टेक ॥
आजा गुरु की शरणागत में, सब विधि हो कल्याण री मेरी ॥ सुरत०
चिंता त्याग त्याग दे चिंता, यही है सच्चा ज्ञान री मेरी ॥ सुरत०
जो कुछ होगा मौज से होगा, मौज को परख सुजान री मेरी ॥ सुरत०
अंतर में तेरे सतगुरु बसते, घट में रूप पहचान री मेरी ॥ सुरत०
गुरु के चरन शरन जो आया, नहीं उनकी हो हान री मेरी ॥ सुरत०
सुमिरन ध्यान भजन कर सजनी शब्दयोग की जान री मेरी ॥ सुरत०
राधास्वामी नाम जो कोई सुमिरे, जीते जी निर्वान री मेरी ॥ सुरत०

(०)

गुरु पद सीस झुकाई, साधु गुरु पद सीस झुकाई ॥टेक॥
सीस झुकावत डहा मानगढ, ममता मोह गिराई ॥ साधु०
भय बिसरा दारूण दुख बिसरे, यम भूला चतुराई ॥ साधु०
जनम जनम का सोया मनुवा, गुरु ने आन जगाई ॥ साधु०
सिर पर हाथ दया का फेरा, अपने चरण लगाई ॥ साधु०
पल पल ध्यान रहे निस दिन, छिन छिन गुरु गुन गाई ॥ साधु०
गुरु मेरे जान प्राण से प्यारे, मूरत हिये में बसाई ॥ साधु०
सेवा करूँ नित्य हित चित से, गुरु को लेऊँ रिझाई ॥ साधु०
राधास्वामी चरन शरण बलिहारी, भक्ति सार अब पाई ॥ साधु०

गुरु रक्षा

राधास्वामी है रखवारे तेरे, राधास्वामी है रखवारे ।। टेक ।।
छिन छिन प्रति छिन चित चरनन पर, रह सतगुरु के सहारे ।। तेरे०
दया मौज की निरख परख कर, भज गुरु साँझ सकारे ।। तेरे०
भव सागर एक अगम पंथ है, नाव पडी मँझधारे ।। तेरे०
खेवटिया गुरु पूरा पाया, पहुँची आन किनारे ।। तेरे०
वह दयाल आपही तोहि पोसें, क्यों तू होत दुखारे ।। तेरे०
सुमिरन भजन ध्यान कर बन्दे, गुरु के चरन अधारे ।। तेरे०
राधास्वामी चरन शरण बलिहारी, चरन कमल में आ रे ।। तेरे०

(०)

मन क्यों सोच करे, तेरे राधास्वामी हैं रखवारे ।। टेक ।।
दीन अधीन शरण गुरु आया, रह अब चरण सहारे ।।मन क्यों०
तेरा काज मौज से होगा, क्यों तू होत दुखारे ।। मन क्यों०
शरनागत की लाज गुरु को, गुरु को दास प्यारे ।। मन क्यों०
भवजल अगम अथाह से क्या भय, गुरु कर देंगे किनारे ।। मन क्यों०
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, चरनन चित्त लगारे ।। मन क्यों०

बैठकर दिनरात घट में गुरु का सुमिरन ध्यान कर ।
गुरु से रक्षा होगी तेरी, सोच ले अनुमान कर ।।१।।
जग है दुखदाई न इसके, फंद में आना कभी ।
जो फँसा मारा गया, तू बचके चल भय मान कर ।।२।।
नाम ले विश्राम ले, है नाम में सुख शान्ती ।
नाम का ले आसरा, दिन रात उसका गान कर ।।३।।
नाम ले ले तर गये, कामी क्रोधी लालची ।
नाम को मत भूल, महिमा नाम की तू जानकर ।।४।।
राधास्वामी ने बताया, नाम लेने की विधि ।
शब्द का अभ्यास कर अंतर में अपने आन कर ।।५।।

द्वैत अद्वैत में भूल भरम है, चित से भरम मिटाओ ।। गुरु०
भरम मिटे तब सार लखे कोई, सतसंग भरम मिटाओ ।। गुरु०
सुरत शब्द का साधन सीखो, घट में नाद बजाओ ।। गुरु०
झलके ज्योति की अन्दर धारा, देख देख हरषाओ ।। गुरु०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, गुरु पद सीस झुकाओ ।। गुरु०

(०)

मेरे प्यारे भाई ले गुरु की शरणाई ।। टेक ।।

भरम फाँस में मन उरझाना, नहिं सूझे कोई अपना बिराना ।
भूला मोह मया मद माना, समझ न अब तक आई ।। भाई०
गुरु है तेरे तू है गुरु का, तू बालक गुरु पितु और माता ।
क्यों नहीं चरन कमल में रहे राता, कैसे कहूँ समझाई ।। भाई०
छिन पल सुमिरन गुरु का नामा, चित पावे तेरा विश्रामा ।
त्याग मान अभिमान के कामा, चरन शरन हित लाई ।। भाई०
तेरा काम मौज से होगा, मौज अधीन भोग और जोगा ।
मौज को छोड सहे रोग सोगा, मौज में तेरी भलाई ।। भाई०
तू रणवीर धीर रण सूरा, तेरा काम करे गुरु पूरा ।
हो रह चरण कमल की धूरा, राधास्वामी के गुन गाई ।। भाई०

(०)

गुरु स्वामी करो तुम मेरी सहाय ।। टेक ।।

मैं बालक तुम मात पिता हो, आया शरण तुम्हारे ।
अब तो चिन्ता चित नहीं व्यापे, तुम हो सदा रखवारे ।। मेरी०
मै अजान कुछ जानु नाहीं, बाल विनय सुन लीजे ।
माँगन की विधि मोहि न आवे, जो भावे सो दीजे ।। मेरी०
सतगुरु शरन रतन धन खानी, चरन शरन नित माँगूँ ।
और नहीं कोई चाह है मन में, पद सरोज में लागूँ ।। मेरी०
तुम्हरी गोद खेलूँ दिन राती, आनन्द चित बसाऊँ ।
दुख क्लेश नहीं मुझे सतावे, नाम सुमिर हरषाऊँ ।। मेरी०
राधास्वामी परम दयाला, दया से लो अपनाई ।
करम न व्यापे भरम न व्यापे, सदा गहूँ शरनाई ।। मेरी०

आया तेरी शरण में, रख मेरी लाज प्यारे ।
तेरी दया से पूरा, हो मेरा काज प्यारे ॥१॥
भक्ति का आसरा हो, भक्ति दे अपनी मुझको ।
हित चित से मैं सजाऊँ, भक्ति का साज प्यारे ॥२॥
तुम में है सारी शक्ति, तुम में है योग युक्ति ।
दुख से दिला दे मुक्ति, तेरा है राज प्यारे ॥३॥
जब आ गया शरण में, दुख दूर कर दे मेरा ।
कल का भरोसा क्या है, कर काम आज प्यारे ॥४॥
गुरु दाता राधास्वामी, तेरा ही आसरा है ।
आया शरण में तेरे, सब जग से भाज प्यारे ॥५॥

(०)

शरणागत की लाज स्वामी, शरणागत की लाज ॥ टेक ॥
तुम तो आये नर देही में, शरणागत के काज ॥ स्वामी०
मैं हूँ दीन अधीन तुम्हारा, तुम राजों के महराज ॥ स्वामी०
ज्ञान करम की विधि नहीं जानू, नहीं भक्ति का साज ॥ स्वामी०
भव भय अधिक सतावे मो को, महा काल सिर गाज ॥ स्वामी०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, दास को तारो आज ॥ स्वामी०

बिनती

चरण शरण गुरु दीजिये शरणागत आया ।
सेवक सब विधि जानकर, गुरु कीजे दाया ॥
अपराधी कामी कुटिल, दम्भी और मानी ।
खोट भरा छल कपट का, क्रोधी अज्ञानी ॥
तारनहारा तारले, तू तारन आया ।
मो सम पापी कौन है, दे चरण की छाया ॥
हारा हार कर हारकर, हारा मन अपने ।
और कहीं नहीं आसरा, कोई सूझे न सपने ॥
निज बालक प्रभु जानकर, लीजे चरण लगाय ।
चरण कमल मन छोडकर, और कहूँ नहिं जाय ॥

मानुष जनम

शीला अग्रवाल

बड़े भाग मानुष तन पावा । सुर दुरलभ सब ग्रंथन ही गावा ॥
तेरी गुदडी में लाल टका, क्यों नहीं नजर करे ॥टेक॥
बगल में लडका शहर ढिंढोरा, मूरख भरम मरे ॥ क्यों नहीं०
हिरन के नाभ रहे कस्तूरी, बन बन भटक फिरे ॥ क्यों नहीं०
मानुष तन में साहेब बसता, नर पाखान लखे ॥ क्यों नहीं०
बिन सतगुरु सब धोका खाया, कैसे कोई समझे ॥ क्यों नहीं०
राधास्वामी गुरु जब जीव चेतावें, तब भव सिंध तरे ॥ क्यों नहीं०

(०)

मानुष जनम सुधार तू, मेरी सुरत सुहागिन ॥ टेक ॥
पिया की शरण में जल्दी आजा, चित धर प्रेम प्यार तू ॥ मेरी०
माँग भरा भक्ति सेंदूर से, माँग परम सिंगार तू ॥ मेरी०
क्षमा की चूनर दया की साडी, पहर के चल दरबार तू ॥ मेरी०
पिया के महल का सुख आनन्द ले, डाल जगत सिर छार तू ॥ मेरी०
राधास्वामी साँचे प्रीतम, चरण कमल हिये धार तू ॥ मेरी०

(०)

सखी लख मानुष जनम का सार ॥ टेक ॥
भक्ति रीति के मारग पग धर, चित में प्रेम प्यार ।
परमारथ का अर्थ साध ले, सुधरा रहे व्यवहार ॥ सखी०
पंथ में आकर बन पंथाई, पंथ की डगर संभार ।
सतगुरु दया भव निधि से तरजा, औरों को ले तार ॥ सखी०
घट की खटपट मेट के सजनी, सुरत का कर सिंगार ।
सुरत को शब्द में सहज लगादे, राधास्वामी की बलिहार ॥ सखी०

(०)

करले निज उपकार मानुष तन पाया ॥ टेक ॥
नर शरीर दुर्लभ देवन को, मन में सोच विचार ॥ मानुष०
अब की चूक होय पछतावा, अवसर नहीं बारम्बार ॥ मानुष०
भक्तिभाव गह ले गुरु शरनी, तज दे विषय विकार ॥ मानुष०
रात दिवस रहे लम्पट जग में, भज ले सत करतार ॥ मानुष०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, जा भव निधि के पार ॥ मानुष०

गुरु गुण पल पल गाओ, फकीरवा गुरु गुण पल पल गाओ ।।टेक।
भव दारुण से बहु दुख पाया, भया कलेजे भाव ।। फकीरवा०
रोग सोग की गुरु पै औषधि, उन शरणागत जाव ।। फकीरवा०
मानुष देही मिली कृपा से, फिर नहीं ऐसा दाव ।। फकीरवा०
वृथा जन्म मत खो तू अपना, भक्ति पदारथ पाव ।। फकीरवा०
गुरु खेवटिया पार लगावें, मँझधार तेरी नाव ।। फकीरवा०
कंचन देह को कुन्दन करले, दे भक्ति का ताव ।। फकीरवा०
सतसंग चेत करो सतगुरु का, उपजे प्रेम का भाव ।। फकीरवा०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, पद सरोज चित लाओ ।। फकीरवा०

(०)

पाके नर जीवन न समझा, तत्व को और सार को ।
क्यों बुरा कहते हो तुम, ईश्वर को और संसार को ।।१।।
बुद्धि उसने दी तुम्हें, बुद्धि की शक्ति युक्ति दी ।
क्यों बिगाडा पाके सब, परमार्थ और व्यवहार को ।।२।।
देवताओं से भी उत्तम, उसने तुम को कर दयिा ।
भरम में फँस कर न समझा, तुमने वार और पार को ।।३।।
करलो सतसंग गुरु की, ज्ञान की दृष्टि खुले ।
लाओ तट पर नाव अपनी, छोड कर मँझधार को ।।४।।
राधास्वामी की दया से, जनम को करलो सुफल ।
काटो बंधन भरम के, और त्यागो कारागार को ।।५।।

(०)

जनम नर का पाके, सत जीवन का भागी बन के रह ।
भोग ज्ञान आनन्द को, और तू न त्यागी बन के रह ।।१।।
भक्त बन हो ज्ञानी ध्यानी, और विवेकी पारखी ।
कौन कहता है तुझे, जग में अभागी बनके रह ।।२।।
कर के सतसंगत गुरु की, रूप अपना जान ले ।
सच्चिदानन्दम अखण्डम, तू न साँगी बनके रह ।।३।।
राधास्वामी की दया से, तू तो है सबसे बडा ।
शब्द का अभ्यास कर और शब्द रागी बन के रह ।।४।।

मानुष जनम

मानुष जनम सुधारो साधु,मानुष जनम सुधारो ।।टेक।।
अपनी करनी पार उतरनी, मन में समझ विचारो ।
जैसी करनी वैसी भरनी, जनम जुवा मत हारो ।। साधु०
धन संपत और हाट हवेली, एको काम न आवे ।
यह बन्धन है यम की फाँसी, अन्तकाल पछतावे ।। साधु०
मात पिता भाई सुत बन्धु, संग न कोई सहाई ।
गुरु की दया से काज सँवारो, बनत बनत बन जाई ।।साधु०
अवसर पाया नरतन पाया, दुर्लभ अधिक अनूपा ।
कर सतसंग सार कुछ समझो, निरखो अपना रूपा ।।साधु०
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी, गाओ ।
राधास्वामी चरनन ध्यान लगाकर, धुरपद जाये समाओ।।साधु०

(०)

जब मानुष देह मिली तुमको, इस देह से औरों को कुछ दो ।
जीतेजी इस संसार में कीरति, यश आदर सन्मान को लो ।।१।।
धनवान हो तो तुम धन को दो, विद्या वाले हो तो विद्या दो ।
जिस गुण का तुमको भाग मिला, दो दो कुछ कुछ उससे दो दो ।।२।।
नद नाले मेह की गंगा की, सागर की देख दशा प्यारे ।
औरों के लिये यह है सारे, आते हैं यह काम में औरों को ।।३।।
सूरज की चन्द्र की तारों की, ज्योति को देख समझ मन में ।
यह औरों के काम में आते हैं, चाहे घर पर हो कोई बन में हो ।।४।।
जो देता है वह लेता है, जो लेता है वह देता है ।
जो नहीं देते वह क्यों निष्फल, फिर नाम धनी का लेते हो ।।५।।
दो दान दया का दानी हो, दो दान ज्ञान का ज्ञानी हो ।
क्यों निष्फल जनम गँवाते हो, अभिमानी मानी गुमानी हो ।।६।।
लेना हो तो यश कुछ दे कर , जगत की हाट में आये हो ।
जो पहले दिया था उसके बदले आज यह सब कुछ पाते हो ।।७।।
राधास्वामी जग में आये, भक्ति का दान दिया हमको ।
दो प्रेम भक्ति तुम औरों को, बदले में पद निर्वाण को लो ।।८।।

निज स्वरूप

मंगलम् अशब्द अरूप, शब्द रूप स्वामी ।
मंगलम् अलख अनाम, अगम नाम नामी ॥
मंगलम् दीन बन्धु दीन नाथ दाता ।
मगलम् अभेद भेद, आनन्द घन त्राता ॥
महिमा अनन्त आदि, अन्त कौन गावे ।
भेद तेरा कौन जाने, कौन कह सुनाये ॥
सन्त भेस प्रगट जगत, जीव को चिताया ।
काल कर्म फन्द काट, धुर ले पहुँचाया ॥
प्रथम तत्व निज स्वरूप, पद कमल नमामी ।
गाऊँ ध्याऊँ रात दिवस, भजूँ राधास्वामी ॥

(०)

साधु सतगुरु भेद बताया ॥टेक॥

धर्म अर्थ और काम मोक्ष का, सार मर्म प्रगटाया ।
जड चेतन की ग्रंथी खोली, तत्व का तत्व सुझाया ॥ साधु०
दुविधा भागी दुर्मति त्यागी, भव भय भरम मिटाया ।
अब नहीं संशय मोहि सतावे, भ्रान्ती बीज नसाया ॥ साधु०
आसा लग मद लोभ मोह में, अपना रूप भुलाया ।
सत संगत में समझ बूझ भई, आप में आपा पाया ॥ साधु०
बीज में अंकुर अंकुर डाली, डाली फूल खिलाया ।
फूल से फल का रूप दिखाया, फल में बीज लखाया ॥ साधु०
काल चक्र सृष्टि और प्रलय, जो भूला भरमाया ।
राधास्वामी सतगुरु बन कर निज स्वरूप समझाया ॥ साधु०

(०)

कहना मेरा मानरी मेरी, सुरत अचेती ॥ टेक ॥

निज स्वरूप जब से तू भूली, अपना किया अपमान री मेरी ॥ सुरत
सत्त धाम की राज कुमारी क्यों पडी योनी की खान री मेरी ॥ सुरत

माया ने भर्माया तुझको, अटकी मोह मद मान री मेरी ।। सुरत०
शुभ अवसर मानुष तन पाया, अब तो ले गुरु ज्ञान री मेरी ।। सुरत०
राधास्वामी सतगुरु दाता, देंगे भक्ति का दान री मेरी ।।सुरत०

(०)

मोह नींद तज उठमन पापी, अंत समय पछतावेगा ।। टेक ।।
दौलत दुनिया माल खजाना, माया का सब ताना बाना ।
इन सबका कुछ नहीं ठिकाना, कोई काम नहीं आयेगा ।।मोह०
क्या बैठा है फूला फूला, क्यों अपने अज्ञान में भूला ।
क्यों संसार हिंडोले झूला, ऊपर नीचे जावेगा ।। मोह०
सत और असत नहीं पहचाना, रैन दिवस रहा सोना खाना ।
मानुष जन्म सार नहीं जाना, यम के जाल बंधावेगा ।। मोह०
यह संसार सपन की माया, झूठा तन मन झूठी काया ।
सच्चा जान वृथा भरमाया, दौड दौड मर जावेगा ।। मोह०
मोह नींद में हो मतवारा, निज स्वरूप का ध्यान बिसारा ।
राधास्वामी का घट कर दीदारा, जाग जाग फल पावेगा ।। मोह०

(०)

पाके सुमति दुर्मति में भूल में क्यों आगया ।
छोडकर आनन्द सुख, दुख सूल में क्यों आगया ।।१।।
तू था नर के रूप, नारायण का सच्चा मित्र था ।
हाय माया और भरम के भूल में क्यों आगया ।।२।।
जो चमकता रहता है, राजाओं के क्रीट और मुकुट में ।
अब नहीं अनमोल हीरा, धूल में क्यों आगया ।।३।।
गिर गया निज पद से, कारण का पता पाया नहीं ।
सूक्ष्म हो कर मुंह के बल, स्थूल में क्यों आगया ।।४।।
अब संभल जा यह संभलने, का है अवसर जान ले ।
राधास्वामी को सुमिर, प्रतिकूल में क्यों आगया ।।५।।

सतसंग

- रेणुका अगरवाल

सतगुरु हैं गुरु सत के रूप । सत्त लोक के साँचे भूप ॥
उनका संग है सतसंग । सतसंगत से चढे सुरंग ॥
संग प्रभाव रंग गुरु धारे । चित को सोधे मन को मारे ॥
ज्योति संग ज्यों जले पतिंगा । तेहि विधि करे गुरु का संगा ॥
अंधकार अज्ञान विनासे । सत का नू र हिय चित भासे ॥
सतसंग सत का संग है, सतगुरु सत सरदार ।
सत रूपी सत भावना, सत शोभा भंडार ॥

(०)

सतसंग तीरथ राज प्रयाग
गंग भक्ति बहे निर्मल थारा, सरस्वती ज्ञान विराग ।
जमुना करम धरम व्यवहारा, प्रेम प्रीत अनुराग ॥ सतसंग०
बट विश्वास इष्ट पद दृढता, गुरु पद पूरण राग ।
तीन त्रिवेणी कर अस्नाना, जागा सोया भाग ॥ सतसंग०
सुगम सहज सुख मंगल दाता, सुलभ जो सेवे लाग ।
नहाये धोये निर्मल हो मन चित, छूटें कलि मल दाग ॥ सतसंग०
बगला विरति हंस गति पावे, कोमल बाणी काग ।
जीतेजी तत छिन फल देवे, इच्छा होय सो मांग ॥सतसंग०
काम अर्थ धर्म मोक्ष जो चाहे, ऐसे तीरथ भाग ।
राधास्वामी दया से पूरण कामा, गुरु संगत नित जाग ॥ संतसंग०

संगत कर गुरु की सखी, घट विवेक आवे ॥ टेक ॥
अमृत रस वचन भरे, मन आनन्द पावे ॥ संगत कर०
ज्ञान ध्यान भक्ति सूझे, काल न सतावे ॥ संगत कर०
योग युक्ति यतन मिले, भ्रान्ति भरम जावे ॥ संगत कर०
चंचल मन अचल बने, विकलता नसावे ॥ संगत कर०
राधास्वामी गुरु के गुण को, सांसों सांस गावे ॥ संगत कर०

सतसंगत सुख उपजे, सतसंगत दुख जाय ।
सतसंगत से साधुवा, मोक्ष मुक्ति फल पाय ।।१।।
सतसंगत के गुण बहुत, महिमा बरनि न जाय ।
लोहा पारस से मिले, सो सोना हो जाय ।।२।।
सतसंगत में पुण्य है, सतसंगत में धर्म ।
सतसंगत में साधुवा, मिले सत्त का मर्म ।।३।।
पोथी पढ पढ जग मुवा, खुले न हिये के नैन ।
सतसंगत प्रताप से, मिल रहा सच्चा चैन ।।४।।
वाल्मीक नारद भये, ज्ञान ध्यान की खान ।
सतसंगत में कीजिये, नाम अमृत रस पान ।।५।।

चल गुरु के सतसंग री, मेरी सुरत सहेली ।।टेक।।

सतसंगत अमृत जल बरसे, सतसंग निर्मल गंग री मेरी ।।सखी०
सतसंग प्रेम सिंध है सजनी, उमडे प्रीत तरंग री मेरी ।। सखी०
बास सुबास मिले सतसंगत, पावे रंग सुरंग री मेरी ।। सखी०
सतसंगत का ध्यान रहे नित, कीट सहज हो भृंग री मेरी ।। सखी०
राधास्वामी गुरु की कर सतसंगत, काल करम कर भंग री मेरी ।। सखी०

(०)

गुरु संग नेह लगाओ री, मेरी प्यारी सुरतिया ।। टेक ।।

सुमिरन भजन ध्यान कर चित में, मोक्ष पदारथ पाओ री मेरी ।। सुरत०
गुरु का रूप बसा तेरे अंतर, उस पर वृत्ति जमाओ री मेरी ।। सुरत०
लख लख अलख दशा घट भीतर, अनहद धुन नित गाओ री मेरी ।। सुरत०
सुमिरन सबका सार है प्यारी, सुमिरन सहज उपाओ री मेरी ।। सुरत०
ध्यान गुरु का रूप है सजनी, रूप अनूप को ध्याओ री मेरी ।। सुरत०
नाम का तार गूँज रहा अंतर, सुन सुख आनन्द पाओ री मेरी ।। सुरत०
दुख को त्याग हर्ष नित बाढे, उसकी चाह बढाओ री मेरी ।। सुरत०
भँवर में जीवन नाव पडी है, तट पर उसको लाओ री मेरी ।। सुरत०
राधास्वामी गुरु का दयाभाव ले, चरण शरण में जाओ री मेरी ।। सुरत०

मनुआ चित से कर सतसंग ।। टेक ।।

चंचलता तज होजा निश्चल, छोड दे चित की पुरानी हलचल ।
क्यों फँसता है माया के दलदल, धार गुरु का रंग ।। मनुआ०
सुमिरन नाम का साँससाँस हो, ध्यान में गुरु की मूरति पास हो ।
भजन में आनन्द हर्ष उल्हास हो, ऐसा सीख ले ढँग ।। मनुआ०
सहस कमल तज त्रिकुटि आजा, सुन्न में सहज समाध रचाजा ।
तीन सुन्न के आगे आजा, सुन सतगुरु प्रसंग ।। मनुआ०
राधास्वामी दया से काज बना ले क्यों पडता है काल के पाले ।
दया गुरु की दया सदा ले, पीले प्रेम की भंग ।। मनुआ०

(०)

सजन तू कर सतसंग लव लाय ।। टेक ।।

एक घडी सतसंग बैठकर, नाम गुरु का लेवे ।
सो प्रणी भवसागर तर कर शोभा जग को देवे ।। सजन०
पानी देख शुद्धता बाढे, नारी देखे कामा ।
बस कुसंग कुटिलाई बाढे, सतसंगत गुरु नामा ।। सजन०
एक घडी हो पाव घडी हो, पाव घडी की आधी ।
जो सतगुरु की संगत बैठे, मेटे मन की उपाधी ।। सजन०
प्रेमीजन के संग में आवे, याद गुरु की बाणी ।
सो गुरु बाणी जनम बनावे, अन्त मुक्ति निर्वाणी ।। सजन०
संस्कार पलटे सब मन का, बुद्धि प्रेम चित आवे ।
राधास्वामी की दया से, जम का फंद कटावे ।। सजन०

क्यों भरमत डोले प्राणी वह तो तेरे पास में ।। टेक ।।

ना वह ज्ञान ध्यान वृत भाई, ना वह योग अभ्यास में ।
न वह करम धरम संयम में, ना विरक्त सन्यास में ।। क्यों०
अर्श फ़र्श पर पता न पाया, न कासी कैलास में ।
माया मोह की गम नहीं उसमें, उदासीन न निरास में ।। क्यों०
ढूँढ़त ढूँढ़त ढूँढ थके जब, अन्तर झुके तलाश में ।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, वह सांसों के सांस में ।। क्यों०

प्रार्थना

है यही शिक्षा गुरु की, गुरु का गुण गाओ सदा ।
गुरु चरण में करदो अर्पण, देह धन मन सर्वदा ।।१।।
गुरु तुम्हारे घट में है, घट ही में दर्शन की चाह ।
शब्द गुरु का संग हो, कोई नहीं गुरु दूसरा ।।
वह तुम्हारा तुम हो उसके, है यह घट में रात दिन ।
घट में ढूढ़ो घट में पाओ घट का परदा दो उठा ।।२।।
वह अघट व्यापा है, घटमें घट हीमें पाओगे तुम ।
बात मैं कहता हूँ सच जिसको मिला, घट में मिला ।।३।।
राधास्वामी की दया से, पूरा करलो काम अब ।
नाम लो बिश्राम लो, धन धाम लो तुम घट में अब ।।४।।

(०)

हमें भी दे तार लाखों तारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ।
लगा दे भव जल के अब किनारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ।।१।।
न हो किसी से हमारा नाता, न हम किसी का सहारा ढूँढे ।
रहें सदा तेरे ही सहारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ।।२।।
न मोह माया का मन में खटका, न काल और कर्म का हो झटका ।
निवास कर मन में अब हमारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ।।३।।
दे प्रेम भक्ति का दान हमको, न दे तू सन्मान मान हमको ।
यही है विनती हमारी निस दिन, दयाल दाता कृपाल स्वामी ।।४।।
दे खोल दृष्टि तुझे पिछानें, दरस परस करके तुझको माने ।
उदय हों घट सूर चन्द्र तारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ।।५।।
अलख अगम का दिखा तमाशा, दिलादे निज धाम में तू बासा ।
चरण कमल के रहें सहारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ।।६।।
जपूँ सदा मन से राधास्वामी, कहूँ सदा मुख से राधास्वामी ।
दिला दिला नाम धन दुलारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ।।७।।

- प्रातःकाल की प्रार्थना -

तुम्हारा एक सहारा नाथ ॥ टेक ॥

मैं अजान चिंता बस व्याकुल, मन में भरा हंकारा ।
तीन ताप की अग्नि जलावे, कौन करे निस्तारा ॥ तुम्हारा०
लोभ मोह ने मुझे फंसाया, बूझे वार न पारा ।
गुरु उपदेश न चित्त समावे, हार हार बहु हारा ॥ तुम्हारा०
धीरज दे मेरी बाँह पकड कर, भव से करो किनारा ।
राधास्वामी सतगुरु दाता, मैं हूँ दास तुम्हारा ॥ तुम्हारा०

- मध्य काल की प्रार्थना -

आस लगी तुम्हरे दरस की, दरस दिखा दो नाथ ॥ टेक ॥

मात पिता भाई संबंधी इनके झूठे प्रेम में बंधी ।
मै तो सब विधि भई हूँ अँधी, सांची डगर दिखा दो नाथ ॥ आस०
आओ आओ चित में समाओ, सांवरी मूरती हिये बस जाओ ।
बिगडी मेरी बना भी जाओ, प्रीत की रीत सिखादो नाथ ॥ आस०
तुम हो सांचे सखा संघाती, तुम्हे रिझाऊँ दिन और राती ।
धास्वामी मेटो सब उत्पाती, घट का मरम लखा दो नाथ ॥ आस०

- सोने से पूर्व की प्रार्थना -

मेरा संकट काटो नाथ ॥ टेक ॥

और मलीन चित, कोई संग न साथ ।
को बिताऊँ, धरो सिर पर हाथ ॥ मेरा०
ंचे रक्षक, मैं अजान अनाथ ।
प्रभु, चरण झुकाऊँ माथ ॥ मेरा०
य, और प्रेम की दात ।
टे सब उत्पात ॥ मेरा०

राधास्वामी मेरी बिनती प्रेम से सुन लीजिये ।

- बि. काशय्या

चित हाटाकर जगत से, चरणों की छाया दीजिये ॥१॥
मन हो निश्चल ध्यान धरने से, वह उकताये नहीं ।
सुरत ठहरे और ठहरनेसे, वह घबराये नहीं ॥२॥
रात दिन सुमिरन हो रसना, नाम का रस ले सदा ।
मैं भजूँ हित चित से गुरु के, नाम ही को सर्वदा ॥३॥
रूप का हो ध्यान, सुमिरन नाम का अन्तर में हो ।
शब्द का साधन भजन हो, तन की सुधबुध सारी खो ॥४॥
तन मन में इन्द्रियों में बुद्धि, और तुम चित में बसो ।
अंग संग दिन रात मेरे, घट के भीतर तुम रहो ॥५॥
हाथ में आओ करूँ व्यवहार मैं उपकार के ।
पाँव ऐसे हों, चलूँ मैं पन्थ में करतार के ॥६॥
आँख में बैठो जगत में, आपकी मूरत लखूँ ।
कान में बैठो सदा मैं, शब्द अनहद का सुनूँ ॥७॥
चलते फिरते जागते सोते रहो तुम साथ में ।
सहज में आजाये, परमारथ की निधि सिधि हाथ में ॥८॥
मेरा आपा लय, तुम्हारे आपा में होजाये अब ।
सुरत जागे गगन में, पृथ्वी में वह सो जाय अब ॥९॥
तू का मैं का मिथ्या झगडा, छूटे जीवन मुक्त हूँ ।
शुद्ध निर्मल आत्मा हो, सुख से आनन्द से जिऊँ ॥१०॥
राधास्वामी तुम दया सागर हो, सत करतार हो ।
ऐसी कृपा कीजिये अब लोक यह संसार हो ॥११॥

(०)

माई चिंता चित न धार ॥ टेक ॥

जब आई तू गुरु की शरणी, गुरु ही करेंगे संभार ॥ माई०
सुमिरन कर गा गुरु की बाणी, तेरे सीस न भार ॥ माई०
मन में ध्यान रहे सतगुरु का, नहीं व्यापे संसार ॥ माई०
छोड आस जग की सुन माई, गुरु से करले प्यार ॥ माई०
राधास्वामी दया मेहर करें पूरी, एक दिन बेड़ा पार ॥ माई०

- प्रातःकाल की प्रार्थना -

तुम्हारा एक सहारा नाथ ।। टेक ।।

मैं अजान चिंता बस व्याकुल, मन में भरा हंकारा ।
तीन ताप की अग्नि जलावे, कौन करे निस्तारा ।। तुम्हारा०
लोभ मोह ने मुझे फंसाया, बूझे वार न पारा ।
गुरु उपदेश न चित्त समावे, हार हार बहु हारा ।। तुम्हारा०
धीरज दे मेरी बाँह पकड कर, भव से करो किनारा ।
राधास्वामी सतगुरु दाता, मैं हूँ दास तुम्हारा ।। तुम्हारा०

- मध्य काल की प्रार्थना -

आस लगी तुम्हरे दरस की, दरस दिखा दो नाथ ।। टेक ।।

मात पिता भाई संबंधी इनके झूठे प्रेम में बंधी ।
मै तो सब विधि भई हूँ अँधी, सांची डगर दिखा दो नाथ ।। आस०
आओ आओ चित में समाओ, सांवरी मूरती हिये बस जाओ ।
बिगडी मेरी बना भी जाओ, प्रीत की रीत सिखादो नाथ ।। आस०
तुम हो सांचे सखा संघाती, तुम्हे रिझाऊँ दिन और राती ।
राधास्वामी मेटो सब उत्पाती, घट का मरम लखा दो नाथ ।। आस०

- सोने से पूर्व की प्रार्थना -

मेरा संकट काटो नाथ ।। टेक ।।

दीन दुखित और मलीन चित, कोई संग न साथ ।
कैसे दुखी जीवन को बिताऊँ, धरो सिर पर हाथ ।। मेरा०
तुम हो मेरे सांचे रक्षक, मैं अजान अनाथ ।
भूल चूक को क्षमा करो प्रभु, चरण झुकाऊँ माथ ।। मेरा०
साँची भक्ति दो दयामय, और प्रेम की दात ।
राधास्वामी की कृपा से, छूटे सब उत्पात ।। मेरा०

राधास्वामी मेरी बिनती प्रेम से सुन लीजिये ।

- बि. काशय्या

चित हाटाकर जगत से, चरणों की छाया दीजिये ।।१।।
मन हो निश्चल ध्यान धरने से, वह उकताये नहीं ।
सुरत ठहरे और ठहरनेसे, वह घबराये नहीं ।।२।।
रात दिन सुमिरन हो रसना, नाम का रस ले सदा ।
मैं भजूँ हित चित से गुरु के, नाम ही को सर्वदा ।।३।।
रूप का हो ध्यान, सुमिरन नाम का अन्तर में हो ।
शब्द का साधन भजन हो, तन की सुधबुध सारी खो ।।४।।
तन मन में इन्द्रियों में बुद्धि, और तुम चित में बसो ।
अंग संग दिन रात मेरे, घट के भीतर तुम रहो ।।५।।
हाथ में आओ करूँ व्यवहार मैं उपकार के ।
पाँव ऐसे हों, चलूँ मैं पन्थ में करतार के ।।६।।
आँख में बैठो जगत में, आपकी मूरत लखूँ ।
कान में बैठो सदा मैं, शब्द अनहद का सुनूँ ।।७।।
चलते फिरते जागते सोते रहो तुम साथ में ।
सहज में आजाये, परमारथ की निधि सिधि हाथ में ।।८।।
मेरा आपा लय, तुम्हारे आपा में होजाये अब ।
सुरत जागे गगन में, पृथ्वी में वह सो जाय अब ।।९।।
तू का मैं का मिथ्या झगडा, छूटे जीवन मुक्त हूँ ।
शुद्ध निर्मल आत्मा हो, सुख से आनन्द से जिऊँ ।।१०।।
राधास्वामी तुम दया सागर हो, सत करतार हो ।
ऐसी कृपा कीजिये अब लोक यह संसार हो ।।११।।

(०)

माई चिंता चित न धार ।। टेक ।।

जब आई तू गुरु की शरणी, गुरु ही करेंगे संभार ।। माई०
सुमिरन कर गा गुरु की बाणी, तेरे सीस न भार ।। माई०
मन में ध्यान रहे सतगुरु का, नहीं व्यापे संसार ।। माई०
छोड आस जग की सुन माई, गुरु से करले प्यार ।। माई०
राधास्वामी दया मेहर करें पूरी, एक दिन बेड़ा पार ।। माई०

तू जगदीश जगत का करता, तेरा मन में ध्यान रहे।
तेरी लगन लगे निस बासर, तेरा निस दिन ध्यान रहे ।।
तू अनाम तू मायातीता, गुणातीत करुणा सागर ।
सुख सम्पति परलोक बडाई, तुझ में यश और मान रहे ।।
चरण कमल की भक्ति मिले स्वामी, भक्तिभाव हिय में आवे ।
तेरी प्रीति प्रेम पद का प्रभु, छिन छिन प्रतिछिन गान रहे ।।
दोऊ कर जोड करूँ मैं बिनती, क्षमा करो अपराध मेरा ।
तेरी सेवा तेरी पूजा, तेरा ही ज्ञान अनुमान रहे ।।
रसना नाम जपे तेरा पल पल, दर्शन की अभिलाष बढी ।
शब्द की ओर निरन्तर मेरे, सुरत निरत का कान रहे ।।
जग की मान बडाई न माँगूँ, नहीं माँगूँ धन परिवारा ।
भक्ति दीजे चरन कमल की, भक्ति से कल्याण रहे ।।
छल चतुराई कपट कुटिलता, काल कर्म से सब हारे ।
शरणागत की सुध प्रभु लीजे, चरण शरण में आन रहे ।।

(०)

अब मैं नाथ शरण में आया ।। टेक ।।

मैं अजान अज्ञान की मूरत, मोह मान लपटाया ।
बुद्धि विवेक समझ नहीं मुझमे, मन में भरमा भरमाया ।। अब०
बाल जान अन्जान परख कर, दीजे पद कमल की छाया ।
दुखी अधीन दीन चित व्याकुल, जान न आप पराया ।। अब०
भूल चूक अपराध मेट कर, कीजे करुणा दाया ।
त्राह त्राह प्रभु रक्षा कीजे करम ने बहुत सताया ।। अब०
अब नहीं सहन की शक्ति स्वामी, चित है अधिक घबराया ।
मुझे तो इतनी समझ न आई, क्या अपराध कमाया ।। अब०
शरण में आया है शरणागत, भटका धोखा खाया ।
राधास्वामी परम दयाला, अब नहीं व्यापे माया ।। अब०

तुझे कभी न बिसारूँ रे गुरु दाता ।। टेक ।।

बडे भाग से दर्शन पाया, सब तन मन धन बारूँ रे गुरुदाता ।। **तुझे०**
जनम जनम रहे तेरी आसा, सकल वासना जारूँ रे गुरुदाता ।। **तुझे०**
मैं तो तेरे चरण लग स्वामी, कुल कुटुम्ब भी तारूँ रे गुरुदाता ।। तुझे०
गुरु की टेक बसालूँ चित में, काम क्रोध मद मारूँ रे गुरुदाता ।। तुझे०
प्रगटे ज्योत नयन में मेरे, प्रेम दीप घट बारूँ रे गुरुदाता ।। तुझे०
घट में ध्यान जमाऊँ गाढा, तृष्णा मोह निकारूँ रे गुरुदाता ।। तुझे०
राधास्वामी नाम का सुमिरन, चरण सरोज पखारूँ रे गुरुदाता ।।तुझे०

(०)

तेरा आसरा है तेरा है सहारा ।
शरण में पडा तेरे तू है हमारा ।।१।।

निरास हूँ जग से मैं आसा तेरी है ।
दया की हो दृष्टि मिटे कष्ट सारा ।।२।।
खली आँख से मैं करूँ तेरा दर्शन ।
चला जाऊँगा फिर मैं भव सिंधु पारा ।।३।।
अमृत पिला मुझको दे सत का जीवन ।
काल और करम का हूँ मैं मारा मारा ।।४।।
साहस नहीं दिल में शक्ति नहीं है ।
संग्राम में जग के सब से हूँ हारा ।।५।।
माया मुखी होके मन से दुखी हूँ ।
समेट अपनी माया को घट चमके तारा ।।६।।
सुरत शब्द से मेरा घट हो उजाला ।
मेरे मेट अज्ञान का अंधकारा ।।७।।
अलख और अगम के परे धाम तेरा ।
मैं चढ जाऊँगा जो तू देगा सहारा ।।८।।
गुरु राधास्वामी की हम पर दया हो ।
हमें तार दो समझें तुम जग को तारा ।।९।।

दया निधि दीन दुख भंजन, कपामय नाथ जन रंजन ।।टेक।।

चरण की ओट में लीजे । मुझे भक्ति का धन दीजे ।।
दुखी हूँ तीन तापों से । मलिन मन जग के पापों से ।।
पडी अज्ञान की फाँसी । छुडालो आके अविनाशी ।।
तुम्हारा नाम लेता हूँ । चरण में चित को देता हूँ ।।
तुम्हारा एक सहारा है । नहीं कोई हमारा है ।।
खुली दृष्टि तो यह जाना । तुम्ही को मीत पहचाना ।।
गहो तुम बांह अब मेरी । न लाओ नाथ कुछ देरी ।।
रहे लौ नाम की निस दिन । भजूँ मैं आपको छिन छिन ।।
चरण को छोड कहाँ जाऊँ । सदा मन बुद्धि से ध्याऊँ ।।
सुफल कर दो जनम मेरा । मिटे संसार का फेरा ।।
यही बिनती हमारी है । तुम्हीं से आस भारी है ।।
दया राधास्वामी अब कीजे । चरण की छाँह में लीजे ।।

(०)

दया दृष्टि से, खोल दे आँख मेरी । रहे वासना, मन में भक्ति की तेरी ।।
तेरी आस है, और तेरा ही सहारा । शरण देके कर सिंध से भव के पारा ।।
करूँ तन से और मन से, मैं काम तेरा । रहे रात दिन, होटों पर नाम तेरा ।।
सदा सर्वदा मन में हो ध्यान तेरा । तेरा ही हो अनुमान और ज्ञान तेरा ।।
जपूँ राधास्वामी भजूँ राधास्वामी । पढूँ राधास्वामी लिखूँ राधास्वामी ।।

(०)

त्याग भरोस जगत का प्यारी, धार गुरु की आस तू ।।टेक।।

गुरु को खोज चरण में लगजा, भज गुरु साँसों साँस तू ।
गुरु समान कोई देव न दूजा, देखले धरन अकास तू ।। त्याग०
गुरु की दया जीते जी पाले, आनन्द हर्ष हुलास तू ।
तन के बिछड़े सत्त धाम में, करे सदा सहबास तू ।। त्याग०
विपत पड़े तन मन सब बैरी, उरझी चिंता फाँस तू ।
आसा तृष्णा मोह मया सब, समझ काल का त्रास तू ।। त्याग०
राधास्वामी सदा सहाई आजा उनके पास तू ।
हो सतसंग विवेक सहित नित, कर अज्ञान का नास तू ।। त्याग०

तेरी स्तुति क्या करूँ देवा, मनवाणी के पार है तू ।
परम तत्व आनन्द परम धन, परमारथ का सार है तू ।।
अगम अनाम अकाम अमाया, अन्तर बाहर व्यापा है ।
अकथ अथाह अरूप अगोचर, आप आपका आपा है ।।
अगण सगुण अद्वै द्वैत में, सब में सब से न्यारा है ।
सब में रमा निरंतर बासी, सब से अपरंपारा है ।।
मंगलमय मंगल की खानी, ज्ञान बुद्धि भंडारा है ।
अलख अलौकिक अमर अजर विभो, शब्द जोति टकसारा है ।।
वेद न जाने भेद अनूपम, किस विधि बरन कहूँ देवा ।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, गुरु स्वरूप की करूँ सेवा ।।

(०)

दीन हीन शरण में आया, भेंट भाव स्वामी लीजे ।
कृपा दृष्टि से अपने दाता, शरणागत धन दीजे ।।१।।
मैं तो निबल कुटिल खल कामी, क्रोधी महा मलीना ।
तुमने अवगुण देख के मेरे, दया पात्र मोहि कीना ।।२।।
धन्य धन्य गुरु परम सनेही, परम दयाल कृपाला ।
तिमिर मिटा अज्ञान भरम का, हृदय भया उजाला ।।३।।

दयामय दीन दुख भंजन, कृपा निधि भक्त मन रंजन ।
कमल पद की शरन दीजे, पतित की लाज रख लीजे ।। दया०
जगत में कष्ट बहु पाया, चरण में आपके आया ।
विकल मन चित्त घबराया, तुम्हारा ध्यान तब आया ।। दया०
चरण की ओट में लीजे, अटल भक्ति का बर दीजे ।
भिकारी आपके द्वारे, पडा त्रयताप के मारे ।। दया०
पिला दो प्रेम का प्याला, रहे दिन रात मतवाला ।
करम के जाल से भागे, अमी रस नाम में पागे ।। दया०
यही मन की है अभिलाषा, करो पूरी प्रभू आसा ।
विनय राधास्वामी हितकारी, सुनो भव से करो पारी ।। दया०

- प्रार्थना -

- दीपिका भटनागर

दीन हित करुणा निधान, कृपाल सुख सागर महा ।
जान अपना दास दीजे, भक्ति प्रेम की संपदा ।।

आया शरणागत तुम्हारे, त्याग सबकाक आसरा ।
एक तुम्हारी आस है प्रभु, कीजिये मुझ पर दया ।।

बुंद केहि विधि सिंधु तज कर, पाये सुख और शांति ।
ज्ञान धन के रूप तुम हो, मेट दो सब भ्रांति ।।

है तुम्हारी सब में सत्ता, सत्त मुझको कीजिये ।
काल माया से छुडाकर, मुक्ति का पद दीजिये ।।

राधास्वामी सतगुरु, करतार गुण निर्गुण हो तुम ।
नाम सच्चा दान दीजे, सत्यनाम की धुन हो तुम ।।

(०)

अपनी शरण में लेलो, मेरे कृपाल दाता ।
चरणों की भक्ति देदो, मेरे दयाल दाता ।।१।।

दुख कष्ट के झमेले, दिन रात मैने झेले ।
पापड इन्ही के बेले, मेरे दयाल दाता ।।२।।

बोझा है भारी सिरपर, फिरता हूँ मारा दर दर ।
हैं एक जैसे बन घर, मेरे दयाल दाता ।।३।।

भक्ति न ज्ञान पाया, भरमा भरम में आया ।
अज्ञान घट में छाया, मेरे दयाल दाता ।।४।।

संकट में मैं फँसा हूँ, दुख कष्ट में बसा हूँ ।
दल दल में मैं धँसा हूँ, मेरे दयाल दाता ।।५।।

दुखिया की लाज रखलो, चरणों की छाँह देदो
दृष्टि मेहर की करदो, मेरे दयाल दाता ।।६

राधास्वामी दीन हित कर, अपनी शरण में रख कर ।
निज धाम दो दया कर, मेरे दयाल दाता ।।७।।

गुरु चरण कमल में विनय करूँ ।। टेक ।।

विनय करूँ मैं विनय करूँ, गुरु चरण कमल में विनय करूँ ।।
विश्वामित्र विश्व हितकारी, विश्वम्भर विश्वासी ।
अपनी दया से पार लगा दे, कटे बन्ध चौरासी ।। विनय०
करुणामय करुणा के सागर, करुणा के भंडारा ।
काम क्रोध से मुझे छुडाकर, ले चल भव के पारा ।। विनय०
दीन हितैषी दीन दयाला, दीन अधीन सहाई ।
दीन समझ भक्ति दे मुझको, लहूँ चरण शरणाई ।। विनय०
गुण की खानी गुण में आगर, गुण नागर गुणकारी ।
अवगुण मेट के गुणी बनादे, कर दे मुझे सुखारी ।। विनय०
राधास्वामी भक्ति पदारथ, का हूँ मैं अभिलाशी ।
प्रेम भाव हिये अंतर आवे, भजूँ गुरु अविनाशी ।। विनय०

(०)

दीन हीन शरण में आया, कीजे आप सहाय ।
काल का भय सहज मेटो, अपने चरण लगाय ।।
सिंधु भव अति अगम दुस्तर, सूझे वार न पार ।
हो दया की दृष्टि साईं, नाव है मंझधार ।।
पतित पावन तरन तारन, यह तुम्हारा नाम ।
बाल विनती सुनो चित से मन को दो विश्राम ।।
ज्ञान नहीं निर्वाण नहीं, अनुमान से नहीं काम ।
शब्द का दे आसरा प्रभु बख्श दीजे नाम ।।
नाम दान प्रदान कीजे, नाम रतन महान ।
राधास्वामी दया सागर, कीजीये कल्याण ।।

(०)

बतादो साईं परमारथ की बात ।।टेक।।

कौन देश से हंसा आया, कौन देश को जात ।। बतादो०
कैसे बँधा आये माया संग, कैसे छूटे साथ ।। बतादो०
रात अंधेरी नींद न आवे, कब होगी परभात ।। बतादो०
सुध बुध अपनी आप न बूझे, मन रहकर पछतात ।। बतादो०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी गुरु पद चित झैराठ ।। बतादो०

गुरु धरा शीश पर हाथ, मन क्यों फिकर करे ।
गुरु रक्षा हरदम संग, क्यों नहीं धीर धरे ॥
गुरु राखें राखनहार, इनसे काज सरे ।
मेरी करें पक्ष दिन रात, उनसे काल डरे ॥
मेरे मात पिता गुरु देव, महिमा कौन करे ।
राधास्वामी दीन दयाल तुमसे काज सरे ॥

(०)

दया दृष्टि कीजे, मुझे तार लीजे ।
लगा अपने चरणों से, भव पार कीजे ॥
रहे बासना नाम को भी, न मन में ।
कटे दिन मेरा भक्ति में, और भजन में ॥
सदा सर्वदा, नाम ही की लगन हो ।
तुम्हारा ही सुमिरन, तुम्हारा मनन हो ॥
तजी बासना, और चरणों में आया ।
न व्यापे मुझे, जगत की मोह माया ॥
जपूँ जागते सोते, मैं राधास्वामी ।
कहूँ पद में झुक कर, नमामी नमामी ॥

(०)

गुरु दाता लगा दो पार मुझे ॥ टेक ॥

टूटी नय्या भँवर पडी है, काढ निकारो किनार मुझे ॥ गुरु०
काल करम का बोझ पडा सिर, नहीं भावे यह भार मुझे ॥ गुरु०
तुम समान कोई नजर न आवे, खेवटिया हुशियार मुझे ॥ गुरु०
बन्धन में माया के उलझा, जग है कारागार मुझे ॥ गुरु०
राधास्वामी आन बताओ, परमारथ का सार मुझे ॥ गुरु०

(०)

रंग दे मन की साडी रंगीले ॥ टेक ॥

जनम जनम की मैली साडी, मैल बोझ से भारी रंगीले ॥ रंगदे०
काम क्रोध कीचड में लतपत, होगई फूहड नारी रंगीले ॥ रंगदे०
सतसंग शिला ज्ञान का साबुन, मलमल धो साडी कारी रंगीले ॥रंगदे०
प्रेम का रंग सुहाना लगादे, अब न फिरूँ मारी मारी रंगीले ॥रंगदे०
राधास्वामी प्रीतम अंग लगाले, तेरी हो जाऊँ प्यारी रंगीले ॥ रंगदे०

चितावनी के शब्द

- दीपिका भटनागर

उठ जाग सवेरा हो गया ।। टेक ।।

गई सियाही आई सफेदी, अब क्यों सोवे भाई ।
रात बीत गई सूरज निकला, त्याग नींद अलसाई ।। उठजाग०
उजले केश की पत कुछ रखले, चौथापन जब आया ।
चलने की कर अपने तयारी, जग बादर की छाया ।। उठजाग०
हँसा फूल हँस कर मुरझाया, बास सुबास को त्यागी ।
हँसी ठठोल का समय नहीं है, हो गुरु पद अनुरागी ।। उठजाग०
कोयल कूक सुनाकर चुप हुई, मौन अवस्थाधारी ।
वाद विवाद से मन को रोकले, शान्ती का अधिकारी ।। उठजाग०
सुमिर सुमिर भज नाम गुरु का, नाम सन्त मत सारा ।
राधास्वामी की दया से, जा भव जल पारा ।। उठजाग०

(०)

आई शाम भज गुरु का नाम ।। टेक ।।

दिन तो बीता जग व्यवहारा, समय नींद का आया ।
सोने से पहले नाम को भजले, मोह मान तज माया ।। गुरु का०
सोना मौत निशानी समझो, छोटी मौत अवस्था ।
मौत से पहले चेत नाम लो, सोधो अपनी व्यवस्था ।। गुरु का०
सिमिट सिमिट जल भरे तलावा, तैसे ही नाम सुमिरना ।
मन में शुभ गुण रस रस भरना, फिर आनन्द से मरना ।। गुरु०
जनम मरण छिन छिन है प्राणी, छिन छिन योनी बासा ।
जो कोई सुमिरे नाम गुरु का, पडे न यमकी फाँसा ।। गुरु का०
नाम है मंगल सुख की खानी, नाम मुक्ति का दाता ।
जो कोई पीवे नाम सुधारस, रहे नाम मद माता ।। गुरु का०
राधास्वामी गुरु ने विधि बताई, अंतर विरती जमाओ ।
सुरत शब्द की करो कमाई, नाम राग धुन गाओ ।। गुरु का०

(०)

उठ जाग सवेरा री, सुरत मेरी भागवती ।
मिटा भरम अँधेरा री, धारले हिये सुमति ।। टेक ।।
क्या तू सोई मोह नींद में, उठ के भजन में लाग ।
सोये होय अकाज पियारी, जाग जाग उठ जाग ।। सुरत०
चेत चेत ले चेत का अवसर, काल है फन धर नाग ।
कब डसले क्या कोई जाने, जाग जाग उठ जाग ।। सुरत०
प्रेम प्रीत परतीत उमंग से, धर गुरु पद अनुराग ।
जो सोया सो खोया प्राणी, जाग जाग उठ जाग ।। सुरत०
शीतल मंद सुगंध पवन बहे, गा गुरु मंगल राग ।
यह सोने का समय नहीं है, जाग जाग उठ जाग ।। सुरत०
राधास्वामी तोहि चितावन बख्शा, अचल सुहाग ।
तज परमाद की निन्द्रा, जाग जाग उठ जाग ।। सुरत०

(०)

तू क्यों सोवे मोह नींद में, जाग जाग सुरत प्यारी ।
निरख परख कर मन अपने की, आठ पहर की रखवारी ।।
यह संसार है दुख की खानी, सोच सोच मन में अपने ।
चिडिया रैन बसेरा है जग, कुल कुटुम्ब मिथ्या सपने ।।
एक आस विश्वास गुरु की, और सकल भ्रमजाल महा
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, सेवक गुरु की शरण गहा ।।

(०)

धोबिया प्रगटा जग में सजनी, लीजो चूनर धुलाय ।। टेक ।।
जनम जनम की मैली चुनरीया, देखत जिया घबराय ।। धोबिया०
काम क्रोध कीचड लपटानी, दुरगंध बास बसाय ।। धोबिया०
धोबिया आया चतुर सियाना, अवघट घाट सजाय ।। धोबिया०
कर्म की भट्टी तप की अग्नी, ज्ञान का साबुन लाये ।। धोबिया०
सतसंग शिला पै मल मल धोवे, चूनर मैल भराय ।। धोबिया०
फटे न बिगडे सूत न बिखरे, सहज ही साफ कराय ।। धोबिया०
राधास्वामी धुबिया न्यारा, शब्द का रंग दिलाय ।। धोबिया०

ऐ मेरे प्यारे भाई देखो संभल के चलना ।
खोटे करम न करना, खोटी न बात कहना ।।
दुख दोगे दुख मिलेगा, सुख दोगे सुख मिलेगा ।
मारोगे तुम किसीको फिर ग़म पडेगा सहना ।।
क़ौल व खयाल करतब दरिया से है मुशाबा ।
तुम देखना न इनकी लहरों में पडकर बहना ।।
मन इन्द्रियों पे भाई जब्त रखना तुम बराबर ।
ज़ाबित बने रहोगे खुशहाल हो के रहना ।।
अपनी निशिस्त रखना तुम आत्मा पर हरदम ।
आतम स्वरूप रह कर संसार में विचरना ।।

(०)

माई सोच समझ व्यवहार करो ।। टेक ।।

पानी मध्ये पडा बतासा, गलते देर न लागे ।
इस जीवन का कौन भरोसा, बादर गगन में भागे ।। व्यौहार०
नहाय धोय कर मैल उतारे, नित नये वस्त्र धारे ।
तैसे सुरत उतारे तन को, कोई विवेकी विचारे ।। व्यौहार०
मल से देह बनी मानुष की, मल मलीन की खानी ।
नित उठ धोवो लाख जतन कर, शुद्धि में रहे ग्लानी ।। व्यौहार०
तन की आसा मन की आसा, सीस की आसा नाहीं ।
माई सोचो कुछ निज मन में, आसा है परछाँई ।। व्यौहार०
सतसंगत कर बुद्धि बढाओ, अपना जनम बनाओ ।
सुरत शब्द की क़रो कमाई, राधास्वामी के गुण गाओ ।। व्यौहार०

(०)

माई गुरु भक्ति चित लाना ।। टेक ।।

गुरु की भक्ति सदा सुख दाई, इसे न कभी भुलाना ।। माई०
वृथा जीवन समय न खोना, अपना जनम बनाना ।। माई०
प्रेम प्रीत की राह में पग दे, नित प्रति गुरु गुण गाना ।। माई०
जग में यह धन दुर्लभ माई, कठिन योग से पाना ।। माई०
राधास्वामी गुरु की दया भई है, गुरु से लगन लगाना ।। माई०

सुरत मेरी जागरी, तज नींद विकार ।। टेक ।।

कब लग सोवे मोह निशा में, मानुष जनम न बारम्बार ।। सुरत०
तरुवर से ज्यों पात झडत है, फिर नहीं लागे डार ।। सुरत०
तैसे ही यह अवसर प्राणी, फिर नहीं मिले गँवार ।। सुरत०
चेत चेत सुध कर कुछ घरकी, रहन यहाँ दिन चार ।। सुरत०
राधास्वामी दया काज कर अपना, कर मन सोच विचार ।। सुरत०

(०)

गुरु चरणन चित धार री, मेरी प्यारी सुरतिया ।। टेक ।।

अपने स्वारथ वश लिपटाने, कुल कुटुम्ब परिवार री मेरी ।। प्यारी०
एक में सुख और अनेक में दुख है, टेक एक की धार री मेरी ।। प्यारी०
करम की गठरी को हलकी करले, राख न सिरपर भार री मेरी ।। प्यारी०
एक आस विश्वास गुरु का, भक्ति ज्ञान का सार री मेरी ।। प्यारी०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, होजा द्वन्द के पार री ।। प्यारी०

(०)

करले अपना काम अब, मेरी चतुर सुरतिया ।।टेक।।

आलस तज निद्रा को तजदे, तज मद मोह निकाम अब ।। मेरी०
सुमिरन ध्यान भजन नित करना, सुमिर सुमिर गुरु नाम अब ।। मेरी०
गुर से पावे चार पदारथ, मोक्ष धर्म धन काम अब ।। मेरी०
जो आया गुरु की शरणागत, सब विधि पूरण काम अब ।। मेरी०
जीते यश कीर्ती इस जग में, पीछे राधास्वामी धाम अब ।। मेरी०

(०)

अपनी ओर निहार री, अलबेली सुरतिया ।। टेक ।।

औरन को क्या निरखे सजनी, तू है सबका सार री ।। अलबेली०
घट में तेरे प्रीतम बसता, हित चित से कर प्यार री ।। अलबेली०
तू है प्रेम की मूरत प्यारी, प्रेम की तू भंडार री ।। अलबेली०
सब कुछ तेरे घट में बसत है, घट के नैन उधार री ।। अलबेली०
बाहर की सब आसा तज दे, अंतर दृष्टि पसार री ।। अलबेली०
घट चेला गुरु गगन बिराजे, सुरत से मन में विचार री ।। अलबेली०
राधास्वामी गुरु ने भेद बताया, चरण कमल सिर धार री ।। अलबेली०

पतित पावन तरन तारन

- के. वेंकटेश्वरलु

सुनो बिनती नाथ मेरी, जीव सहत क्लेश ।
भव का बन्धन काट इनके, दया करो विशेष ।।
तरन तारण नाम धारा, तार दीजे आज ।
है तुम्हारे हाथ अब तो, स्वामी सब की लाज ।।
रोग भोग बियोग में, नहीं भक्ति साधन जोग ।
दीन बन्धु बख्श दीजे, शरण का संजोग ।।
नाम दीजे काम कीजे, लीजे चरण लगाय ।
सब भिखारी हैं तुम्हारे, इनकी कीजे सहाय ।।
पतित पावन भय मिटावन, यह कहूँ कर जोर ।
राधास्वामी की मेहर से, छूटे मोर और तोर ।।

(०)

गुरु समरथ दाता तारेंगे, गुरु समरथ ।। टेक ।।
मन में सोच करे क्यों मूरख, बिगडी तेरी सुधारेंगे ।। गुरु०
भूल चूक की चिंता क्यों है, करनी तेरी बिसारेंगे ।। गुरु०
गोते खाते बहु दिन बीते, भव जल पार उतारेंगे ।। गुरु०
दृष्टि नहीं तेरे करतब पर, अपनी ओर निहारेंगे ।। गुरु०
राधास्वामी शरण में जो नहीं आये, जीती बाजी हारेंगे ।। गुरु०

(०)

नाम सुमिर भव तरना है, हाँ ।। टेक ।।
नर देही भव सागर तरनी, दया से हाथ में आई ।
जो कोई इसका सार न जाना, बिरथा जनम गँवाई ।। तरना०
नाव पडी मँझधार में तेरी, खेवट सतगुरु पूरा ।
नाम सुमिर जा भव जल पारा, जो माया रन सूरा ।। तरना०
नाम मंत्र से बस में आवे, काल कराला नागा ।
नाम पाये जो नाम न सुमिरे, विष से मरे अभागा ।। तरना०
एक नाम से सबही मिलते, नौ निधि सिद्धि शक्ति ।
जीतेजी नर पावे मुक्ति, करे जो नाम की भक्ति ।। तरना०
राधास्वामी नाम सार है, सार सार का सारा ।
जो सुमिरे यह नाम निरंतर, सहज जावे भव पारा ।। तरना०

साधु का अंग

साधु की संगत गुरु की सेवा, राधास्वामी दीजे ।
इसके सिवा और न माँगूँ चरण शरण में लीजे ।।
साधु संग गंगाजल निर्मल, नहाय पाप कटावे ।
जो कोई साधु की संगत आवे, भक्ति पदारथ पावे
गंधी की दुकान साधु संग, बिन माँगे शुभ बासा ।
जो चाहो तुम मुक्ति भक्ति को, रहो साधु के साथा ।।
पाप हरें दुख दारुण भेटे, सुख देंवें बिन माँगे ।
साहब का दीदार करावें, सहज ही भव निधि लाँघे
राधास्वामी साध संग दो, और नहीं अभिलाषा ।
चरण कमल की छांह रहूँ नित, बनूँ साध का दासा

(०)

साधु मुझको सब से प्यारे, साधु मेरे सनेही ।
साधु चरण पर तन मन वारूँ, सुफल करूँ नर देही ।।
साधु कुल में जनम मिला है, साधु मेरे भाई ।
गुरु की दया साधु की संगत, मेरी भई भलाई ।।
साधु गुरु के रूप हैं मेरे, महिमा अधिक अपारी ।
साधु सेवे आनन्द पाया, राधास्वामी की बलिहारी ।।

(०)

आप तरें औरों को तारें, यह साधु की महिमा ।
इनका पर उपकार है भारी, किससे कोई दे उपमा ।।
कोई बाहर कोई भीतर देखे, लीला अगम अनूपा ।
बाहर भीतर एक समाना, एक विचित्र स्वरूपा ।।
राधा सुरत शब्द कन्हाई, दोनों का भया मेला ।
बंसी बाजी जब मधुबन में, मेटा द्वन्द झमेला ।।
ब्रह्म सनातन रूप कृष्ण का, समझे कोई नर ज्ञानी ।
भँवर गुफा चढ सुने बाँसुरी, परखे शब्द निशानी ।।
राह रुकाना गुरु से पूछो, आगे अगम अगोचर ।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, सतपद पहुँचा धुर धर ।।

मन का अंग

- पूज्य सीता जी अग्रवाल

सबके घट घटका है बासी, घट ही उसका धाम है ।
रूप ही सब हैं उसी के, उसके लाखों नाम हैं ।।१।।
भक्त की भक्ति है, शक्तिवान की शक्ति है वह ।
ज्ञान है ज्ञानी का, और सन्तों का वह विश्राम है ।।२।।
एक है और सहस्त्र है, और सहस्त्र से भी है अधिक ।
सबका है सबमें है, सब जग का वह रमता राम है ।।३।।
फूल फल पत्ते कली पौदा है, पौदों का है बीज ।
देह में वह बल में वह है, उसमें धन और दाम है ।।४।।
राधास्वामी ने बताया, उसके होकर तुम रहो ।
वह है उसका जो सुमिरता, उसको आठों याम है ।।५।।

(०)

तोरा मन दर्पण कहलाय ।। टेक ।।

भले बूरे सारे कर्मों को देखे और दिखाय ।
मन ही देवता मन ही इश्वर, मन से बडा न कोय ।। मन०
मन उजियारा जब जब फैले, जग उजियारा होय ।
इस उजले दर्पण पर प्राणी, धूल न जमने पाय ।। मन०
सुख की कलियाँ दुख के काँटे, मन सबका आधार ।
मन से कोई बात छुपे न, मन के नयन हजार ।। मन०
जगसे कोई चाहे भाग ले, कोई मन से भाग न पाय ।
तोरा मन दर्पण कहलाय ।। मन०

(०)

उमर क पंछी उडता जाय, क्यों प्राणी गुरु नाम न गाता रे ।।टेक।।

किसे पता है कल क्या होगा । पता नहीं किस पल क्या होगा ।
कालचक्र फिरता मदमाता ।। क्यों प्राणी गुरु नाम न गाता रे०
कच्चि साँसों की क्या आसा । कर जाय कब बंद तमासा ।
रे मूरख मन क्यों भरमाता ।। क्यों प्राणी गुरु नाम न गाता रे०
आज कहे काल भजूँगा । कल आये फिर कहे काल भजूँगा ।
बीता पल लौटकर न आय उमरका पंछि उडता जाय ।। क्यों प्राणी०

फ़क़ीरा सोच समझ पग धार ।। टेक ।।

बिन समझे कोई सार न पावे, भटके बारम्बार ।
संशय दुविधा और चतुराई, यह अज्ञान विकार ।। मन तू०
कोई नर पशु है कोई तिरिया पशु, गुरु पशु कोई गँवार ।
वेद पशु है सब संसारा, बिना विवेक विचार ।। मन तू०
माया पशु माया का बँधुआ, मुक्ति पशु स्वीकार ।
भक्ति पशु बंधन नहीं काटे, बूडा काली धार ।। मन तू०
ज्ञान पशु की क्या करूँ निंदा, वह ग्रन्थन के लार ।
जड चेतन की गाँठ न खोले, उरझ उरझ रहा हार ।। मन तू०
योग पशु बन्धे योग की रसरी, बैठे आसन मार ।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, सेवक हुआ भव पार ।। मन तू०

(०)

इस मन अंदर बाग बगीचा, इसमें है फुलवारी ।
नाना गाछ लता हैं अन्दर, नानाखेत कियारी ।।
इस मन अन्दर सात समुन्दर, मोती मूँगा भारी ।
ले जितना तेरा मन चाहे, बन सच्चा व्यापारी ।।
मन के अन्दर असुर देवता, तीरथ सकल विराजें ।
मन के अन्दर बजे बाँसुरी, शंखनाद धुन गाजें ।।
मन ही कुरुक्षेत्र है तेरा, अर्जुन बाण चलावे ।
जो कोई इस मन को समझे, समर विजय फल पावे
रावण राम लडें मन अन्दर, नित ही होत लडाई ।
सीता सती अशोक वाटिका, सब मन की प्रभुताई ।।
मन ही विष्णु आदि शिव शक्ति, ब्रह्मा वेद बखानें ।
मन ही साम यजुर ऋग बाणी, जो जाँचे सो जाने ।।
मन ही आग पवन जल पृथ्वी, मन अकाश का रूपा ।
मन निर्वाण मुक्ति का हेतु, मन अन्दर भव कूपा ।।

मन भजरे साहेब करतारा ।। टेक ।।

उमर बिताई समय गँवाया, मिला न ठौर ठिकाना ।
प्रेम भक्ति की रीति न जानी, जग धंदे भरमाया ।। मन रे०
दो दिन का रहना है प्रणी, दो दिन का व्यवहारा ।
दो दिन का यह सकल पसारा, दो दिन कुल परिवारा ।। मन रे०
जो आये हैं जायेंगे एक दिन, कैसा घर और डेरा ।
मूरख सोच समझ मन अपने, चिडिया रैन बसेरा ।। मन रे०
रात विषय में लंपट रहता, दिन को खाना पीना ।
ऐसे प्राणी पशु हैं जग में, धिक धिक उनका जीना ।। मन रे०
सतगुरु राधास्वामी पाये, सार भेद समझाया ।
अब नहीं पडूँ करम के धंदे, भक्ति स्वाद रस पाया ।। मन रे०

(०)

सब मन की प्रभुताई साधु, सब मन की प्रभुताई ।। टेक ।।

मन ही आवे गर्भ बास में, जननी गोद खिलाई ।
मन ही धरे किशोर अवस्था, मन ही में तरुणाई ।। साधु०
मन ही नारी संग भरमाना, विषय भोग लिपटाई ।
मन ही सुत बनिता उपजावे, मन व्यवहार कराई ।। साधु०
वृद्ध अवस्था मन ही जो व्यापे, भई आलस कदराई ।
मन नहीं मरे मार सब डारे, चिता की आग जराई ।। साधु०
मन ही भजन ध्यान मन सुमिरन, मन ही बुद्धि रहाई ।
काम क्रोध मद लोभ फँसाना, मन में मान बडाई ।। साधु०
मन का रूप लखे नहीं कोई, मन सब खेल खेलाई ।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, मन का भेद जनाई ।। साधु०

(०)

रे मन आज सुमिर गुरु नाम ।। टेक ।।

क्या जाने क्या होयेगा पल में, सदा नहीं विश्राम ।। रे मन०
माया मोह में भूला निस दिन, व्यापा क्रोध और काम ।। रे मन०
सावधान होय सुन गुरु बाणी, तज दे मोह और काम ।। रे मन०
काल करम की गति है न्यारी, भक्ति करे निष्काम ।। रे मन०
राधास्वामी मूरत बसी हिये में, गुरु भजो आठों याम ।। रे मन०

यह मन समझन जोग, साधु यह मन समझन जोग ।। टेक

मन ही ज्ञान और मन ही ध्यान है, मन ही मोक्ष और भोग ।। र
मन में वेद को पढते ब्रह्मा, शंकर करते योग ।। साधु०
मन ही अन्दर सृष्टि व्यापी, मन ही में है रोग ।। साधु०
मन गोविंद मन गोरख रूपा, मन ही योग वियोग ।। साधु०
मन ही पानी मन ही अग्नि, मन ही आनन्द सोग ।। साधु०
मन ही गुरु है मन ही चेला, मन ही ब्रह्म संयोग ।। साधु०
मन ही का व्यवहार जगत में, नाहीं जाने लोग ।। साधु०

(०)

धारो टेक गुरु की मन में और टेक सब छोडो ।
जग दारुण से मुख को मोडो, गुरु से नाता जोडो ।।
गुरु का लिया सहारा जिसने, अपना काज बनाया ।
अपने साथ औरोंको तारा, यम का फंद कटाया ।।
बने तो गुरु से बने तुम्हारी, किसी की और न आसा ।
राधस्वामी दया करें जब, क्यों दुख पावे दासा ।।

(०)

मन मत चित नहीं ठानरी, गुरु मत अनुरागी ।। टेक ।।

नारी पुत्र के बंध बंधाना, हृदय सतगुरु ज्ञान री ।। गुरुमा
कहाँ से आया क्यों तू आया, करले कुछ अनुमान री ।। गुरुमा
सुमिरन भजन में कौन बसे घट, किसका अंतर ध्यान री ।। गुरुमा
बात बनाना छोड दे प्यारे, तज आपा अभिमान री ।। गुरुमा
लगन लगी नहीं राधास्वामी से, समझ तू चतुर सुजान री ।। गुरुमा

(०)

मन की दुर्गति टार री, मेरी सुरत अचेती ।। टेक ।।

करता बनकर काम करे नित, लेती दुख सुख भार री मेरी ।। सुरत
स्वारथ बस परलोक नसाया, नहीं परमारथ प्यार री मेरी ।। सुरत
चोर राख मन धन लुटवावे, करे न गुरु रखवार री मेरी ।। सुरत
भजन भाव में रहे अलसानी, टारे जान बेगार री मेरी ।। सुरत
राधास्वामी गुरुका दरस तत्काला, घट के नैन उघार री मेरी ।। सुरत

बुद्धि निश्चय आत्मक, तुझमें अभी आई नहीं ।
सोचने और समझने की, शक्ति तक पाई नहीं ।।१।।
सत है क्या और क्या असत है, नित है क्या और क्या अनित।
क्योंकि सतसंगत की इच्छा, की रुचि भाई नहीं ।।२।।
वारता गाना बजाना, यह कभी सतसंग नहीं ।
सत की संगत ही है सतसंग, और मेरे भाई नहीं ।।३।।
शब्द क्या है क्या है साखी, जानता है तो बता ।
शब्द साखी वास्तव में, दोहा चौपाई नहीं ।।४।।
साक्षी का रूप बनजा, शब्द घट के सुन सदा ।
तब तू जानेगा मरम यह, मरम दुखदाई नहीं ।।५।।
लाभ क्या संवाद से, और काम क्या बक्कास से ।
है वही भेदी जिसे, माया ने भरमाई नहीं ।।६।।
संत मत सिद्धांत का, कैसे पता पायेगा तू ।
जब कि घट में बैठ कर गुरु पद से लव लाई नहीं ।।७।।
शब्द तू है शब्द घट की, धुन है गुरु है शब्द रूप ।
सुरत साखी है समझ मन में, जो दुचिताई नहीं ।।८।।
कुछ दिनों सतसंग कर सतगुरु का कुछ दिन शब्द योग ।
राधास्वामी धाम को जा, जग यह स्थाई नहीं ।।९।।

(०)

मनुआ सोच समझ ले नाम ।। टेक ।।

सुमिरन ध्यान भजन गुरु सेवा, इनसे मिले विश्राम ।। मनुआ०
आलस छोड छोड कदराई, करले अपना काम ।। मनुआ०
चलते फिरते उठते बैठते, गुरु भज आठों याम ।। मनुआ०
घट में नित हो भजन बन्दगी, घट राधास्वामी धाम ।। मनुआ०
राधास्वामी तेरे साँचे रक्षक, उनके चरण को थाम ।। मनुआ०

बुद्धि जब तुमको मिली, मिलजुलकर रहना सीखलो ।
द्वेष तज कर प्रेम की, युक्ति का गहना सीख लो ।।१।।
भाईयों से बैर त्यागो, मित्रता का भाव लो ।
मुख से मीठे और मधुर, बचनों का कहना सीखलो ।।२।।
लडते लडते हो गये हो अब निबल, सोचो भी कुछ ।
यह दशा अच्छी नहीं, सुमति का लहना सीखलो ।।३।।
ऐसा हो व्यवहार, जिससे सुख मिले और शाँति ।
कौन कहता है कि दुख, सागर में बहना सीखलो ।।४।।
राधास्वामी जग में आये प्रेम का परिचय दिया ।
मेल का साधन हो, मिल जुल कर निबहना सीखलो ।।५।।

(०)

मनुआ तू चंचल चित दे त्याग ।। टेक ।।

कु बुद्धि कु करमी कुभाव कुकामी, कुटिल कुपन्थ कुभाग ।। मनुआ०
अशुभ कमाई करे दिन राती, अशुभ बासना लाग ।। मनुआ०
दुख भोगे आपति नित झेले, नहीं धारे अनुराग ।। मनुआ०
जैसी करनी वैसी भरनी, मोह नींद से जाग ।। मनुआ०
राधास्वामी गुरु की कर सतसंगत, जागे सोया भाग ।। मनुआ०

(०)

सब विधि है अंजान हम, प्रभु सतगुरु स्वामी ।। टेक ।।

समझ विवेक बुद्धि नहीं पाई, अपना रूप न जान हम ।। प्रभु०
तुम तो मात पिता संबधी, बाल अकार समान हम ।। प्रभु०
चंचल मूढ महा अज्ञानी, ग्रसित मोह मद मान हम ।। प्रभु०
अब तो आन पडे शरणागत, बने विवेकी सुजान हम ।। प्रभु०
राधास्वामी प्रेम शक्ति दो, पायें भक्ति का दान हम ।। प्रभु०

मनमत और गुरु मत

- रेणुका अग्रवाल

मनमत में गुरुमत रहे, मन मत है अहंकार ।
अहम भाव हृदय बसा, अपना किया अपकार ।।

दो दिन का रहना यहाँ, गुरु से करलो हेत ।
भव दारुण से तरण का, यही सुगम है सेत ।।

भूल भुलैय्याँ जगत है, भूले बहु विधि भूल ।
अंतकाल सिर सहेंगे, दुखदाई त्रिशूल ।।

भव सागर उमडे सदा, उठे लहर अपार ।
गुरु के साथ में मनुवा, सहज उतर जा पार ।।

राधास्वामी दीन हित दीन दयाल महान ।
कर उनका सतसंग नित, आनन्द का हो भान ।।

(०)

भाई गुरुमत मनमत में है भेद ।। टेक ।।

गुरुमत तो है सतगुरु का मत, मनमत मन मत भाई ।
अहम भाव की जड है एक में, दूजा अहम नसाई ।। भाई०
गुरु गम निरख परख पर चलना, गुरु मत के अनुसारा ।
मन मत चाल चले जो कोई, चित बाढे हंकारा ।। भाई०
माया काल करम की जड है अहं में, सतगुरु ने बतलाया ।
जो कोई इसके धोके में आया, जीता बाजी गँवाया ।। भाई०
राधास्वामी की गुरु मत बाणी, साधन साध के साधा ।
गुरु की दया सहारा पाया, मेटा सकल उपाधा ।। भाई०

(०)

क्या करना था क्या किया, करता धरता बन ।
कहाँ से कहाँ को ले गया, बहका कर यह मन ।।

शुक आया गुरु देव हो, सुनो परीक्षित बात ।
कर ले अपने काम को, नहीं यम करे उत्पात ।।

चलना है दस दिवस में, रहना नहीं है मीत ।
तजो न माया में उलझ कर, भक्ति भाव की रीत ।।

दरस परस मंजन करो, पियो प्रेम का नीर ।
राधास्वामी की दया, मन के बनो गंभीर ।।

मनुआ सोच समझ पग धरना ।। टेक ।।

चंचल मनुआ कहा न माने, क्या उपाय अब करना ।
गुरु के नाम का सुमिरन निस दिन, या विधि भव जल तरना ।।१।।
रोग सोग में आयु बीती, ठंडी सांस का भरना ।
गुरु के नाम से संकट भागे, क्यों नहीं नाम सुमिरना ।।२।।
सतगुरु तेरे सदा सहाई, यम के भय से डरना ।
राधास्वामी अंग संग जब, क्यों फिर दुख से मरना ।।३।।

(०)

गुरु के दर्शन के बिना, अब नींद तक आती नहीं ।
जग की वस्तु कोई भी, मन को मेरे भाती नहीं ।।१।।
आओ प्यारे देवो दर्शन, हूँ विकल मैं रात दिन ।
ताकती हूँ राह तेरी, छबि नजर आती नहीं ।।२।।
मैं तो तेरे शरण आई, तुम को मेरी लाज है ।
छोड कर तेरे चरण मैं, अब कहीं जाती नहीं ।।३।।
तेरा ही विश्वास है, और तेरी मुझको आस है ।
तू है साथी एक मेरा, और कोई साथी नहीं ।।४।।
मेट कर त्रय ताप चित को, मेरे कर दे आप शान्त ।
राधास्वामी भक्ति दीजे, शक्ति घबराती नहीं ।।५।।

(०)

जिनको चाह राम की साधु, राम उन्हे मिल जाते हैं ।
राम दास के पास राम हैं, और नहीं कोई पाते हैं ।।
वाद विवाद में राम नहीं है, राम न पूछा पेखी में ।
रामदास ने राम को पाया, सहज ही देखा देखी में ।।
राम नहीं तीरथ में रहते, राम बरत के साथ नहीं ।
रामदास के हाथ राम हैं, औरों के वह हाथ नहीं ।।
बुन्द में सिंधु सिंधु में बूँदें, बुन्द सिंधु दोऊ एक हुये ।
बुन्द सिंधु का झगडा मन में, उनके लिये अनेक हुये ।।
राधास्वामी सतगुरु आये, भेद दिया पूरा पूरा ।
जो कोई भेद भाव को मेटे, सतगुरु का सेवक सूरा ।।

मौज

- के. वेंकटेश्वरलु

आपके अर्पण है यह, मेरा नहीं तन आपका ।
ले लो चरणों में लगा लो, मेरा है मन आपका ॥१॥

मेरा तो कुछ भी नहीं है किसपे मैं ममता करूँ ।
आप ही का तन है मन है, और है धन आपका ॥२॥

मन की चंचलता से क्यों हो, दुख जो यह मेरा नहीं ।
योग युक्ति आप की है, और है साधन आप का ॥३॥

भूल थी मैंने जो समझा, मेरे ही है देह मन ।
अब तो यह सिर झुक रहा है, और चरण है आपका ॥४॥

राधास्वामी मौज की, अबतक न आई थी समझ ।
स्वामी पन है आपका, और दास पन है आपका ॥५॥

(०)

मौज के आधार रहना, मौज का लो आसरा ।
मौज की हो बात निस दिन, मौज में बरतो सदा ॥१॥

मीत है स्वामी तेरा, कोई नहीं है और मीत ।
शत्रु कोई है कहाँ, वह आप जब रक्षक हुआ ॥२॥

सुख में दुख में शाँति हो, चित की दुविधा मेट कर ।
शाँति में सुख है, दुचिताई में दुख और आपदा ॥३॥

मन वचन और कर्म से, चित के दुखाने से बचो ।
चित दुखाना ही है हिंसा, पाप यह सबसे बडा ॥४॥

अपने जैसों से हो मिलना, छोटों पर करुणा रहे ।
बचके चलना शत्रु से, और हो बडों से नम्रता ॥५॥

काम में मन को लगाओ, मिथ्या बातें छोडकर ।
काम में जो रहते हैं, उनको नहीं वह व्यापता ॥६॥

राधास्वामी ने बताया, प्रेम के रसते चलो ।
नाव नद संजोग है, बिछडेगा जो आकर मिला ॥७॥

मौज से जो होने वाला है, वह होगा आपसे ।
लाभ कुछ होता नहीं, चिंता के तोल और नाप से ॥१॥
हम न आये इस जगत में, आप जाते भी नहीं ।
मौज जब लाई वह ले जायगी, आकर आपसे ॥२॥
नाम जो जपते हैं उनका, काम होता है सदा ।
किसको मिलता है यहाँ कुछ, माल धन के जाप से ॥३॥
अपनी करनी आप भरनी, और का क्या आसरा ।
काम कमब किसका बना, भाई से और माँ बाप से ॥४॥
राधास्वामी नाम का, सुमिरन हो उठते बैठते ।
नाम छुटकारा दिलायेगा, भरम से और पाप से ॥५॥

(०)

राधास्वामी की मौज रहूँ चित धार ॥ टेक ॥

जो कुछ होगा मौज से होगा, मौज विरुद्ध न करना ।
मौज में सदा भलाई सबकी, क्यों चिंता कर मरना ॥ राधास्वामी०
बलि को इन्द्रासन की इच्छा, यज्ञ विधान रचाया ।
मौज से वामन रूप प्रगट भया, तुरत पताल पठाया ॥ राधास्वामी०
दशरथ राम तिलक को चाहै, करे उपाय घनेरी ।
मौज उसे बनवासी बनावे, कथा ऐसी बहुतेरी ॥ राधास्वामी०
दुर्योधन धन धाम का भूका, पांडव धोका दीन्हा ।
मौज हुई महाभारत ठन गई, कुल कलंक सिर लीना ॥ राधास्वामी०
यह सब हैं इतिहास पुराने, सोच समझ मन आया ।
राधास्वामी दया से मौज पिछानी, मौज से चित्त लगाया ॥ राधा०

(०)

मौज से होगा सारा काम ॥ टेक ॥

तू क्या सोचे क्या मन ठाने, सोच समझ बेकाम ॥ मौज०
प्रीति दृढा प्रतीत बढाये, भज गुरु आठों याम ॥ मौज०
सुख दुख भूल भरम की लीला, भरमें नहीं बिसराम ॥ मौज०
जग की चाह महा उत्पाती, भज ले गुरु का नाम ॥ मौज०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, गुरु ने बख्शा अचल मुकाम ॥मौज०

देख चिंता नाम की कर, और सब चिंता बिसार ।
तुझको गुरु से प्यार है तो गुरु को होगा तुझसे प्यार ।।१।।
ध्यान कर सुमिरन भजन में, गुरु की मूरत का सदा ।
शान्त हो निर्भ्रान्त हो, निरद्वन्द हो कर कर संभार ।।२।।
करता धरता तू नहीं है, करता धरता और है ।
मौज में रह मौज ही से, आप ही होगा सुधार ।।३।।
राधास्वामी की दया से, मिल गई गुरु की शरण ।
हो के शरणागत जुये में, मन में अपने को न हार ।।३।।

(०)

जिनको गुरु से प्रेम है, वह मौज के आधार हैं ।
उनके बेडे भव के सागर से, सहज में पार हैं ।।१।।
थिर वचन मन थिर सुरत थिर, मन को अपने थिर करो ।
नाम फिर सतगुरु का स्थिरताई से, घट में तुम जपो ।।२।।
बंद मुँह हो कान और, आँखों को अपने करलो बंद ।
नाम लो इस रीत से, घट में प्रगटे सूर चन्द्र ।।३।।
किसकी इच्छआ है तुम्हें, इच्छा ही यम की फाँस है ।
जब नहीं इच्छा रही, दुख और भरम का नास है ।।४।।
राधास्वामी गाइये, और राधास्वामी ध्याइये ।
राधास्वामी नाम ले ले, राधास्वामी पाइये ।।५।।

(०) विश्वास और शाँति

जाके मन विश्वास है, सो है मन का धीर ।
शाँत चित्त निर्भ्रान्त भया, आनन्द हर्ष शरीर ।।१।।
अनहोनी होनी नहीं, होनी होय सो होय ।
होनी अनहोनी दोउ, टार सके नहिं कोय ।।२।।
दाता मौज की परख नहीं, मौज अगाध की बात ।
कै जाने सेवक कोई, कै जाने कोई साध ।।३।।
मौज भरोसे साध जन, मौज का धर विश्वास ।
मौज अधीन बसे सदा, धार गुरु की आस ।।४।।
राधास्वामी मौज में, रहूँ मगन मन माँह ।
क्यों मन अब चंचल बने, गुरुने पकडी बाँह ।।५।।

भावी अटल अपार है, कोई समझे ज्ञानी ।। टेक ।।

समझे ज्ञानी ज्ञान से, नहीं बुद्धि लडावे ।
तर्क कुतर्क निवार के, क्यों साख बढावे ।।१।।

भावी बस श्रीराम, हिरन को मार गिराया ।
रावण से अनबन हुई, बहु युद्ध मचाया ।।२।।

धर्मराज की बुद्धि को, भावी ने बिगाडा ।
बन बन डोलत फिरे, बजा भारत का नगाडा ।।३।।

भावी बस श्रीकृष्ण ने अपना कुल मारा ।
भावी बस नर का छुटे, सब बुद्धि विचारा ।।४।।

दुर्योधन की आँख में पडी भर्म की धूरी ।
आसा तृष्णा राज की, कर सका न पूरी ।।५।।

होनहार होकर रहे, यह निज कर जानी ।
भावी अटल अपार है, कोई समझे ज्ञानी ।।६।।

(०)

तुम आस करो विश्वास करो, गुरु बेडा पार करेंगे जी ।
दृढ निश्चय रहे मन में सदा, सच्चा उद्धार करेंगे जी ।।
जो शरण में उनके आया है, भक्ति के दान को पाया है ।
गुरु सुमिरन चित्त बसाया है, वह उसका सुधार करेंगे जी ।।
मन में सच्ची प्रतीति रहे, गुरु चरण कमल में प्रीति रहे ।
और प्रेम प्रभाव की रीति रहे, सच्चा उपकार करेंगे जी ।।
बिन गुरु नहीं कर्म न ज्ञान मिले, गुरु बिन नहीं ज्ञान अनुमान मिले ।
नहीं शब्द न साखी प्रमाण मिले, वही विचार करेंगे जी ।।
राधास्वामी भजो राधास्वामी जपो, राधास्वामी सुमिरो राधास्वामी कहो।
राधास्वामी सुनो राधास्वामी कहो, राधास्वामी संभाल करेंगे जी ।।

तेरी दया का दृढ विश्वास हुआ ।
चरणों में पडा निज दास हुआ ।।टेक।।

करूँ बिनती दोऊ कर जोरी, अरज सुनो राधास्वामी मोरी ।
संसार से सहज उदास हुआ ।। तेरी दया०
सत्त पुरुष तुम सतगुरु दाता, सब जीवन के पितु और माता ।
ढारस बाँधी घट में उजास हुआ ।। तेरी दया०
दया धार अपना कर लीजे, काल जाल से न्यारा कीजे ।
तब समझूँगा माया का नास हुआ ।। तेरी दया०
सतयुग त्रेता द्वापर बीता, काहु न जानी शब्द की रीता ।
सब में अज्ञान का बास हुआ ।। तेरी दया०
कलयुग में स्वामी दया विचारी, प्रगट कर के शब्द पुकारी ।
विद्या सत ज्ञान का भास हुआ ।। तेरी दया०
जीव काज स्वामी जग में आये, भव सागर से पार लगाये ।
तब दुखी जीव सुख रास हुआ ।। तेरी दया०
तीन छोड चौथा पद दीन्हा, सत्तनाम सत गुरु गति चीन्हा ।
अनुभव का आप विकास हुआ ।। तेरी दया०
जगमग जोत होत उजियारा, गगन सोत पर चन्द्र निहारा ।
घट ब्रह्मरेन्द्र कैलास हुआ ।। तेरी दया०
स्वेत सिंहासन छत्र बिराजे, अनहद शब्द गैब धुन गाजे ।
हिया उमगा हर्ष हुलास हुआ ।। तेरी दया०
क्षर अक्षर निह अक्षर पारा, बिनती करे जहाँ दास तुम्हारा ।
पृथवी छूटी गुजर आकाश हुआ ।। तेरी दया०
लोक अलोक पाऊँ सुख धामा, चरण शरण दीजे विश्रामा ।
राधास्वामी चरण निवास हुआ ।। तेरी दया०

जब गुरु की दया की आस नहीं, तुझमें भक्ति विश्वास नहीं ।
जिसने परिचय पाया गुरु का, वह आस से कभी निरास नहीं ।।१।।
गुरु तेरे पितु और माता हैं, गुरु करता धरता विधाता हैं ।
गुरु संबंधी और भ्राता हैं, क्या पल छिन तेरे पास नहीं ।।२।।
घट तेरा गुरु का धाम बना, घट सुमिरन आठों जाम बना ।
गुरु नाम से निज बिसराम बना, गुरु काशी नहीं कैलाश नहीं ।।३।।
भज नाम गुरु का नित प्रतिक्षण, कर गुरु का सुमिरन रात और दिन।
ले जग जस कीर्ति को गिन गिन, गुरु तुझमें, भूमि आकाश नहीं ।।४।।
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी ।
राधास्वामी राधास्वामी, जो नहीं भजता दास नहीं ।।५।।

(०)

शान्ती सच्ची सदा, गुरु नाम के सुमिरन में है ।
आप जानोगे कि दुख सुख, खेल सारा मन में है ।।१।।
अपने आप में रहो, चित की रहे रोक थाम ।
शान्ती उसको कहाँ, दिन रात जो अन बन में है ।।२।।
वस्तु है घर में तुम्हारे, खोज घर ही में करो ।
शान्ती की वस्तु घट के, अपने ही बरतन में है ।।३।।
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी नाम लो ।
नाम का विश्राम प्यारे, शब्द के श्रवण में है ।।४।।

(०)

सच्ची बनकर रात दिन तुम सतगुरु का नाम लो ।
शील लो संतोष लो, संसार में धन दाम लो ।।१।।
मन में जब विश्वास हो, दुर्लभ नहीं फिर कोई वस्तु ।
धर्म लो तुम अर्थ लो, मोक्ष लो सत काम लो ।।२।।
इसके सुमिरन से कटेंगे, फन्द माया जाल के ।
मन की सब खटपट मिटे, और उसकी विरती थाम लो ।।३।।
उठते बैठते चलते फिरते, जागते सोते हुए ।
खाते पीते नाम लो, और नाम आठों याम लो ।।४।।
जीते जी यश कीरती लो, भक्ति के मार्ग में आप ।
तन छुटे पीछे सहज में, राधास्वामी धाम लो ।।५।।

शील

- पूज्य शीला जी अग्रवाल

ऐ शीलवंत स्वामी, करदो मुझे सुशीला ।
वौहार में कुशल हो, मैं देखूँ उसकी लीला ।।१।।
है ज्ञान संग मेरे, रहता है तन में व्यापा ।
मैं तुम से पूछती हूँ, क्या मेरा है यह आपा ।।२।।
उत्तम है ज्ञान इसमें, संदेह कुछ नहीं अब ।
अनुभव बढे जो मन का, संश. रहित हूँ मैं तब ।।३।।
सत चित है रूप मेरा, सत देह ज्ञान मन है ।
आनन्द आत्मा है, आनन्द की लगन है ।।४।।
आनन्द मेल से हो, सुलझा दो आके उलझन ।
गुत्थी यह मेरी सुलझे, सुख चैन पाऊँ ततछिन ।।५।।
अज्ञान से भरम से, संशय से मैं दुखी हूँ ।
ऐसी दया हो स्वामी, दुख दूर हों सुखी हूँ ।।६।।
गुरु पूरे राधास्वामी, आई शरण तुम्हारे ।
रख लीजो लाज मेरी, बिनती यही है प्यारे ।।७।।

(०)

सजनी शील क्षमा चित धार ।।टेक।।

जग में आई नर्तन पाया, अवसर मिला अपार ।
सुमिरन भजन ध्यान गुरु करले, जा भव जल के पार ।।सजनी०
प्रेम प्रीति के मारग पग धर, सबसे प्रेम प्यार ।
तू तो तरी चरण लग गुरु के, तार दे कुल परिवार ।।सजनी०
मीठे वचन बोल नित मुख से, मन रहे बुद्धि विचार ।
दृष्टि हो तिल के तिलपट में, साध परमारथ सार ।।सजनी०
गुरु का नाम न भूले चित से, आठ पहर हुशियार ।
परमारथ का गुर है प्यारी, ऐसा कर व्यवहार ।। सजनी०
आनन्द सुख का जीवन जैसा, दुख न हिये में धार ।
राधस्वामी दया संभल कर रहना, द्वेश भव को टार ।। सजनी०

मेरे अवगुणों की करो तुम न गिनती ।
सुनो कर के करुणा मेरे मन की बिनती ।।१।।
दया रूप हो तुम दया दृष्टि कीजे ।
मेरी भवानाओं की शुभ सृष्टि कीजे ।।२।।
कमल पद की अपने मुझे छांह दीजे ।
मेरी बाँह में अपनी अब बाँह दीजे ।।३।।
तुम ही मेरे दाता तुमही मेरे स्वामी ।
तुम्हारे चरण में नमामी नमामी ।।४।।
बनादो मुझे तुम दया से सुशीला ।
सदा देखूँ संतोष भक्ति की लीला ।।५।।
सदा सर्वदा मन में सुमिरन भजन हो ।
तुम्हारी दया बाणी का नित कथन हो ।।६।।
दया सिंधु हो राधास्वामी दयाला ।
करो दीन दुखियों का अब प्रतिपाला ।।७।।

(०)

सबसे उत्तम शील धन, जाने कोई सुशील ।
और सकल निरधन यहाँ, शील बिना सब भील ।।१।।
नम्र भाव चित में बसे, प्रेम हिये में व्याप ।
नर सुशील के तन बदन, साहब बसता आप ।।२।।
साहब शील महान है, शीलवन्त है दास ।
शील का धन जब मिल गया, दास न रहे उदास ।।३।।
बडा पदारथ शील है, शील क्षमा का रूप ।
जिसमें शील क्षमा नहीं, बूडे भव जल कूप ।।४।।
शील ज्ञान दोऊ एक है, मन में रहे विचार ।
राधास्वामी की दया, भव से बेडा पार ।।५।।

प्रेम

- रेखा अग्रवाल

राधस्वामी आये जग में, सन्त का अवतार धार ।
शब्द मत सिखलाके, जीवों का किया सच्चा सुधार ।।१।।
दुर्मती को त्याग दो, द्वेष ईर्षा अच्छी नहीं ।
मन में हो परतीत प्रीत, और प्रेम भक्ति से हो प्यार ।।२।।
साम दाम और भेद से, और दंड से निकला न काम ।
प्रेम के मारग में आओ, प्रेम का करके विचार ।।३।।
प्रेम में शक्ति है रहती, द्वेष में है निबलता ।
प्रेम का बल लेके अब, होजाओ भवसार से पार ।।४।।
राधास्वामी योग सीखो, राधास्वामी योग साध ।
योग का संयोग हो, इसका करो निस दिन प्रचार ।।५।।

(०)

प्रेम की महिमा कहे कौन, यह है अकथ कहानी ।। टेक ।।
प्रीतम प्रेम एक रूप दोउ, अंतर भेद न जानो ।
शबरी राम की कथा बाँचलो, दोनों एक पिछानो ।। यह है०
झूँठे बेर स्वाद ले खाये, ऋषि मुनि घर नहीं आये ।
मोहे देख भीलनी की गति, शबरी के प्रेम रिझाये ।। यह है०
धृतराष्ट्र की सभा को त्यागा, बिदुर के घर चल आये ।
कृष्ण प्रेम रस भाव के भूके, साग अलोना खाये ।। यह है०
धर्मराज की सभा में लाखों, ऋषि मुनि ज्ञानी ध्यानी ।
आये स्वपच बिना नहीं बाजा घंटा, सब कोई जानी ।। यह है०
राधास्वामी दीन दयाला, प्रेम की रीति चलाई ।
जो कोई चरण शरण में आये, प्रेम पदारथ पाई ।। यह है०

(०)

प्रेम अधिक सुख दाई साधु, प्रेम अधिक सुख दाई ।। टेक ।।
काम क्रोध मद मोह शोक सब, तज दे छल चतुराई ।। साधु०
करम धरम का काट दे बंधन, गुरु पद प्रेम जगाई ।। साधु०
माया काल करे नहीं हानी, गुरु संगत जब पाई ।। साधु०
धन सम्पत सुख दाम बडाई, अन्त काम नहीं आई ।। साधु०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, सतगुरु अलख लखाई ।। साधु०

प्रेम औषधि ईर्षा, और द्वेष मन के रोग हैं ।
रोग जब हों दुख विपत आपत कलेस और सोग है ।।१।।
सब हैं उसके वह है सबका, उससे न्यारा कौन है ।
भूल में कैसे पडे, भरमे हुये सब लोग हैं ।।२।।
फूट का फल दुख है, दुख में सत का जीवन कहां ।
संग सतका फल चखो, इस ही में सुख के भोग हैं ।।३।।
राधास्वामी ने दिखाया, प्रेम का रस्ता हमें ।
प्रेम में सुख शान्ती, आनन्द के संजोग हैं ।।४।।

(०)

प्रेम दुख संकट नहीं है, प्रेम के मारग में आ ।
प्रेम का रस्ता सुगम है, प्रेम का ले आसरा ।।१।।
प्रेम सुख आनन्द है, और प्रेम में है शान्ती ।
यह समझले अपने मन में अपने, यह नहीं दुख आपदा ।।२।।
सोना अग्नी में पडा उसको सुहागा जब मिला ।
चमका दमका मैला सोना, तप से फिर कुन्दन बना ।।३।।
सोच अपने मन में प्रेम और प्रीति के व्यौहार को ।
प्रेम में परतीत में, भक्ति में दे मन को लगा ।।४।।
प्रेम का प्याला पिया, जिसने वही मतवाला है ।
राधास्वामी प्रेम मत है, समझा जो ज्ञानी हुआ ।।५।।

(०)

प्रेम का कर सत्कार री, मेरी सुरत सुशीला ।।टेक।।
प्रेम है भूषण सुन्दर वस्तर, प्रेम का कर सिंगार री मेरी ।। सुरत०
प्रेम ही मूल तत्व है प्यारी, प्रेम का कर व्यौहार री मेरी ।। सुरत०
प्रेम प्रेम कर प्रेम को चित दे, प्रेम का पंथ संवार री मेरी ।। सुरत०
प्रेम योग है प्रेम है भक्ति, प्रेम का आसन मार री मेरी ।। सुरत०
प्रेम ज्ञान का सच्चा साथी, प्रेम विवेक विचार री मेरी ।। सुरत०
प्रेम की हाट में प्रेम का सौदा, प्रेम बनिज व्यौपार री मेरी ।। सुरत०
राधास्वामी प्रेम रूप धर आये, परम संत औतार री मेरी ।। सुरत०

मौन

क्या है तू और कौन है तू, किसको आई यह समझ ।
चुप हुआ चुप हो के बैठा, मुझको भाई यह समझ ।।१।।
कोई कहता है सगुण, निर्गुण बताता है कोई ।
किसने तेरे समझने की, कब है पाई यह समझ ।।२।।
तू नहीं है बंध मुक्ति, जोग जुक्ति तू नहीं ।
भेद पाये कोई क्योंकर, मुंह की खाई यह समझ ।।३।।
सब है और कुछ भी नहीं है, है नहीं के बीच में ।
अन्त में यह बात सूझी, रंग लाई यह समझ ।।४।।
राधास्वामी ने कहा बन्द आँख कान और होंठ कर ।
मैंने जब ऐसा किया, तब तेरी आई यह समझ ।।५।।

(०)

चुप रहने का फल है मीठा, बोले वाद विवादा ।
चुप का स्वाद रसीला अद्भुत, बोले मचे उपाधा ।।
कान है दो और एक जीभ है, देखलो अपनी आँखों ।
जब दो बार सुने कोई बाणी, एक बार मुख भाखो ।।
बोली बोले सहे दुख प्राणी, बिन बोले निरबाणी ।
तोता मैना बोलके बोली, पिंजरे बंध बंधानी ।।
बिन बोले कोई मुक्ति न माँगे, नहीं प्रमाण मत भेदा ।
एक चुप लाख विपत्त को टारे, मिटे दुख भव खेदा ।।
मुख की थैली जिभ्या राखूँ, बिन कारण क्या बोलूँ ।
बिना प्रयोजन कथन है निष्फल, क्यों मुख अपना खोलूँ ।।
जो बोले सो हारे भाई, जीते जो मुख नहीं बोले ।
सोच समझ मोल विचारे, बात हिये बीच तोले ।।
जो सुमिरे सो चिंतन साधे, सुमिरन ध्यान का मूला ।
सुमिरन विधि राधास्वामी नाम है, और बोल भव सूला ।।

गुरु हुये संसार में प्रगट, गुरु से ज्ञान लो ।
छोड दो पाखंड को, गुरुमत की महिमा जान लो ॥१॥
गुरु है ब्रह्मा गुरु है विष्णु, गुरु ही शिव के रूप हैं ।
ब्रह्मा गुरु परब्रह्म गुरु हैं, गुरु को सब कुछ मान लो ॥२॥
ज्ञान है आधार गुरु के, भक्ति गुरु के आसरे ।
गुरु के सनमुख जाके तुम, सतगुरु से नाम का दान लो ॥३॥
आया शुभ अवसर न इस, अवसर को छोडो हाथ से ।
गुरु से मिलकर जीते जी, कैवल्य पद निर्वाण लो ॥४॥
राधास्वामी दया से, गुरु आई अब समझ ।
जनम को करलो सुफल, निज रुप को पहचान लो ॥५॥

(०)

प्यार कर सबसे भरम की द्वेष दृष्टि त्याग कर ।
रूप है यह जगत तेरा, इससे तू अनुराग कर ॥१॥
तू यहाँ है तू वहाँ है, लोक में परलोक में ।
किस जगह जायेगा इस, रचना से कहदे भाग कर ॥२॥
'नेति' क्यों कहता है, 'एति' भाव को चित दे सदा ।
'नेति' है वैराग, 'एति' भाव से अनुराग कर ॥३॥
'नेति' 'एति' दोनों कल्पित, इनका तू स्थान है ।
त्यागना हो त्याग दोनों मोह नींद से जागकर ॥४॥
राधास्वामी संत सतगुरु, के वचन सुन प्रेम से ।
पग कमल में सिर झुका भक्ति अटल बर माँग कर ॥५॥

(०)

नाम सुमिर तरजाना, भवनिधि नाम सुमिर तर जाना ॥टेक॥
भव सागर विपत की खानी, व्याप रहा दुख नाना ॥ भवनिधि०
पार जो चाहो इस के जाना नाम का सेत बनाना ॥ भवनिधि०
नाम ही योग भक्ति का सारा, साधन सुगम सुहाना ॥ भवनिधि०
सुमिरन सहज सहज है जपना, नाम से लव को लगाना ॥ भवनिधि०
राधास्वामी गुरु ने भेद बताया, नाम की भक्ति कमाना ॥ भवनिधि०

विद्या बुद्धि विवेक की, चरण कमल में खान ।
दया मेहर गुरु कीजिये, दीजे शुभ मति ज्ञान ।।१।।
प्रेम भक्ति सद्गति सुगति, सब तुम्हरे आधीन ।
दया दृष्टि गुरु कीजिये, चरण पडा जन दीन ।।२।
खटक खटक सालत रहे, दुख दारुण उर सूल ।
अपनी दया से काटिये, भव कलेश का मूल ।।३।।
चंदम के ढिंग आय के, सुधरे नीम पलास ।
मैं आया तुम शरण में कीजे अपना दास ।।४।।
चरण ओट में राखिये, शरणागत पहचान ।
राधास्वामी सतगुरु, दीजिये भक्ति ज्ञान ।।५।।

(०)

ज्ञान

ज्ञान दीजे ज्ञान दाता, ज्ञान के भंडार से ।
सहज छुटकारा मिले सबको, कठीन संसार से ।।१।।
कहने को तो बंध मुक्ति, कल्पना मन की सही ।
बिन दया सतगुरु के वह, मिटते नहीं है जीते जी ।।२।।
नाम का दे आसरा, चरणों में अपने लीजिये ।
शब्द की महिमा बता कर अपना सेवक कीजिये ।।३।।
सच्चिदानन्दम अखण्डम केवलम, निज रूप हो ।
निज दया से जाय दुख दाई, महा भव कूप खो ।।४।।
आपका है आसरा, और आपका विश्वास है ।
राधास्वामी तारिये, यह भी तुम्हारा दास है ।।५।।

(०)

सुरत प्यारी सुन सतगुरु का ज्ञान ।। टेक ।।
माया में ब्रह्म, ब्रह्म में माया दोनों एक समान ।। सुरत०
नहीं बलवान से बल है न्यारा, बल ही में बलवान ।। सुरत०
एक में भया अनेक में धोका, धोके धोक रहान ।। सुरत०
बीज में फूल पात फल लीला, समझे साध सुजान ।। सुरत०
राधास्वामी घटका भेद बतावें, घट है सब की खान ।। सुरत०

सुमिरन ध्यान और भजन

- पूज्य के. विट्ठलराव जी

सत्त नाम है सुमिरन सार । सुमिरन सहज योग व्यौहार ॥
जेहि विधि कामी सुमिरे नार । तैसा हो आदर्श का प्यार ॥
जैसे लोभी संयम दाम । तैसे ही व्यापे सत नाम ॥
घट पर घट सिर धर पनिहारी । डोले हिले चले पग धारी ॥
सुरत रहे घट माँह पिरोई । सुमिरन की गति ऐसी होई ॥
सुमिरन सहज विचार है, सुमिरन सहज है योग ।
जो ऐसा सुमिरन करे, व्यापे नहीं वियोग ॥

(०)

सुमिर मधुर गुरु नाम, साधु सुमिर मधुर गुरु नाम ॥ टेक ॥
तीन लोक सब काल पसारा, चौथे पद विसराम ॥ साधु०
भूल चूक में भरमें प्राणी, भोगे नरक निकाम ॥ साधु०
धन संपत और कुल परिवारा, सरे न इनसे काम ॥ साधु०
श्री गुरु पद में ध्यान लगाओ, भक्ति करो निष्काम ॥ साधु०
छिन छिन अवध घटत निस बासर, त्यागो लोभ मद काम ॥ साधु०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, जाओ धुरपद धाम ॥ साधु०

(०)

सुमिरन करो तो जीभ बन्द हो, शब्द सुनो तब कान ।
मन को बस करने की विधि, गुरु स्वरूप का ध्यान ॥
आँख से निरखो गुरु स्वरूप को, अन्तर घट में आन ।
धीरे धीरे काम बनाओ, गुरु महिमा को जान ॥
तीन बन्द जब लग नहीं लागें, कैसे मिले ठिकान ।
इन्द्री मन का शम दम साधन, समझ के करो विधान ॥
निरख परख अपनी हो निस दिन, अपने रूप की हो पहचान ।
समय न खोना भरम न फँसना, ममता में है सबकी खान ॥
सुरत शब्द की रहे कमाई, साधु संत को मन से मान ।
राधास्वामी की कृपा से मिलेगा एक दिन सच्चा ज्ञान ॥

(०)

ध्यान में चित को लगा, बातें बनाना छोड दे ।
भरम और अज्ञान के रसते में आना छोड दे ।।१।।
सीस पर जब सतगुरु ने हाथ, तेरे, रख दिया ।
मन में कर विश्वास, और धोके में आना छोड दे ।।२।।
काम वह आपही करेगा, और करायेगा वही ।
आस कर सतगुरु की और भव भय का खाना छोड दे ।।३।।
चित हो चरणों में गुरु के, मन हो उसके ध्यान में ।
मोह और माया का मन में, ध्यान लाना छोड दे ।।४।।
राधास्वामी नित जपा कर, जाप अजपा जाप हो ।
है यही करतब इसे कर, और बहाना छोड दे ।।५।।

(०)

करो चित देकर शब्द अभ्यास ।। टेक ।।

सुमिरन भजन ध्यान हो प्रति दिन, मन में धर विश्वास ।। करो०
गुरु का नाम रहे अन्तर घट, जाप हो साँसो साँस ।। करो०
मन चंचल की दुविधा मेटो, हिया जाय हर्ष हुलास ।। करो०
यहि विधि कुछ दिन करो कमाई, गुरु है अंग संग पास ।। करो०
राधास्वामी की दया से, दुख नहीं पावे दास ।। करो०

(०)

क्या कहूँ सुमिरन नियम, संजम है सुमिरन योग है ।
धारना है ध्यान सुख, आनन्द मंगल भोग है ।।१।।
ज्ञान का फाटक है सुमिरन, ज्ञान का वह धाम है ।
भाग वाला है जिसे, सुमिरन से कुछ संजोग है ।।२।।
सुख की चाहत हो, करो सुमिरन कि दुख संकट हटे ।
औषधि इसकी करो, तुमको जो भव का रोग है ।।३।।
इससे बढ़कर कुछ नहीं, वृत्ती में जो दृढ़ता रहे ।
लौ लगे गुरु चरणन में, अन्तर जो मन में सोग है ।।४।।
राधास्वामी नाम का सुमिरन हो, सोते जागते ।
इसकी महिमा से यहाँ, अंजान सारा लोग है ।।५।।

साधन और भजन

- पूज्य रामनाथम् जी

जिसके साधन से मिले, सत नाम धन वह जोग है ।
नाम से समता न आवे, मन में तब वह रोग है ।।१।।
नाम क्या है सुनलो तुम, है नाम गुरु के आसरे ।
पोथियों का नाम दुख, चिंता विपत का सोग है ।।२।।
जब सतगुरु के हुआ सतसंग से, कुछ तुमको लाभ ।
यह समझ लो भाग सोया, जागा सुख संजोग है ।।३।।
नाम लो तब गुरु से, अन्तर में चढ़ो युक्ति से आप ।
नाम सच्चा हर्ष और आनन्द, सुख का भोग है ।।४।।
दुख छुटे भव भय मिटे, राधास्वामी के सतसंग से ।
इसकी महिमा से यहाँ, अजान सारा लोग है ।।५।।

(०)

साधन की प्रभुताई, मन साधे साध कहाई ।। टेक ।।

मन साधे तो सब सधे, बिन साधे नहीं साध ।
साध कहावन कठिन है, साध का मता अगाध ।। साधन०
आँख कान मुख बंद कर, सुन अनहद धुन तान ।
तीन बन्द जब घट लगें, तब प्रगटे सत ज्ञान ।। साधन०
जो साधन सम्पन्न नहीं, नहीं अनुभव संपन्न ।
बिन अनुभव सम्पन्नता, नहीं सतगुरु प्रसन्न ।। साधन०
साधन की सम्पन्नता, हो अनुभव सम्पन्न ।
जो अनुभव सम्पन्न है, सो सतगुरु प्रसन्न ।। साधन०
राधास्वामी दीन हित, दीनानाथ दयाल ।
दया रूप धर कह गये, बाणी सरस रसाल ।। साधन०

(०)

साधु साधन सहज करीजे ।। टेक ।।

बिन साधन कुछ हाथ न आवे, साधन मरम सुनी जे ।। साधु०
जग व्यौहार न हो बिन साधन, परमारथ न बनीजे ।। साधु०
संस्कार और कर्म की लीला, फल के रूप पतीजे ।। साधु०
जैसी करनी वैसी भरनी, करनी सहित भरीजे ।। साधु०

कथनी बदनी काम न आवे, करनी को चित दीजे ।। साधु०
माना रूप प्राप्त है अपना, भरम प्रभाव भुलीजेन ।। साधु०
बिन साधन यह भरम न जावे, साधन भरम मिटीजे ।। साधु०
साधन सहज है शब्द योग का, उसकी रीति सिखीजे ।। साधु०
मन का मैल विकार मिटेट जब तब निज रूप लखीजे ।। साधु०
सहज ही सहज कमाई करना, भव जल पार चलीजे ।। साधु०
राधास्वामी की दया से, कारज सुफल करीजे ।। साधु०

(०)

साधन तो गुरु नाम है, और काम बेकाम ।
साधन ही से पाइये, सतजीवन सत धाम ।।१।।
साधन सुगम सुहेल है, जो कोई जाने साध ।
साधु जो साधन करे, बिन साधन जग व्याध ।।२।।
साधन कीजे शब्द का, कान आँख मुख बन्द ।
शब्द योग के जतन से, कटे द्वन्द का फंद ।।३।।
बाहर घट में नन्दुआ, अन्तर के पट खोल ।
साधन कर नित शब्द का, मुख से कुछ न बोल ।।४।।
यह तो उत्तम योग है, और योग है रोग ।
शब्द योग योगी बने, और योग सब सोग ।।५।।
योग यतन से पाइये, साहब का दीदार ।
बिन यतन नहीं कुछ बने परमारथ व्यौहार ।।६।।
नाम तेरे अंतर बसे, ता संग धार प्यार ।
कान आँख मुह बन्द कर, सुन अनहद गुँजार ।।७।।
और यतन सब कठिन है, शब्द यतन है सहल ।
यह तो फल तत्काल है, और यतन निष्फल ।।८।।

(०)

निष्फल सब धन्धा भजन बिना ।। टेक ।।
जप तप क्रिया करम धरम से, कटे न फंदा भजन बिना ।। निष्फल०
ज्ञान ध्यान से काम न निकले, डोले रन अन्धा भजन बिना ।। निष्फल०
जो कोई पोथी पत्रा सोधे, बन्धे का बन्धा भजन बिना ।। निष्फल०
राधास्वामी प्रीति न मन में उपजी, सुमति का मन्दा भजन बिना ।। निष्फल०

मेरी बीती उमरिया भजन बिना ।। टेक ।।

पन्थ में आय बने पन्थाई, सूझी न डगरियाय भजन बिना ।। मेरी०
भक्ति का सौदा नहीं कीना, बन्द बजरिया भजन बिना ।। मेरी०
मन हुआ टूक करेजा फाटे, माया की नजरिया भजन बिना ।। मेरी०
अबहूँ सोच समझ अज्ञानी, जा गुरु की सेजरिया भजन बिना ।। मेरी०
राधास्वामी चरण की ओट पकड़ले, नाम बिसरिया भजन बिना ।। मेरी०

(०)

भजन बिना अवसर बीता जात ।। टेक ।।

नर देही की सार न जानी, चित नहीं गुरु बसात ।। भजन०
सुख निद्रा में रात गवाँई, दिवस गँवाया खात ।। भजन०
देखत देखत बिनसेंगे सब, ज्यों तारा परभात ।। भजन०
अवसर पाये न चेते प्राणी, अन्त सहे यम लात ।। भजन०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, गुरु यह भेद बतात ।। भजन०

(०)

साध ले तन मन को अपने, मन से कर ले यह यतन ।
सुरत को थिर कर मिलेगा, तुझको परमारथ का धन ।।१।।
करनी में चित को लगादे, बातें कहना छोड़ दे ।
यह तो है करनी का साधन, तू लगा दे इस में मन ।।२।।
थिर हो आसन थिर हो बाणी, थिर हो चित तेरा सदा ।
आयेगी स्थिरता लगेगी, आप फिर सच्ची लगन ।।३।।
प्रेम और भक्ति के मारग में, है मुख्यता प्रेम की ।
प्रेम का श्रवण मनन हो, प्रेम ही का हो कथन ।।४।।
राधास्वामी नाम ले और नाम आठों याम ले ।
नाम का हो ध्यान सुमिरन, नाम ही का हो भजन ।।५।।

(०)

गुरु के नाते सब का नाता, नाता और न मानूं ।
मेरा प्रीतम जिसे प्यारा, प्यारा उसको जानूं ।।
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाऊँ ।
राधास्वामी नाम का सुमिरन, सुमिरूँ और सुमिराऊँ ।।

शब्द

गुरु कीजे मेरी सहाय, शब्द में चित मेरा लागे ।।टेक।।
मेरी सोई सुरत अचेत शब्द सुन घट में जागे ।।
तुम दाता दीन दयाला, सुनिये मेरी बिनती ।
मैं भूला चूका हाय, न इनकी कीजे गिनती ।। गुरु०
व्यापे क्यों मद मोह, हुये जब सतगुरु रक्षक ।
यम काल का भय, मिट जाये यह दोनों विष धर तक्षक ।। गुरु०
राधास्वामी करुणा सिंधु, आस करो मेरी पूरी ।
लो चरण शरण में आप, न हो अब चरण से दूरी ।। गुरु०

(०)

शब्द की महिमा भारी, समझे कोई अधिकारी ।। टेक ।।
शब्द शब्द का सकल पसारा, शब्द शब्द आधारी ।
जो कुछ देखा शब्द ही देखा, शब्द शब्द निरवारी ।। शब्द०
शब्द ही मारे शब्द जियावे, शब्द करे रखवारी ।
शब्द से राज काज सब सूझे, शब्द विराग बिचारी ।। शब्द०
शब्द ब्रह्म है शब्द जीव है, शब्द ही देव पुजारी ।
शब्द ज्ञान और शब्द ध्यान है, शब्द रूप बिस्तारी ।। शब्द०
शब्द प्रकाश ज्योति परछाईं, शब्द शब्द चमकारी ।
शब्द प्रकाश पवन और अग्नी, जल थल शब्द मँझारी ।। शब्द०
राधास्वामी संग शब्द को निरखा, शब्द स्वरूप बिचारी ।
सुरत शब्द का साधन चित भाया, मन प्रसन्न सुखारी ।। शब्द०

(०)

राधास्वामी दया का वार न पार ।। टेक ।।
दया किया मोहि अंग लगाया, कृपा दृष्टि से देखा ।
मेहर की नजर पड़ी जब मुझ पर, चुका करम का लेखा ।। वार०
माया काल के कठिन थे फंदे, सहज में लिया छुड़ाई ।
प्रीति प्रतीति भक्ति श्रद्धा लख, बख्शी निज शरणाई ।। वार०
सुरत शब्द मत राह सिखाई, अन्तरमुखी बनाया ।
सतपद अलख अगम राधास्वामी, घट भीतर दिखलाया ।। वार०

गुरुमुखता

गुरुमुखता सबका सार है ॥ टेक ॥

गुरुमुखता कोई गुरुमुख जाने, और न जाने कोई ।
गुरुमुख नहीं काल माया मुख, जीव मुखी नहीं सोई ॥ गुरमुखता०
माया मुखता धरम करम सब, लोभ मोह के धन्दे ।
रोचक दशा भयानक गति मति, पड़े भरम के फंदे ॥ गुरुमुखता०
समय को देख मान मद बाढ़े, अहंकार चित ठाने ।
काल निरंजन की परछाईं, अहं सोहंगम माने ॥ गुरुमुखता०
जीव मुखी आधीन दीन है, रोवे और चिल्लावे ।
बिन समझे बूझे की नीति, स्तुति गाये सुनावे ॥ गुरुमुखता०
यह सब यम के हाथ बिकाने, लगे न ठौर ठिकाने ।
गुरु मुख ज्ञान यथारथ बूझे, गुरु मत को पहचाने ॥ गुरुमुखता०
कर सतसंग भेद सत मत लख, बहक न बारम्बारा ।
राधास्वामी की कृपा से हो, भव द्वन्द से न्यारा ॥ गुरुमुखता०

(०)

साधु पुरुष पुरुषारथ गाओ ॥ टेक ॥

दुख से छूटो सुख हित लाओ, दुख सुख सकल भुलाओ ।
द्वन्द जगत की मेंट कल्पना, निज स्वरूप चित लाओ ॥ साधु

तुम नहीं देह न इन्द्री मन हो, इनसे ध्यान हटाओ ।
तुम सच्चिदानन्द की मूरत, अहं ब्रह्म गति पाओ ॥ साधु०
अहं ब्रह्म में अहं को त्यागो, ब्रह्म में वृत्ति जमाओ ।
लगे अखंड समाधी सुन्न में, निराधार हो जाओ ॥ साधु०
सत्य असत्य का झगड़ा छोड़ो, द्वन्द विचार हटाओ ।
द्वैत प्रपंच को मिथ्या मानो, पद अद्वैत जमाओ ॥ साधु०
यह है ज्ञान की मूल अवस्था, ज्ञान वान बन जाओ ।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, आनन्द भोग कमाओ ॥ साधु०

सुख दुख

- के. सुधाकर

आत्मा मेरी सुखी है, देह सुख का धाम है ।
मन के साधन सुख का, सुख ही सतगुरु का भाग है ॥१॥
दुख नहीं चिंता नहीं, आपत नहीं संकट नहीं ।
सामने आँखों के मेरे, राधास्वामी पाग है ॥२॥
राधास्वामी की दया से, जनम का फल पाया गा ।
जीते जी सुख मिल गया, दिन रात सुख से काम है ॥३॥

(०)

अज्ञान का फन्द कटा देना, गुरु ज्ञान की जोति दिखा देना ॥ टेक ॥
क्या हूँ कहाँ हूँ कौन हूँ, कहाँ से आया भाग ।
तुम कैसे मिले अब मुझे, क्यों चित बढ़ा अनुराग ॥
यह अकथ कहानी सुना देना ॥ अज्ञान०
विद्या अविद्या वस्तु क्या, जनम मरण क्यों होय ।
ईश जीव सम्बन्ध क्या, समझे क्यों कर कोय ॥
भली भाँति यह मरम समझा देना ॥ अज्ञान०
जनम न लेना हानि क्या, जनम लिया तो लाभ क्या ।
जनम मरण में दुख महा, कौन उसे है चाहता ॥
बस गुत्थी को तुम सुलझा देना ॥ अज्ञान०
परमारथ व्यौहार क्या, क्या है इसमें भेद ।
किस विधि बरनें यह विषय, शास्त्र स्मृति भेद ॥
जो तत्व हो उसे बता देना ॥ अज्ञान०
भरम जाल के फाँस में, फँस पाया बहु दुख ।
अब गुरु का संग मिला, मन कुछ पावे सुख ॥
राधास्वामी निज पंथ लखा देना ॥ अज्ञान०

सुरत प्यारी दुख से क्यों घबराय ।। टेक ।।

तेरे अंतर कूप अमीरस , क्यों नहीं पी तृप्ताये ।। सुरत०
सुमिरन भजन ध्यान नित करना, नाम में मत अलसाये ।। सुरत०
जब दुख संकट आय पड़े सिर, गुरु चरणन निपटाय ।। सुरत०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, भवदुख सब मिट जाय ।। सुरत०

(०)

माई सुख से जनम बिताओ ।। टेक ।।

सो सुख है गुरु चरण प्रेम में, नित गुरु के गुण गाओ ।।
सुख नहीं जग प्रपंच में माई, सुख नहीं भोग विलासा ।
सुख है गुरु के प्रीति रीति में, नित आनन्द हुलासा ।। माई०
सुख नहीं मान बड़ाई दिखाये, सुख नहीं धन परिवारा ।
सुख है अन्तरवृत्ती जमाये, गुरु का ले के सहारा ।। माई०
सुख नहीं बाहर परवत वन में, सुख नहीं सैर तमासा ।
सुख है तेर अन्तर माई, अन्तर कर जिज्ञासा ।। माई०
नित उठ गुरु की भजन बंदगी, नित गुरु संगत करना ।
घट में भजन हो घट में संगत, घट गुरु नाम सुमिराना ।। माई०
तेरे घट में गुरु बिराजे, गुरु सत चित आनन्दा ।
सो गुरु रूप है तेरा माई, ढूँढ़ त्याग सब धन्दा ।। माई०
घट में पैठ बैठ कर पूजा, घट मन्दिर उजियारा ।
घट में पिंड ब्रह्माण्ड पसारा, घट में सुख विस्तारा ।। माई०
राधास्वामी सतगुरु दाता, घट में तेरे बिराजे ।
घट दर्शन घट सेवा संगत, घट सुन आनन्द बाजे ।। माई०

(०)

गुरु कीजिये मेरी सहाय, विपति से तड़प रही ।। टेक ।।

रोग सोग से रही घबरानी, चित में छाई है हैरानी ।
छूटन की कोई विधि न जानी, काल करम भरमाय ।। विपत से०
ना जानूँ क्या कर्म कमाये, जीवन कष्ट कलेश बिताये ।
छिनभर सुख चैन नहीं पाये, हिया जिया नित अकुलाय ।। विपत से०
राधास्वामी दीन दयाला, काटो आपत्ति का जंजाला ।
अपना बल दे करो निहाला, गुन गाऊँ लव लाय ।। विपत से०

चिंता

- बी. पूज्य लिंगमय्या जी

कोई दुख सुख का नहीं, दाता तेरी है भूल सब ।
कर्म अपने करते हैं, अनुकूल और प्रतिकूल सब ।।१।।
कर्म की प्रधानता की, क्या नहीं तुझको समझ ।
कर्म से आनन्द है, और कर्म ही है सूल सब ।।२।।
यह जगत है वाटिका, करते हैं प्राणी आके काम ।
कर्म के अनुसार इनके, काँटे है और फूल सब ।।३।।
जो ठगेगा वह ठगा जायेगा, निस्संदेह आप ।
प्रेमीजन ही पाते हैं, और प्रेम के बहुमूल सब।।४।।
अपनी करनी आप भरनी, पड़ती है संसार में ।
अपने घर की आप उठाया, करते ही है चूल सब ।।५।।
किस भरम में तू पड़ा, औरों की बाते छोड़ दे ।
काम में लग अपने, करले कर्म निज अनुकूल सब ।।६।।
राधास्वामी नाम भज झगड़ों से बचकर रह सदा ।
जो नहीं समझा तो पढ़ना, लिखना होगा धूल सब ।।७।।

(०)

सब रहो मिल जुलके, मिल जुल कर करो सब काम को ।
देखना अनबन न होने पावे, तुममें नाम को ।।१।।
दुख वहाँ रहता है, कुमति का जहाँ डेरा पड़ा ।
सुमति से पाता है प्राणी, चैन और विश्राम को ।।२।।
तज के आलस और निद्रा, त्याग दो परमाद को ।
काम में लाओ सदा तुम, दिन के आठों याम को ।।३।।
एक छिन बेकाम रहना भी, कभी अच्छा नहीं ।
काम से पाते हैं नर, धर्म अर्थ मुक्ति काम को ।।४।।
राधास्वामी योग साधो, राधास्वामी योग सीख ।
जीते जी सुख अंत में लोग, सत को और सत धामको ।।५।।

चिंता कीजे गुरु की, चिंता और भुलाय ।
एकदिन ऐसा होयेगा, बनत बनत बन जाय ।।
चिंता चित से तज दे सारी, सतगुरु करेंगे तेरी सहाय ।।टे
सुमिरन भजन ध्यान चित देना, जग में सुयश कीरती लेना
भक्ति महातम प्रभाव को चीन्हा, सुख आनन्द घट पाय ।। चिंता
क्यों दुख पाता क्यों घबराता, सतगुरु तेरे हैं पितु माता
जो कोई चरण शरण में जाता, उसे वह लेंगे बचाय ।। चिंता
राधास्वामी साँच हैं रखवारे, रह तू उनके चरण सहारे
सुन यह साँची बात को प्यारे, अपना मन समझाय ।। चिंता

(०)

जग की चिंता छोडकर, चिंता करो सतनाम की ।
झूठी और मिथ्या है चिंता, तन की धन की धाम की ।।१।
आये है जो जायेंगे, रहने नहीं आया कोई ।
नाम लो और नाम लेकर, सोचो अब विश्राम की ।।२।।
ब्रह्म के अवतार तक, रहने नहीं पाये यहाँ ।
सोच कर पढ़लो कहानी, अपने सीता राम की ।।३।।
मोह माया में फँसे जो, उनको है कब शाँन्ती ।
है गले में फाँसी उनके, लोभ मद और काम की ।।४।।
राधास्वामी नाम लो, और नाम आठों याम लो ।
नाम की चिंता हो घट में, राधास्वामी धाम की ।।५।।

(०)

एक चिंता नाम की कर, जग की चिन्ता मेटकर ।
चलते फिरते नाम ले तू, बैठकर या लेटकर ।।१।।
गुरु के चरणों में झुका, मस्तक डहे सब मान मद ।
कर कमाई भक्ति की, और प्रेम गुरु को भेंट कर ।।२।।
चित से कब जाने लगा है, मान मद हंकार का ।
सीस अपना राधास्वामी, पद के आगे भेंट कर ।।३।।

चिंता

- अर्चना अगरवाल

जिसके मन नहीं चिंता व्यापे, जगमें वही है दास फ़क़ीर ।।टेक।।

अभय रहे चित गुरु पद राखे, धीर वीर गंभीर ।
शांत भाव व्यवहार परमारथ, कभी न हो दिलगीर ।। जिसके०
अपनी पीर न उर में साले, लखे पराई पीर ।
पर की पीर न जिसे सतावे, सो अधरम बे पीर ।। जिसके०
अपना रूप सँभाले पल पल, काट मोह ज़ंज़ीर ।
यह फ़क़ीर है गुरु को प्यारा, महावीर चित धीर ।। जिसके०
चाह गई चिंता सब भागी, आया भव निधि तीर ।
हंस रूप धर त्याग नीर को, गह लिया ज्ञान का क्षीर ।। जिसके०
राधास्वामी गुरु का सच्चा बालक, पहर विराग का चीर ।
तन के रहते मुक्त विदेही, सहे न द्वन्द शरीर ।। जिसके०

(०)

किसकी हम चिंता करे, चिंता है कब किस काम की ।
आत्म अनुभव होगया, सूझी है अब विश्राम की ।।१।।
कृष्ण और अर्जुन कहाँ हैं, और युधिष्ठर क्या हुये ।
यह कथा हमको सुनाओ, वसुदेव और बलराम की ।।२।।
मोह किसका शोक किसका, रूप को पहचान लो ।
आत्मा की साधना हो, तुम में आठों याम की ।।३।।
यह जगत तो स्थिर नहीं, स्थिरताई पाओगे कहाँ ।
क्यों पड़ी है रात दिन, यह तुमको धूम और धाम की ।।४।।
धन्य सतगुरु राधास्वामी, ज्ञान का परिचय दिया ।
अब लगन है हमको निस दिन, राधास्वामी धाम की ।।५।।

(०)

दुख आया जब देह में, मीठा लागा नाम ।
यह सुख गति अनमोल है, हिय पाया विश्राम ।।१।।
दुख साबुन है देह का, मल दे छांट बहाय ।
मल तज निर्मलता मिले, जो गुरु होय सहाय ।।२।।

दुख आया और सुख गया, पाया दंड शरीर ।
क़र्ज़ा मेटा काल का, चित से बना गंभीर ।।३।।
राधास्वामी की दया, मेटा मन की पीर ।
नाम जपो लवलीन हो, हिय रहे धीर गंभीर ।।४।।

(०)

आस

आस कर गुरु की दया की, हो निराश न तू कभी
जो निराश हुआ समझले, गुरु का दास न तू कभी
जग के फंदों में पड़ा, समझा नहीं उपदेश को ।
तज के पृथ्वी को चढ़ा, प्यारे आकाश न तू कभी ।।
माया छाया एक हैं, दोनों में सार की गम कहाँ ।
यह समझ आजाय होगा, फिर उदास न तू कभी ।।
कैसे अपने रूप की आती समझ प्यारे तुझे ।
आया बरस में पक्ष मास में, गुरु के पास न तू कभी ।।
नाम से मिटते हैं संकट, नाम गुरु का मंत्र है ।
नाम से काटा है माया, जाल फाँस न तू कभी ।।
अब संभलजा नाम में, विश्राम आठों याम ले ।
किया राधास्वामी नाम से, दुख का नास न तू कभी ।।

(०)

त्याग दे आसा जगत की, आसा दुख का मूल है ।
आसा वाले के लिये जग, शम्भु का त्रिशूल है ।।१।।
किसकी आसा कर रहा है, आस करती है निरास ।
आसा ही अज्ञान है, और आसा त्रिष्णा धूल है ।।२।।
पाके नर जीवन समझले, शांत और निर्भ्रान्त हो ।
फिर तुझे प्रतिकूल जग ही, सर्वदा अनुकूल है ।।३।।
कृष्ण ने अर्जुन को यह समझाया, कर निष्काम कर्म ।
मुस्कुराता हँसता खिलता रह, जो सच्चा फूल है ।।४।।
राधास्वामी ने दया की, प्रेम का रसता दिया ।
प्रेम सबका सार है, और शेष मिट्टी धूल है ।।५।।

आसा इस भव के कारागार में, सचमुच जम की फाँसी है ।
आसा का बन्धन काटे वह, गुरुमुख है गुरु विश्वासी है ॥१॥
आसा वाले को चैन कहाँ, आसा के साथ है त्रास धनी ।
मंगल आनन्द का भागी वह, संसार से जिसको उदासी है ॥२॥
जैसी आसा वैसी बासा, जब लग आसा तब लग बासा ।
जो आसा का बन्धन काटे, सत मत का वह अभ्यासी है ॥३॥
आसा है जनम मरण प्यारे, आसा तज दे फिर मुक्ति है ।
आसा को सोच विचार ले तू, जड़ चेतन ग्रन्थि की गाँसी है ॥४॥
आसा में दुविधा दुचिताई, आसा में भय लज्जा रहते ।
यह तीनों पाप अवस्था हैं, तज इनको फिर सुख रासी है ॥५॥
आसा त्रिगुण की खानी है, यह सत रज तम की है रस्सी ।
रज ब्रह्मा सत है विष्णु बली, तम शिव शम्भू कैलाशी है ॥६॥
आसा है काम क्रोध लालच, आसा मद मोह द्वेष की जड़ ।
क्यों आस में पड़के निराश हुआ, तेरा रूप अजर अविनाशी है ॥७॥
सतसंगत में सतगुरु के जा, सुन हित चित से गुरु की बाणी ।
बाणी सुन सुन निर्वाणी हो, गुरु बाणी सर्व प्रकाशी है ॥८॥
राधास्वामी ने समझाया, घट ही में है, तेरे सब कुछ ।
घट में धँस आपा अपना परख, जल में क्यों मीन प्यासी है ॥९॥

जग

- ए. शंकरय्या

प्रेमिन चल सतगुरु दरबार ॥ टेक ॥
जग में क़लह कलेश महाना, दुखिया सब संसार ।
सत संगत के वचन प्रेम के, हृदय सदा विचार ॥ प्रेमिन०
कथनी तज करनी चित देना, रहनी का व्यौहार ।
सुमिरन भजन ध्यान की किरिया, करले अपना सुधार ॥ प्रेमिन०
नरजीवन निष्फल नहीं जावे, टेक इष्ट की धार ।
राधास्वामी तेरे सहाई, करेंगे भव से पार ॥ प्रेमिन०

मन भजरे साहब करतार ।। टेक ।।

उमर बिताई समय गँवाया, मिला न ठौर ठिकाना ।
प्रेम भक्ति की रीति न जानी, जग धंदे भरमाया ।। मनरे०
दो दिन का रहना है प्राणी, दो दिन का व्यवहारा ।
दो दिन का यह सकल पसारा, दो दिन कुल परिवारा ।। मनरे०
जो आये हैं जायेंगे एक दिन, कैसा घर और डेरा ।
मूरख सोच समझ मन अपने, चिडिया रैन बसेरा ।। मनरे०
रात विषय में लंपत रहता दिन को खाना पिना ।
ऐसे प्राणी पशु है जग में, धिक धिक उनका जीना ।। मनरे०
सतगुरु राधास्वामी पाये सार भेद समझाया ।
अब नहीं पडूँ करम के धंदे, भक्ति स्वाद रस पाया ।। मनरे०

(०)

चलो गुरु दरबार, आज दर्शन के कारण ।
दरस परस सुख सार हुये प्रगट जग तारण ।।
प्रेम प्रीति उम गाये, झुके पद कमल में माथा ।
सतसंत गंगा न्हाय, रहो सतगुरु के साथा ।।
बचन सुनो चित लाये, तजो मन की दुचिताई ।
सतगुरु होय सहाय, भरम संकट मिट जाई ।।
मानुष जनम सुधार, काज अपना कर लीजे ।
भक्ति भाव हिय धार, दुविधि दुर्मति तज दीजे ।।
सुरत शब्द अभ्यास, साध लो गुरु का नामा ।
जीते जी विश्वास, जाओ राधास्वामी धामा ।।
बिन गुरु निश्फल कर्म सब, बिन गुरु निश्फल धर्म ।
बिन गुरु ध्यान न भक्ति कुछ, यह सत भेद का मर्म

जगत में दो दिन का रहना ।। टेक ।।

हँसी खुशी से समय बिताओ, दुख कलेश को क्यों सहना ।। जगत०
गुरु चरण से जोड़ो चित को, भव की धार नहीं बहना ।। जगत०
है प्रपंच सब जगत की माया, उसकी ओट न तुम गहना ।। जगत०
परमारथ का करो व्यौहारा, सत्त नाम का लहो लहना ।। जगत०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, राधास्वामी राधास्वामी नित कहना ।।जगत०

(०)

यह जग नाटकशाला साधु, यह जग नाटकशाला ।। टेक ।।

राजा रंक फ़क़ीर औलिया, दृष्य विचित्र विशाला ।
कोई ओढ़े शाल दुशाला, कोई सिर कम्बल काला ।। साधु०
सुरत ने अद्भुत भेष बनाये, नाचे नाच रसाला ।
गावें भाव दिखावें छिन छिन, खेलें खेल रसाला ।। साधु०
ब्रह्मा वेद से रचा जगत को, विष्णु गदा ले पाला ।
शिव संहार का साज सजावे, साथ भूत बैताला ।। साधु०
नाचे कमला दुर्गा सारद, काली छबि बिकरासा ।
सावित्री का राग गायत्री, सैन बैन का जाला ।। साधु०
श्रुति धुन है उद्गीत है बाणी, ओम ओम का ताला ।
श्रोतागण सब सुनने आये मन में भय बिहाला ।। साधु०
साधु दृष्टि साक्षी रूप है, सुख दुख मन से टाला ।
जिसने अपना रूप बिसारा, उर उपजा दुख साला ।। साधु०
साक्षी देखे विमल तमाशा, चित रहे सुखी सुखाला ।
भूल भरम में जो कोई आया, सहे कर्म का भाला ।। साधु०
रैन सपना है जग की लीला, सपना धन और माला ।
आँख खुली तब कुछ नहीं दरसा, गुप्त जो देखा भाला ।। साधु०
राधास्वामी संत रूप घर आये, दीनबन्धु सुदयाला ।
प्रेम प्याला हमें पिलाया, सहज किया मतवाला ।। साधु०

जग चिड़िया रैन बसेरा है ॥ टेक ॥

दस दिन का जीना है जग में, दस दिन सैर तमाशा ।
जिसने आस फाँस गले ड़ाली, अन्त में चला उदासा ॥बसेरा०
महल मक़ान बना कर भूले, फूले अपने मन में ।
काल जो पहूँचा अपनी बस्ती छोड़ी, आये उजड़े बन में ॥ बसेरा०
मात पिता भाई सुख बन्धु, मीत कुटुम्ब परिवारा ।
चलते समय संग नहीं कोई, कोई न हितु प्यारा ॥ बसेरा०
कोई जलावे कोई गाड़े, कोई नीर बहावे ।
कोई फेंके ऊसर परबत, हड्डी पवन सुखावे ॥ बसेरा०
रावण गया बीर लंकापति, राम गये अवधीसा ।
योगी यती तपी बनखंडी, गये काल के देसा ॥ बसेरा०
तू जायेगा मैं जाऊँगा, जायेगा संसारा ।
रहने वाला एक नहीं है, झूठ प्रपंच पसारा ॥ बसेरा०
बन परबत और नगर ग्राम सब, जाने वाले जानो ।
जल पृथवी आकाश पवन और, अग्नी को ऐसा मानो ॥ बसेरा०
सूरज चन्द्र गगन मंड़ल के तारे अगमा पाई ।
सबके सब यह काल के मुंह में, काल बली दुखदाई ॥ बसेरा०
औसर मिला सुहाना तुझको, मानुष देही पाई ।
राधास्वामी भज निस बासर, ले गुरु की शरणाई ॥ बसेरा०

(०)

साधु जग है पद अद्वैत ॥ टेक ॥

जो कुछ देखा एक को देखा, एक एक को लेखा ।
एक बिना कुछ दृष्टि न आया, बहु विधि किया परेखा ॥ पद अद्वैत०
कहने को तो दो हैं आँखें, देखें दोउ मिल एका ।
दो कानों से सुनें बात एक, सूझे सहज विवेका ॥ पद अद्वैत०
एक चन्द्र है एक है सूरज, एक एक सब तारे ।
मंगल बुध वीर शुक्र शनि, देखे न्यारे न्यारे । पद अद्वैत०
एक डार के पात फूल सब, एक एक दरसाये ।
जीवजन्तु सुर असुर राक्षस, एक एक कर जाय ॥ पद अद्वैत०
तुम हो एक एक हैं हम भी, एक एक एक पहचानूँ ।
राधास्वामी पद अद्वैत बखाने, समझ बूझ मन मानूँ ॥ पद अद्वैत०

संसार

- रेखा अगरवाल

जहाँ पर निंदा सो संसार । जगत है निंदा का व्यौहार ।
निंदा करे कोई संसारी । निंदा तजे सो गुरुमत धारी ।।
गुण को गह औगुण को त्यागे । गुण ग्राही हो गुण रस पागे ।
परनिंदा से अपनी हानी । सुख नहीं मिले रहे अज्ञानी ।।

निंदा करे जो और की, सो नहीं गुरु का दास ।
चित नहीं उसके गुरु बसें, सहे अन्त में त्रास ।।

(०)

आये थे रोते चले, हँसते हुये संसार से ।
क्या हमारा बिगड़ा सृष्टि, करम के व्यौहार से ।।१।।
रोये क्यों इसका पता, अब हमने पाया सोच कर ।
बिछड़े थे गुरु के चरण, सतलोक के परिवार से ।।२।।
क्यों हँसे इसका भी कारण, खोल कर कहते हैं अब ।
सीस गुरुपद से लगाया, प्रेम से और प्यार से ।।३।।
जिसके जो आता है जी में, वह कहे हमको सदा ।
फूल को क्या हानि पहूँचे, मेघ की बौछार से ।।४।।
राधास्वामी की दया से, रूप की आई समझ ।
मन नहीं दबता है मुक्ति, बन्ध के अब भार से ।।५।।

(०)

कौन तेरा है यहाँ, कोई नहीं तेरा यहाँ ।
साथ किसका कौन देता है, कोई देगा कहाँ ।।१।।
चार दिन का है यह मेला, नाव नद संजोग है ।
सब बिछुड़ जायेंगे, कोई है यहाँ कोई वहाँ ।।२।।
झूठे नाते बाँध कर तू हुआ, मन में दुखी ।
देख अपने रूप को, दो दिन का जग का समा ।।३।।
रोक सब बाहर की वृत्ती, हो के तू अंतर मुखी ।
शब्द का अभ्यास कर, जैसी दशा में हो जहाँ ।।४।।
राधास्वामी का सहारा, लेके कर सुमिरन भजन ।
थोड़े दिन पीछे यह अवसर, हाथ आयेगा कहाँ ।।५।।

थिर नहीं यह संसार री, सुन सखी सहेली ।। टेक ।।
जो आये हैं जायेंगे सजनी, कुछ अब सोच विचार री सुन ।। सखी०
बन्धन काट मोह माया के, यह उसके परिवार री सुन ।। सखी०
संगी साथी कोई नहीं है, यह अपने चित धार री सुन ।। सखी०
मिथ्या है सब जगत पसारा, मिथ्या में क्या सार री सुन ।। सखी०
राधास्वामी नाम सुमिर घट भीतर, मानुष जनम सुधार री सुन ।। सखी०

(०)

कौन कहता है तुम्हें, भाई कि संसारी बनो ।
मैं यह कहता हूँ कि तुम, भक्ति के अधिकारी बनो ।।१।।
चित रहे गुरु केक चरण में, मन रहे गुरु के ध्यान में ।
चाहे तुम परमारथी हो, चाहे व्यौपारी बनो ।।२।।
हाट में संसार के, आये हो सौदा के लिये ।
प्रेम का व्यौहार करके, सच्चे व्यौपारी बनो ।।३।।
साथ अपने औरों के भी, हित का तुम को ध्यान हो ।
अपना हित करते रहो, औरों के भी हितकारी बनो ।।४।।
राधास्वामी नाम का सुमिरन हो, उठते बैठते ।
पाके नर तन रहके तन में, तुम निःहकारी बनो ।।५।।

(०)

आये गुरु शरणागत आये ।। टेक ।।
यह संसार मोह भंडारा, मोह माया की खानी ।
जीव जंतु की कौन चलावे, मोहे ज्ञानी ध्यानी ।। आये०
यह संसार आग की भट्टी, जर भुन मर मिटे सारे ।
काम क्रोध मद लोभ ईर्षा, भड़क रहे अंगारे ।। आये०
यह संसार है दुख का सागर, डूब मरे सुर देवा ।
जिसको देखा दुख का मारा, दुख का मिला न भेवा ।। आये०
यह संसार है अगमा पाई, बादर की परछाँई ।
छिन पल का नहीं ठौर ठिकाना, रेत की भीत बनाई ।। आये०
यह संसार भरम विस्तारा, देख चित्त घबराया ।
राधास्वामी दीन बन्धु लख पाये, गही चरणन की छाया ।। आये०

कर्म धर्म भूल भरम और अज्ञान

धन्य धन्य दयाल सतगुरु, दीन हितकारी महा ।
चरण कमल की ओठ गह कर, भक्त परमानन्द लहा ।।

आप प्रगटे इस जगत में, जीव के उपकार को ।
निज दया से नाम देकर, किया जीव सुधार को ।।

कर्म धर्म और भरम और, अज्ञान दुख के मूल थे ।
यह है काँटे कष्ट के, और जीव समझे फूल थे ।।

शब्द योग की आप ही ने, आप दी शिक्षा हमें ।
सुगम रीतिसे मिल गई, भव तरण की दीक्षा हमें ।।

राधास्वामी सतगुरु, करूणा सदन दे नाम दान ।
सहज में हमको उबारो, बख्शो अपना सत्य ज्ञान ।।

(०)

भूल भरम सब त्याग री, मेरी प्यारी सहेली ।। टेक ।।

इसका विष चढ़कर नहीं उतरे, जग है काला नाग री मेरी ।। प्यारी०
शब्द डोर गह घट में चढ़ चल, जागे भाग सुभाग री मेरी ।। प्यारी०
त्रिकुटी में लख गुरु की मूरत, चरण कमल में लाग री मेरी ।। प्यारी०
सुन्न में सहज समाध रचाले, दुचिता को दे आग री मेरी ।। प्यारी०
राधास्वामी दया के सागर, देंगे अचल सुहाग री मेरी ।। प्यारी०

(०)

गुरु के चरणों में पड़ा जब, बन गया मेरा जनम ।
बन गया अब बन गया, फिर क्या बिगाड़ेगा करम ।।१।।
चलते फिरते जागते सोते में सुमिरन नाम का ।
यह **धरम** मेरा हुआ, क्या धारूँ अब दूजा **धरम** ।।२।।
भूला भटका काल माया, ने किया मेरा अकाज ।
मिल गये **सतगुरु** छूटा, जनमों का अब सारा **भरम** ।।३।।
सैकड़ों पोथी पढ़ीं, निकला न कोई मेरा काम ।
गुरु की संगत पाई, तब सूझा ठिकाने का मरम ।।४।।
धन्य सतगुरु राधास्वामी, धन्य महिमा आपकी ।
हो दया सुमिरन भजन और, ध्यान हो मेरा नियम ।।५।।

कर्म भोग

सब भोगें बारम्बार, अवश फल कर्म किये का ।
यह सोच समझ चित धार, मरम जग जन्म जिये का ।। टेक

सुर नर देवी देव महाऋषी, और ब्रह्म अवतारा ।
अशुभ करम के फल से, इनको मिले नहीं छुटकारा ।। यह सोच०
एक जो कहिये राम, महा प्रभु पुरुषोत्तम मर्यादा ।
गुप्त घाट सरजु जल बूड़े, रामायण संवादा ।। यह सोच०
दूजे कहिये कृष्ण विवेकी, सोलह कला के पूरे ।
यदुकुल नाश भील की गाँसी, भये मान मद चूरे ।। यह सोच०
तीजे युधिष्ठर धर्मराज की, अकथ अपार कहानी ।
भाई भारजा संग गले सो हिम, सब कोई जानी ।। यह सोच०
चौथे वशिष्ठ महा मुनि ज्ञानी, देखा कुल का नासा ।
विश्वामित्र के हाथ पलट गया, ज्ञान योग का पासा ।। यह सोच०
पंचम दशरथ अवध नरेशा. श्रवण ऋषी को मारा ।
पुत्र वियोग प्राण को त्याग, मिला न राम सहारा ।। यह सोच०
छटे इन्द्र की करनी समझो, शाप ब्रहस्पति दीना ।
भगमय देवराज की काया, कर्म का फल यह लीना ।। यह सोच०
चन्द्र कलंकित काम वेद से, जाने सब संसारा ।
कर्म अटल है महाबली है, कोई कोई करे विचारा ।। यह सोच०
रावण बाली भरत जड़ प्राणी, ऋषी के सुख दुर्बासा ।
करम किया कैसा फल पायाा, अन्त में भय उदासा ।। यह सोच०
सुन प्रसंग चित अपना साधो, सोचो मन कर्म बाणी ।
शब्दयोग कर जनम बनाओ, राधास्वामी की सहबाणी ।। यह सोच०

(०)

अंत समय क्यों रोया है ।।

मानुष देह की जानी महिमा, सुख निद्रा में सोया है ।। अन्त०
उठ उठ उठ कर गुरु की संगत, जो सोया है सो खोया है ।। अन्त०
अपनी करनी पार उतरनी, फल पाया जो बोया है ।। अन्त०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, अमी बून्द मन धोया है ।। अन्त०

भूल भरम

- उमा श्रीवास्तव

तू भूली भरमानी माई ॥ टेक ॥

जगत पिता तेरे घट में रहता तू उसको क्यों भूली ।
जो उस पिता को चित से भुलावे, जग की सहे टिठोली ॥ तू भूली०
चिंता तज दे दुरमति तज दे, तज दे तज दुचिताई ।
मन में धार पिता की आसा, पिता से तेरी भलाई ॥ तू भूली०
साचा स्वामी सदा सनेही, जनम जनम का संगी ।
उसके रंग रंगी नहीं माई, होगई हाय कुरंगी ॥ तू भूली०
पिता सहाई तेरा है माई, और की क्यों है आसा ।
जो कोई और की आसा लावे, फँसे काल की फाँसा ॥ तू भूली०
राधास्वामी समरथ दाता, छिन पल के रखवारे ।
चित देकर नित नाम का सुमिरन, रह रह उनके सहारे ॥ तू भूली०

(०) जप तप तीरथ

जप तप संयम बहु किये, घूमे देश विदेश ।
भटक भटक भटकत मरे, बिन गुरु के उपदेश ॥१॥
विद्या बुद्धि चातुरी, झूठा वाद विवाद ।
गुरु पद मिल सबको तजा, लागी सुन्न समाध ॥२॥
भरम मिटा संशय गया, खुली मरम की खान ।
जड़ चेतन ग्रंथी खिसी, जब पाया गुरु ज्ञान ॥३॥
पढ़ लिख दुविधा में फँसे, मन तो भया अशान्त ।
जब आये गुरु चरण में, बुद्धि भई निर्भ्रान्त ॥४॥
तीरथ में पाषाण जल, बन पर्वत दुख धाम ।
बिन गुरु कृपा न गम लखे, मिले न सत सतनाम ॥५॥

(०)

दया धरम गह लीजिये, यही वस्तु है सार ।
दया धरम का मूल है, साधो करो विचार ॥१॥
साधो करो विचार, मनुष देहि जो पाई ।
वृथा जनम गया बीत, जो मन में दया न आई ॥२॥
जब लग स्वाँसा पिंड में, करले पर उपकार ।
दया धरम गह लीजिये, यही वस्तु है सार ॥३॥

सतसंग

- पूज्य शांता जी अगरवाल

सतसंग की महिमा जान गया ।। टेक ।।

जान गया पहचान गया, सतसंग की महिमा जान गया ।।
सिमिट सिमिट जल भरे तलावा, त्यों सतगुण चित आवें ।
नित सतसंग के बचन से सज्जन, अपना जनम बनावें ।। जान०
एक दिन का काम नहीं है, दिन दिन सतसंग कीजे ।
काल करम के जाल से बचकर, प्रेम भक्ति मन दीजे ।। जान०
शठ सुधरहिं सतसंगत पाई, पारस लोह समाना ।
सत की संगत करे जो प्राणी, बनें सुसाध सुजाना ।। जान०
बिन सतसंग काज नहीं होगा, समझ लेहू मन अपने ।
जग व्यौहार पाँच दस दिन के, रात समय के सपने ।। जान०
कहता हूँ कह जात हूँ भाई, सतसंग करो बनाई ।
लोक परलोक में यश और कीर्ती, राधास्वामी की शरणाई ।। जान०

(०)

तूने सतगुरु किया न संग, काल से कौन बचावेगा ।। टेक

परमारथ स्वारथ खोया, नहीं अशुभ वासना धोया ।
दुष्कर्म बीज घट बोया, फल पाकर अन्त में रोया ।
लिया बोझ सीस पर पड़ा, **भार यह कैसे उठायेगा ।। काल से**
खट पट में उमर गँवाई, तीरथ बरत रहा भरमाई ।
पाखंडवाद चित लाई, नहीं सूझी अपनी पराई ।
आये दिन मल मल हाथ, **कष्ट से बहु पछतावेगा ।। काल से०**
जग माया अगमापाई, नहीं कोई सगा सहाई ।
मतलब के बन्धु भाई, झूठे बन्ध रहा बन्धाई ।
जब आया काल का समय, **साथ तेरे कोई न जावेगा ।। काल स**
धन दौलत माल ख़ज़ाना, घर बार मुल्क मैदाना ।
व्यौहार का ताना बाना, तूने भेद न इनका जाना ।
पड़ भरम फाँस के फंद गला, यम खड्ग से हाथ कटावेगा ।। **काल से**
राधास्वामी जग में आये, भक्ति मत पंथ चलाये ।
गत सुरत शब्द धुन गाये, दुखियों को अंग लगाये ।
ले चरण कमल की छाँह, जल्द नर देही सुफल करायेगा ।।**काल से**

आजा शरण बचा लूँगा ।। टेक ।।

तू है मेरा मैं हूँ तेरा, तन मन धन से प्यारा ।
तू आँखों का तारा मेरा, मैं तेरा रखवारा ।। बचा लूँगा०
जुज़ कुल का है कुल जुज़ का है, धर मन में परतीती ।
जब जुज़ है तब कुल से प्यार कर, सीख शब्द मत रीती ।। बचा लूँगा०
स्वारथ बस नहीं बना हूँ तेरा, नहीं स्वारथ मन मेरे ।
परमारथी परम उपकारी, क्या आया चित तेरे ।। बचा लूँगा०
तन के बन्धन मन के बन्धन, धन के बन्ध बन्धाना ।
बन्ध बन्ध में बन्ध बन्ध में, बन्ध बन्ध उरझाना ।। बचा लूँगा०
जब कोई नहीं तेरा सहाई, मैं ही रहा सहाई ।
अब भी सदा सहाई तेरा, तज दुरमति दुचिताई ।। बचा लूँगा०
उलटी समझ तेरे मन भाई, मन से मुझे बुलाया ।
भूला भटका देख के अब मैं, तुझे बचाने आया ।। बचा लूँगा०
राधास्वामी दीन दयाला, दीन अधीन सहाई ।
परम सनेही परम हितैषी, ले उनकी शरणाई ।। बचा लूँगा०

(०)

भाई समझ बूझ व्यौहार करो ।। टेक ।।

व्यौहार करो व्यौहार करो, भाई समझ बूझ व्यौहार करो ।।
दिन तो खोया जग के धंदे, रात खाय कर सोये ।
नर जीवन का सार न जाना, अन्त पीट सिर रोये ।। व्यौहार०
सब कुछ करो विवेक सहित तुम, बिन विवेक व्यौहारा ।
नर के काम सभी हैं निष्फल, समझे कोई गुरु प्यारा ।। व्यौहार०
काम काज़ से निश्चित होकर, सतसंगत में जाई ।
प्रेम भक्ति का सौदा करलो, नित नित बढ़े सवाई ।। व्यौहार०
गुरु की भक्ति सदा सुख दाई, कोई कोई बिरला जाने ।
बिन जाने परतीत न आने, अनुभव गम गति माने ।। व्यौहार०

गुरु चरण कमल की छाँह ले, तब काज बने ।
दीवाना क्यों घबराना है, क्यों भूला तू नादाना है ।
गुरु चरण कमल की छाँह ले, तब काज बने ।।टेक।।
गुरु ही विष्णु महेश हैं, गुरु ही वरुण गणेश ।
गुरु ही शेष सुरेश हैं, गुरु ही धनी धनेश ।। गुरु चरण०
गुरु ब्रह्मा गुरु जगपति, गुरु को समरथ जान ।
गुरु ब्रह्म पर ब्रह्म है, गुरु पद में कल्याण ।। गुरु चरण०
गुरु आये इस जगत में, धार संत अवतार ।
शब्द जहाज चढ़ाय कर, करें जीव भव पार ।। गुरु चरण०
गुरु ही साँचे मीत हैं, हितकारी निजदेव ।
और सबन को त्याग दे, कर गुरु चरणन सेव ।।गुरु चरण०
राधास्वामी सतगुरु, सत्य पुरुष सत रूप ।
सतनामी सतधाम धुर, सतस्वामी सत भूप ।। गुरु चरण०

(०)

जब तू हुआ गुरु का सेवक, गुरु को हरदम तेरा ध्यान ।।टेक।।
जो कोई आया शरण गुरु के, गुरु उसके रखवारे ।
उसको करना धरना क्या है, रहे गुरु के सहारे ।।
सतगुरु दाता आप करेंगे उसका, सोच समझ कल्याण ।। जब तू०
प्रेम प्रीति परतीत सहज है, क्या जाने संसारी ।
यह तो जाने कोई गुरुमुख, गुरु का आज्ञाकारी ।
सतगुरु बख्शेंगे निज कृपा से, उसे भक्ति युक्ति का दान ।। जबतू०
जो गुरु के हैं गुरु उनके हैं, गुरु को दास प्यारा ।
गुरु सेवक के आँख के तारे, सेवक गुरु का दुलारा ।
कैसे होगा कभी जगत में, गुरु के सेवक को कुछ हान ।। जब तू०
दास दुखी तो गुरु दुखी हैं, वह सुखिया गुरु सुखिया ।
दास की चिंता गुरु को रहती, वह सब में है मुखिया ।
सेवक बनेगा एक दिन भक्त शिरोमणि, ज्ञानी चतुर सुजान ।। जब तू०
यह कहता हूँ सच्ची बाणी, गुरु को प्यारा दास ।
ऋद्धि सिद्धि नव निधि गुरु देंगे, मुक्ति न छाँडे पास ।
राधास्वामी सिंधु रूप, और सेवक बुन्द समान ।। जब तू०

संत मत मार्ग झीना है, हाँ ।। टेक ।।

त्याग स्थूल सूक्ष्म गति निरखे, फिर कारण की बारी ।
कारण तज महा कारण धावे, तब समझो अधिकारी ।। झीना है०
धरम करम व्यौहार न छोड़े, ढूंढ़े सार न इन में ।
सुरत शब्द में सार छुपा है, करो प्राप्त सो तिन में ।। झीना है०
संजम नियम जप तप कर्म, नहीं किंचित कठिनाई ।
सहज योग की सहज रीति है, सहज ही सहज भलाई ।। झीना है०
सतगुरु सतनाम सतसंगत, समझ सहज में धारे ।
फिर अन्तर में करे चढ़ाई, जड़ चेतन निरवारे ।। झीना है०
राधास्वामी ने भेद बताया, सुरत शब्द मत गाया ।
सुरत शब्द मत सब का टीका, सुरत में शब्द को पाया ।। झीना है०

(०)

सहज योग विधि उलटी है, हाँ ।। टेक ।।

जग के धरम करम व्यौहारा, सो मारग प्रवृति ।
सहज जोग साधन से प्यारे, सहज में नित्य निवृति ।। उलटी है०
पृथवी छोड़ गगन को धावे, बेधे जाय ब्रह्मंडा ।
लख विराट अव्याकृत अन्तर, हिरण्य गर्भ प्रचन्डा ।। उलटी है०
माया सकल ब्रह्म के ऊपर, पर ब्रह्म दरबारा ।
उनके आगे चढ़े जो साधक, निरखे सत्य पसारा ।। उलटी है०
उलटे नाम का सहज में सुमिरन, मुख में बन्द लगाना ।
आँख कान खुलने नहीं पावें, सुन अनहद धुन काना ।। उलटी है०
तन थिर मन थिर सुरत निरत थिर, करे जो सूझे युक्ति ।
युक्ति पाये सुरत शब्द साधे, सहज मिले पद मुक्ति ।। उलटी है०
अलख अगम की गति लख पावे, अन्तर रूप प्रकाशा ।
राधास्वामी चरण कमल में, पावे अन्त निवासा ।। उलटी है०
सहज योग की सहज कमाई, सहज सहज चित लाना ।
राधास्वामी की कृपा से सहज में धुरपद निर्वाणा ।। उलटी है०

घट का घर सूना पड़ा है, उसमें आप आ जाइये ।
दास हूँ सेवक हूँ सच्चा, अब तो आप अपनाइये ।।१।।
काम का मद मोह का माया का, कूड़ा हट गया ।
शुद्ध निर्मल और सुथरी, कोठरी में आइये ।।२।।
घट का घर मेरा बने, मन्दिर सुहाना अद्भुती ।
मूरती आकर बिराजे, अपनी छबि दिखलाइये ।।३।।
मैं तुम्हारा तुम हो मेरे, यह समझ में आगया ।
भर्म और अज्ञान माया, मोह का मिटवाइये ।।४।।
आरती साजूँ जलाऊँ, जोत भक्ति प्रेम की ।
राधास्वामी नाद घंटा, शंख में सुनवाइये ।।५।।

(०)

इस घट का मन्दिर सूना है ।। टेक ।।

गुरु मूरति पधराई नाहीं, घंटा शंख न बाजे ।
जगमग ज्योत दृष्टि नहीं आवे, अनहद नाद न गाज़े ।। इस०
किसकी आरति किसकी सेवा, पूजा किसकी धारूँ ।
किस विधि किसका ध्यान लगाऊँ, किसके बल मन मारूँ ।। इस०
भव फूल की माला बनी है, किसके गले पहनाऊँ ।
किसे सुनाऊँ किसे रिझाऊँ, किसकी स्तुति गाऊँ ।। इस०
चरणामृत की प्यास है चित में, भूक प्रसाद की बाढ़ी ।
भोग लगे किस विधि मूरति का, सोच फिकर मोहि गाढ़ी ।। इस०
सुमिरन भजन ध्यान सब निष्फल, जब गुरु चित्त न आवे ।
राधास्वामी मेहर करें जब जन पर, तब मेरी बन आवे ।। इस०

(०)

घट मन्दिर पट खोल कर, कर दर्शन चित लाय ।
अपना आपा त्याग कर, गुरु आपा नित ध्याय ।।१।।
दीवा बाला प्रेम का, जोति जगमग होय ।
लख प्रकाश बिच हिये में, मन मन्दिर में सोय ।।२।।
राधास्वामी की दया, रहे अलमस्त फ़क़ीर ।
कभी न व्यापे जगत गति, उर नाही साले पीर ।।३।।

शब्द

शब्द गुरु का नाम है, शब्द गुरु रूप है ।
शब्द ही चैतन्य है, और चैतन्य का वह कूप है ।।१।।
शब्द का सुमिरन भजन हो, शब्द ही का ध्यान हो ।
शब्द ही है एक और यह शब्द ही बहुरूप है ।।२।।
शब्द घट में गूँजता है, रात दिन उसको सुनो ।
मन की चंचलता मिटे, यह अगम अलख अनूप है ।।३।।
राधास्वामी की दया से, घट के रसते में चलो ।
ज्ञान का सूरज है चमका, उसकी चहुँ दिस धूप है ।।४।।

(०)

शब्द है आधार सबका, शब्द का तू ध्यान कर ।
शब्द के साधन में लगजा, उसकी महिमा जान कर ।।१।।
ब्रह्म क्या है, शब्द है परब्रह्म क्या है शब्द है ।
गुरु की संगत कुछ दिनों हो, शब्द का अनुमान कर ।।२।।
शब्द में है नाम और इस, शब्द ही में रूप है ।
सुन गुरु का शब्द निस दिन, शब्द का सन्मान कर ।।३।।
शब्द ब्रह्मा शब्द विष्णु, शब्द शिव का रूप है ।
शब्द को मथ कर परखले, दूध जल को छान कर ।।४।।
शब्द से रचना है सारी, शब्द ही से है प्रकाश ।
राधास्वामी की दया ले, शब्द महिमा जान कर ।।५।।

(०)

जब अन्तर शब्द की धुन प्रगटी, बाहर का गाना भूल गया।
घट में अपने बैठक पाई, मन द्वन्द मचाना भूल गया ।।१।।
तीन ताप की विपत गई, कलि के कलेश दारूण मेटे ।
गुरु चरण कमल की छाँह मिली, उत्पात में आना भूल गया ।।२।।
शाँति है निर्भ्रान्ती है, आनन्द है सुख का जीवन है ।
दुख दाई जग सुखदाई है, दुचिता दुख पाना भूल गया ।।३।।
राधास्वामी की ली शरणाई, निज रूप की मुझको समझ आई ।
समझा सबको अगमा पाई, मन इससे लगाना भूल गया ।।४।।

भाई शब्द योग चित लाओ ।

शब्द का पहले रूप समझलो, सार सार का सारा ।
शब्द आकाश माया का गुण है, चैतन का भंडारा ।। तुम चित०
शब्द के मारे मरते प्राणी, शब्द जिलावें जीवें ।
अजर अमर बन सुख को भोगें, शब्द अमृत जीव पीवें ।। तुम चित०
शब्द राग सुन राग बढ़े नित, शब्द विरागी से त्यागी ।
कैसे कहूँ खोल कर प्यारे, शब्द पवन जल आगी ।। तुम चित०
गुरु गम लेकर घट में कमाई, सुन धुन अनहद बाणी ।
चित विरती का निरोध सहज हो, सुरत बने आसमानी ।। तुम चित०
बिन गुरु गम नहीं घट में चलना, मन मत कभी न होना ।
गुरुमत ले गुरु ज्ञान समझले, सुन्न समाध में सोना ।। तुम चित०
बिन गुरु ज्ञान का धन नहीं मिलता, बिन गुरु निरधनताई ।
शब्द अधीन गुरु उपदेशा, गुरु की है प्रभुताई ।। तुम चित०
मनमत में है चंचलताई, काल करम व्यौहारा ।
गुरुमत में है निश्चलताई, गुरु गम ज्ञान पसारा ।। तुम चित०
शब्द सुरत में सुरत शब्द में, शब्द सुरत एक सारा ।
शब्द सुरत का मर्म है न्यारा, पावे गुरुमुख प्यारा ।। तुम चित०
पृथवी छोड़ गगन को धावें, गगन में शब्द विलासा ।
तीन सुन्न के पार ठिकाना, राधास्वामी पग में बासा ।। तुम चित०

(०)

गुरु समरथ दाता, नमो नमो ।
सुर नर मुनि त्राता, नमो नमो ।।
हितकर पितु माता ज्ञानी ज्ञाता, जगत विधाता नमो नमो ।। गुरु०
नरवंश विभूषण जन मन पोषण, सरसिज सम लोचन नमो नमो ।
त्रयलोक्य सहायक बहुसुख दायक, सन्तन कुल नायक नमो नमो ।।
आनन्द घटरासी, घट घट बासी, सत चित अविनासी नमो नमो ।
राधास्वामी दयाला सहज कृपाला, उर विमल विशाला नमो नमो।।

पुत्र पति सम्बन्धियों से प्रेम का व्यौहार कर ।
घर में रह कर हो भजन और इस भजन से प्यार कर ।।१।।
पाया शुभ अवसर न इसको, हाथ से खोना कभी ।
मन से दुविधा मेट कर, निश्चय को अंगीकार कर ।।२।।
उठते चलते बैठते सुमिरन रहे, सतनाम का ।
नाम में जीवन हो तेरा, नाम का प्रचार कर ।।३।।
भाग को अपने बढ़ा ले, सिंध बुंद की गति परख ।
बुंद हो सत सिंध ऐसे, प्रेम का विस्तार कर ।।४।।
राधास्वामी की दया से, बन दया की मूरती ।
शील पाकर हो सुशीला, चित की दुचिता तार कर ।।५।।

(०)

मीठी बाणी बोलिये मुख से, मन रहे निर्मल शुद्ध शरीर ।।टेक।।
कड़वा वचन कलेजा बेधे, हिंसा की तलवार ।
जिभ्या बाँधे क्यों फिरते हो, भाला छुरी कटार ।
उर में साले सुनकर सुनने वाले, दुखी बने दिलगीर ।। मीठी०
मुँह तो बना भयानक बांबी, निकले बिच्छु साँप ।
डस डस खायें घाव करें गाढ़ा, महा समझ यह पाप ।
प्राणी कुछ तो सोच समझ मन अपने, देन पीर बेपीर ।। मीठी०
क्यों मुख बना नरक की खानी, दुर्गन्धी अस्थान ।
जब बोले तब निकले सड़ाइँध, समझ जो चतुर सुजान ।
भाई इस करतब से जाय पड़ेगा, नरक कुण्ड के तीर ।। मीठी०
जब बोले तब मीठी बाणी, बाणी अधिक स्वाद ।
उत्तम पुरुष की यह है रीती, राख धर्म मर्याद ।
पहनो सँवर सिंगार के तन पर, शील भाव की चीर ।। मीठी०
आया जब राधास्वामी मत में, निंदा कुबाणी त्याग ।
गाता रह आनन्द हर्ष से, शब्द का मंगल राग ।
ऐसा पुरुष विवेकी कहलाता है, पंथ का साध फ़क़ीर ।। मीठी०

फकीरा रूप तेरा अति प्यारा ।। टेक ।।

तू सत चित आनन्द की मूरत, तू तीनों से न्यारा ।
तेरी गति मति बुद्धि न जाने, अटक रही मँझधारा ।। फ़क़ीरा०
करम किया सत की चढ़ा घाटी, चित में विवेक विचार ।
सत्त चित्त आनन्दं विलासा, चहुँ दिस हर्ष पसारा ।। फ़क़ीरा०
तीन त्याग चौथे को धारे, सो सबका अधारा ।
द्वन्द जगत त्रिपुटी की त्रिकुटी, छोड़ चला घरबारा ।। फ़क़ीरा०
एक अनेक कहाँ है तुझ में, यह भूल विकार ।
राधास्वामी दया रूप लख अपना, तू व्यापक संसारा ।।फ़क़ीरा०

(०)

सोच समझ कर जतन फ़ख़ीरवा ।।टेक ।।

छिन छिन उमर घटत दिन राती, कभी सांझ कभी प्रभाती ।
माया मोह महा उत्पाती, इनसे लगा मत लगन फ़क़ीरवा ।। सोच०
सुख संपत धन माल ख़ज़ाना, इन्हें देख क्यों जिया ललचाना ।
झूठे हैं सब नाम निशाना, तासों उपजे पतन फ़क़ीरवा ।। सोच०
गुरु भक्ति है सबका सारा, देखा सोचा समझ विचारा ।
जानेगा कोई गुरुमुख प्यारा, मान मान यह बचन फ़क़ीरवा ।। सोच०
माया मोह जाल अति भारी, तीन ताप से जगत दुखारी ।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, अब बुझी मन की जलन फ़क़ीरा ।। सो

(०)

गुरु तेरे चरण की बलिहारी ।। टेक ।।

भरम मिटाया मोहे नसाया, माया की कटी जड़ सारी ।
सार सुझाया तत्व लखाया, नहीं रहा मैं संसारी ।। गुरु०
भय न सतावे भव न डरावे, निस दिन तेरी रखवारी ।
मोह मया चिंता नहीं व्यापे, मेरी अवस्था भई न्यारी ।। गुरु०
जागृत स्वपन एक सम लेखा, हटी हिये की अंधियारी ।
निज स्वरूप का दर्शन पाया, चहु दिस रहे मंगलकारी ।। गुरु०
राधास्वामी गुरु ने अंग लगाया, हो गया मैं आज्ञाकारी ।
शब्द योग की करूँ कमाई, ज्ञान भान घट उजियारी ।। गुरु०

प्रार्थना

- पूज्य शाम राव जी

मैं हूँ दास तुम्हारा प्रभुजी, मैं हूँ दास तुम्हारा ।। टेक ।।

तुम मेरे स्वामी तुम मेरे दाता, तुम मेरे भरतारा ।
तुमसे आस लगी है निस दिन, तुम्हारा मुझे सहारा ।।प्रभुजी०
भवसागर अति गहर गम्भीरा, सूझे वार न पारा ।
दया करो करुणा चित लाओ, नाव पड़ी मँझधारा ।। प्रभुजी०
मेरी ओर न देखो स्वामी, मैं हूँ अधम अकारा ।
पतित उधारण नाम तुम्हारो, मन में करो विचारा ।। प्रभुजी०
काम क्रोध मद लोभ भुलाना, रोम रोम हंकारा ।
पचलड़ सतलड़ अठलड़ रसरी, केहि विधि हो छुटकारा ।। प्रभुजी०
तुम देखत नित अवगुण करता, सुध बुध सकल बिसारा ।
बिनती कैसे करूँ दयामय, मन से अति ही हारा ।। प्रभुजी०
प्रेम प्रीति की रीति न जानी, चखा न अमृत सारा ।
भक्ति भाव से परिचय नाहीं, काल कर्म ने मारा ।। प्रभुजी०
राधास्वामी दयाय के सागर, करुणामय करतारा ।
त्राह त्राह चरण शरण बलिहारी, आन करो निस्तारा ।। प्रभुजी०

(०)

साधु मन में करो विचारा ।। टेक ।।

मन वच कर्म धर्म शुभ करनी, नासो मूल विकारा ।
फिर नहीं व्यापे कष्ट कलेशा, सहज ही हो छुटकारा ।। साधु०
हिये का बरतन माँज के भाई, भरलो अमृत सारा ।
अमृतसार नाम है गुरु का, नाम का लेओ सहारा ।। साधु०
घट का घाट बदल दो प्यारे, अवघट गहो किनारा ।
त्यागो मन दुर्मति की दुर्गति, गहो चरण आधारा ।। साधु०
जनम जनम के कर्म कमाये, सिर पर धारा धारा ।
हलका बोझ शब्द से होगा, घट में बजे दुतारा ।। साधु०
राधास्वामी दया निरख अंतर में, मौज में करो गुज़ारा ।
दुख आपति आपहि सब भागें, अंतर सुख का नज़ारा ।। साधु०

भव सागर में भाटा आया, लहर का हेरा फेरा है ।
वह बह गया जो धार की राह में, डाला अपना डेरा है ।
मन चंचल मूरख अज्ञानी, चेत ले अभी सवेरा है ।
मोह भरम अज्ञान अविद्या, ने क्यों तुझको घेरा है ।
कंकर चुन चुन कर महल बनाया कहता है घर मेरा है ।
ना घर मेरा ना घर तेरा, चिड़िया रैन बसेरा है ।।१।।
काल चक्र के घेरे में, प्रकाश है कहीं अंधेरा है ।
ना घर मेरा ना घर तेरा चिड़िया रैन बसेरा है ।।
रामचन्द्र जी जैसे राजा गये, गई सीता रानी ।
विश्वामित्र वशिष्ठ गये, गौतम कनाड से विज्ञानी ।
जपी तपी नियमी और धर्मी, ऋषि मुनि ज्ञानी ध्यानी ।
काल ने सबको ग्रास लिया, फिर तू क्यों हुआ है अभिमानी ।
तू कब आप किसी का होगा, कोई जब नहीं तेरा है ।
ना घर मेरा ना घर तेरा, चिड़िया रैन बसेरा है ।।
चेत चेत ले चेत चेत ले, चेत चेत का सवेरा है ।
ना घर मेरा ना घर तेरा, चिड़िया रैन बसेरा है ।
राधास्वामी की संगत में, अपना जनम बनाले तू ।
त्याग भरम का रस्ता, सच्चे ज्ञान का रस्ता पाले तू ।
शब्द योग अभ्यास के साधन से, कुछ भक्ति कमा ले तू ।
छोड काल माया का घर, सत्त धाम में सुरत बसा ले तू ।
भव सागर तरने का संतो ने, बाँधा यह बेड़ा है ।
ना घर मेरा ना घर तेरा, चिड़िया रैन बसेरा है ।।

(०)

नर जनम गया बरबाद, मूरख ना चेते ।। टेक ।।
मन इन्द्री के भोग भुलाना, इनमें कौन सवाद ।। मूरख०
करम धरम पाखन्ड पसारा, झूठा वाद विवाद ।। मूरख०
औरन को नित दोष लगावे, अपना अन्त न आद ।। मूरख०
बन्धे काल माया की रसरी, लोक लाज मरजाद ।। मूरख०
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, सत्तनाम कर याद ।। मूरख०

मेरी सुरत सहेली आओ री, सतगुरु के चरणा ।। टेक ।।

जगमें प्रगट भये राधास्वामी, दरस परस चित लाओ री,
आ उनके शरणा ।। मेरी०

जुगन जुगन का प्यासा मनुवा, गुरु उपदेश चिताओ री,
क्यों आलस करना ।। मेरी०

सतसंगत की अमृतवाणी सुनकर जनम बनाओ री,
सहज भव तरना ।। मेरी०

कुछ दिन सतसंग वचन विलासा, फिर निजघट नहाओ री,
सुरत शब्द के झरना ।। मेरी०

जीते जी जीवन मुक्ति फल, राधास्वामी दया से पाओ री,
अवसर न बिसरना ।। मेरी०

(०)

प्यारी तू है प्रेम की मूरत, जब दुख से घबरानी क्यों ।
तुझमें ज्ञान ध्यान की शक्ति, भरम से यूँ भरमानी क्यों ।।
सुमिरन भजन ध्यान में लगजा, ध्यान रहे गुरु पूरे का ।
समझ बूझ कर तू नहीं पढ़ती, प्यारी गुरु की बाणी क्यों ।।
सतगुरु राधास्वामी दया करेंगे, भव कलेश मिट जायेंगे ।
मान वचन यह दृढ़ निश्चय से, व्यापी है हैरानी क्यों ।।

(०)

गुरु है तेरे पास फ़क़ीरवा, गुरु है तेरे पास ।। टेक ।।

त्याग भरम विचार मन का, छोड़ जग की आस ।
आस कर एक गुरु चरण की, सबसे होय निराश ।। फ़क़ीरवा०
तेरे मन में तेरे तन में तेरे सांसो सास ।
गुरु बसें दिन रात प्यारे, धर चरणन विश्वास ।। फ़क़ीरवा०
गुरु नहीं तीरथ बरत में गुरु न योग अभ्यास ।
ढूँढ अपने हृदय में नित, वहाँ उनका बास ।। फ़क़ीरवा०
करम में माया है व्यापी धरम यम की फांस ।
बन में अनबन देखी मन में, भरम था सन्यास ।। फ़क़ीरवा०
तेरी चिंता गुरु को होगी, क्यों है तुझको त्रास ।
राधास्वामी चरण गह अज्ञान का कर नास ।। फ़क़ीरवा०

आली री गुरु भक्ति बिना, नर जीवन निश्फल ।। टेक ।।
मानुष तन का भक्ति है भूषण, प्रेम प्रीति सिंगारा ।
श्रद्धा दया क्षमा चित बाढ़े, सूझे पर उपकारा ।।
बुद्धि मन सब हों निर्मल ।।१।।
काम क्रोध और लोभ मोह मद, त्याग डाह हंकारा ।
जो निष्काम करे गुरु भक्ति, सूझे ज्ञान बिचारा ।।
फँसे नहीं जग के दल दल ।।२।।
परमारथ के मग में पग धर, सुधर जाये व्यवहारा ।
लोक में यश परलोक में आनन्द, जीवन मुक्ति विहारा ।।
काल माया करम निर्बल ।।३।।
जीते जी तन रहते पावे, निज स्वरूप का दर्शन ।
जब यहाँ दर्शन तत्व प्राप्त हो, आगे भी वही लक्षण ।।
मिला मानुष तन काफल ।।४।।
राधास्वामी गुरु ने मौज दिखाई, सतसंग सार सुझाया ।
अपनी आँखों देख लिया, भक्ति मुक्ति का सारा ।। भया सत
मत में निष्चल ।।५।।

(०)

बिनती

बंदना करता हूँ अपनी, और की क्या बंदना ।
कोई जब हो दूसरा, उसका करूँ तब सामना ।।१।।
द्वैत है अद्वैत है द्वैता अद्वैत, और कुछ भी नहीं ।
जिस जगह देखो हूँ व्यापा, आप में हूँ सब कहीं ।।२।।
शुद्ध चित्त हूँ बुद्ध हूँ, निर्द्वन्द्व हूँ, नित मुक्त हूँ ।
सबसे न्यारा सब में पूरा, पृथक और संयुक्त हूँ ।।३।।
सतचित आनन्द हूँ तीनों में मेरा भास है ।
मेरे ही आधार पर, जल थल पवन आकाश हूँ ।।४।।
ब्रह्म हूँ सर्वज्ञ मैं, और जीव हूँ अल्पज्ञ मैं ।
यज्ञ का मन्तव्य हूं, और आहूति हूँ यज्ञ में ।।५।।
जब मिले अनुभव तो मेरे रूप की पहचान हो ।
ज्ञान हो अनुमान हो, सतमत हो और विज्ञान हो ।।६।।
राधास्वामी के वचन सतसंग में जाकर सुनो ।
अपने आपा को पिछानोगे, जो सुनकर तुम गुणों ।।

नाम

हंसा करो नाम नौकरी ।। टेक ।।

नाम विदेही नित सुमिरै नहीं भूलै छन घरी ।
नाम विदेही जो जान पावै, कबहूँ न सुरति बिसरी ।।
ऐसो शब्द सतगुरु से पावे, आवागमन हरि ।
कहें कबीर सुनो भई साधो, पावै अमर नगरि ।।

कली केवल इक नाम आधारा, वेद पुराण संतमत सारा ।।
नानक दुखिया सब संसार, सुखी वही जो नाम आधार ।।

(०)

नाम अमोल रतन है जग में ।।टेक।।

नाम मिला तो सब मिला, नाम है सबका सार ।
जो कोई सुमिरे नाम नित, व्यापे नहीं संसार ।। जग में०
सुख देवे दुख को हरे, काटे कष्ट कलेश ।
जीवत शाँति चित्त बसे, अन्त में सतगुरु देश ।। जग में०
जप तप संयम नियम, यम सब है नाम अधीन ।
नाम भक्ति के सिंध का प्रेमी भक्त है मीन ।। जग में०
चंचल मन निश्चल बने, उपजे हर्ष हुलास ।
मन में भजे जो नाम को, कभी न होय उदास ।। जग में०
नाम तेरे घट में बसे, बिन जिभ्या ले नाम ।
राधास्वामी की दया पूरण हो सब काम ।।

(०)

न अपना नाम रखना तुम, न दुनिया में निशाँ रखना ।
नहीं की जब गई आदत, जबाँ पर तब न हाँ रखना ।।
मुकर होना अबस है, और मुनकर होना है ग़लती ।
न सिर में ऐसे सौदा, का कभी द्वारे गीराँ रखना ।।
न साहिबे दिल न बे दिल, बनने की तुम में हविस आये ।
न दिल देना न दिल लेना, न बहरे दिलस्ताँ रखना ।।
अगर है तर्क तर्क करदो, तर्क का भी तर्क बेगुमाँ ।
मकाँ जब छुट गया फिर क्यों खयाले लामकां रखना।।
ख़ामोशी मानये दारद, कि दर गुफ्तन नमी आयद ।
न सच और झूठ कहने के लिये मुह में जुबाँ रखना ।।

-- पूज्य के. कृष्ण मूर्ति

मेरा चंचल मनुआ काल से डर ।। टेक ।।

काल से डर प्यारे काल से डर, मेरा चंचल मनुआ **काल** से डर ।।
आज कहे मैं काल भजूँगा, **काल** की गति नहीं जाने ।
आज **काल** क्या करता है तू, काल लगा नियराने ।। काल से०
क्या जाने क्या पल में होगा, **काल** है कठिन कराला ।
काल भयानक फनधर भाई, **काल** नाम है काला ।। काल से०
जो करना है अब कर प्यारे, अवसर मिला सुहाना ।
आज का काम **काल** पर क्यों, तू छोड हुआ दिवाना ।। काल से०
खेल कूद में विषय भोग में, आयु सकल बिसराई ।
वृद्ध अवस्था देह शिथिल भई, अब कुछ करले कमाई ।। काल से०
आज **काल** में बिगडेगा तन, साँस दुधारा जारी ।
काल का त्याग बहाना झूठा, कर चलने की तयारी ।। काल से०
संगी साथी नहीं हैं तेरे, मात पिता सुत भाई ।
अपने स्वारथ बंध बंधाने, साथ नहीं कोई जाई ।। काल से०
बादर की छाईं जग लीला, बिनस जाय पल माहीं ।
राधास्वामी की कर आसा, और की आसा नाहीं ।। काल से०

(०)

साध जनम का काज तू, प्यारी सुरत सहेली ।। टेक ।।

आज का काम जो काल पे छोडा, अपना करे अकाज तू ।। सुरत०
गया समय फिर हाथ न आवे, अवसर गहले आज तू ।। सुरत०
घट में घट ऊपर चढ़ जा, ले त्रिकुटि का राज तू ।। सुरत०
छोड कुसंगत कर सतसंगत, जा सतगुरु के समाज तू ।। सुरत०
प्रेम प्रीत परतीत सहज है, मन मनसा को माँज तू ।। सुरत०
सत का नूर दृष्टि में आवे, हिये की आँख को आँज तू ।। सुरत०
राधास्वामी चरण ओट दृढ़ करले, भक्ति साज दल साज तू ।। सुरत०

आदि संत कबीर दास जी की बाणी

प्रेषक - पूज्य रोहिदास जी

सतगुरु दीन दयाल प्रीतम पाईया ।। टेक ।।

बंदी छोड़ मुक्ति के दाता, प्रेम सनेही नाम ।
साध संत के बसी अभिलाषा, सब विधि पूरण काम ।।सतगुरु०
जैसे चातक स्वाति जल को रटत है आठों जाम ।
एसी सुरति लगी जिन सतगुरु, सो पाये सुख धाम ।।सतगुरु०
आनन्द मंगल प्रेम चारि गुरु, अमर करत है जीव ।
सुमिरन दे सत लोक पठाये, ऐसे समरथ पीव ।। सतगुरु०
चरण कमल सतगुरु की सेवा, मन चित गह अनुराग ।
कहें कबीर अस होरी, खेलै जाके पूरण भाग ।। सतगुरु०

(०)

झीनी झीनी बीनी चदरिया ।। टेक ।।

काहे का ताना काहे की भरनी ।
कौन तार से बीनी चदरिया ।। झीनी०
इंगला पिंगला ताना भरनी ।
सुखमना तार से बीनी चदरिया ।। झीनी०
आँठ कँवलदल चरखा डोले ।
पांच तत्व गुण तीनी चदरिया ।। झीनी०
साईं को सियत मास दस लागे ।
ठोक ठोक के बीनी चदरिया ।। झीनी०
सो चादर सुर नर मुनी ओढी ।
ओढ के मैली कर दीन्ही चदरिया ।। झीनी०
दास कबीरा जतन से ओढ़ी ।
ज्यों की त्यौं धर दीन्ही चदरिया ।। झीनी०

(०)

कुछ लेना न देना, मगन रहना ।। टेक ।।

पंच तत्व के पिंजरे तन में बोली मैना रे मै ना ।
गहरी नदिया नांव पुरानी, खेवटिया से मिली रहना ।
तेरा साईं तुझ में बसत है, खोल कर देख नैना ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, गुरु चरण से लिपट रहना।

संतो सहज समाध भली ।। टेक ।।

गुरु परताप भयो जा दिन से जागी सुरत न अनत चली ।।

आँख न मूँदूं कान न रूधूँ काया कष्ट न धारूँ ।
खुले नयन से हँस देखूँ सुंदर रूप निहारूँ ।। संतो०
कहूँ सोई नाम सुनूं सोई सुमिरन खाऊँ पियूँ सो पूजा ।
गृह उद्यान एक सम लेखूँ भाव मिटाऊँ दूजा ।। संतो०
जहाँ जहाँ जाऊँ सोई परिक्रमा जो कुछ करूँ सो सेवा ।
जब सोऊँ तब करूँ दंड़वत पूजूँ और न देवा ।। संतो०
शब्द निरन्तर मनुवा राता मलिन बासना त्यागी ।
उठत बैठत कबहुँ न बिसरूँ ऐसी तारी लागी ।। संतो०
कहें कबीर यह उनमुनी रहनी सो परगट कर गाई ।
दुख सुख के परे एक परम पद सुख रहा समाई ।। संतो०

(०)

मन लागो मेरो यार फ़क़ीरी में ।। टेक ।।

जो सुख पावें नाम भजन में, सो सुख नाहीं अमीरी में ।
भला बुरा सबको सुन लीजे, करि गुज़रान ग़रीबी में ।।मन०
प्रेम नगर में रहनी हमारी, भलि बनि आई सबुरी में ।
हाथ में कूँडी बग़ल में सोंटा, चारो दिशा जागीरी में ।।मन०
आखिर यह तन ख़ाक मिलेगा, कहा फिरत मग़रूरी में ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिलै सबूरी में ।। मन०

(०)

घुंघट का पट खोल री तोहे पीव मिलेंगे ।। टेक ।।

घट घटमें वह साई रमता, कटुक बचन मत बोल रे ।। घूंघट०
धन यौवन का गरब न कीजे, झूठा पचरंग चोल रे ।। घूंघट०
सुन्न महल में दिया बार ले, आसन से मत ड़ोल रे ।। घूंघट०
जोग जुगत से रंग महल में, पिया पायो अनमोल रे ।। घूंघट०
कहत कबीर सुनो भाई साधो, अनहद बाजत ढ़ोल रे।।घूंघट०

गुरु नानक देव जी की बाणी

गुरु बिन तेरो कोई न सहाई ।। टेक ।।

काकी माता पिता सुख बनिता । को काहू को भाई ।। गुरु०
धन धरणी और सम्पति सगरी । जो मान्यो अपनाई ।। गुरु०
तन छूटे कुछ संग न जाई । कहा ताही लिपटाई ।। गुरु०
दीन दयाल सदा दुख भंजन । तासों रुचि न बढ़ाई ।। गुरु०
नानक कहत जगत सब मिथ्या । ज्यों सपने रैनाई ।। गुरु०

नहीं ऐसा जनम बारंबार ।। टेक ।।

का जानी कुछ पुण्य प्रगटो तेरा मानुष अवतार ।। नहीं०
घटत छिन छिन बढ़त पल पल जात न लागत बार ।।नहीं०
वृक्ष ते फूल टूट परिहे बहुर न लागत डार ।। नहीं०
बैर वाले सम्हार तन को विषम ऐंडी धार ।। नहीं०
बेड़ा बांधो सुरत को चलि उतरो भव जल पार ।। नहीं०
काम क्रोध हंकार त्रिष्णा तजहु सकल विकार ।। नहीं०
दास नानक मान लीजो नाम को आधार ।। नहीं०

काहे रे बन खोजन जाई ।। टेक ।।

सर्व निवासी सदा अलेपा तोरे ही संग समाई ।।
पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है मुकर माहि जस छाई ।
तैसे ही बसे निरंतर घट ही खोजौ भाई ।।
बाहर भीतर एकै जानों यह गुरु ग्यान बताई ।
जन नानक बिन आपा चीन्हें मिटै न भरम की काई ।।

जो नर दुख में दुख न मानै ।

सुख सनेह अरु भय वहाँ जाके कंचन माटी जगने ।।
नहीं निंदा नही स्तुति जाके लोभ न मोह अभिमाना ।।
हर्ष सो कतें रहै नियारे नाहीं मान अपमाना ।।
आसा मनसा सकल त्याग कै जगतें रहे निरासा ।।
काम क्रोध यही परसे नाहीं तेही घट ब्रह्म निवासा ।।
गुरु किरपा जेहिं नर पै कीन्ही तिनही यह जुगति पिछानि ।।
नानक लीन भयो गोविंद सों ज्यों पानी संग पानी ।।

अविगत गति कछु कहत न आवै ।
ज्यों गूंगहि मीठे फल को रस अंतरगत ही पावे ।
परम स्वाद सबही जु निरंतर अमित तोष उपजावे ।
मन बाणी को अगम अगोचर सो जानै जो पावै ।
रूप रेख गुण जाति जुगति बिन निरालंब मन चकृत धावै ।
सब विधि अगम विचार हि ताते सूर सगुण लीला पद गावे।

(०)

मोसम कौन कुटिल खल कामी ।। टेक ।।

जिन तन दियो ताहि बिसरायो ऐसो नमक हरामी ।।मौसम०
भरि भरि उदर विषयों को धायो जैसे सू कर गामी ।।मौसम०
हरिजन छांडी हरि विमुखन की निस दिन करत गुलामी ।
पापी कौन बड़ो जग मोते सब पतितन में नामी ।। मौसम०
सूर पतित को ठौर कहाँ है तुम बिन श्रीपति स्वामी ।।मौसम०

(०)

मेरो मन अनत कहां सुख पावै ।। टेक ।।

जैसे उड़ी जहाज को पंछी पुनि जहाज पर आवै ।।
कमल नयन का छाड़ी महातम और देव को ध्यावै ।।
परम गंग को छाड़ी पिया सो दुरमति कूप खनावै ।।
जिहि मधुकर अंबुज रस चाख्यो क्यों करील फल खावै ।।
सूरदास प्रभु काम धेनु तजि छेरी कौन दुहावै ।।

(०)

प्रभु मेरे अवगुण चित न धरो ।। टेक ।।

समदरसी प्रभु नाम तिहारो अपने पन ही करो ।।
इक लोहा पूजा में राखत इक घर बधिक परो ।।
यह दुविधा पारस नहीं जानत कंचन करत खरो ।।
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो ।।
जब मिली कै दोउ एक बरन भये सुर सरी नाम परो ।।
एक जीव एक ब्रह्म कहावत सूर श्याम झगरो ।।
अब की बेर मोहि पार उतारो नहिं पन जात टरो ।।

संत तुलसीदास जी की बाणी

भज मन राम चरण सुख दाई ।। टेक ।।

जिहि चरणन से निकसी सुरसरि संकर जटा समाई ।
जटा संकरी नाम परयो है त्रिभुवन तारण आई ।।
जिन चरणन की चरण पादुका भरत रहियो लव लाई ।
सोई चरण केवट धोई लीने तब हरि नाव चलाई ।।
सोई चरण संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ।
सोई चरण गौतम ऋषि नारी परसि परम पद पाई ।।
दंडक वन प्रभु पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई ।
सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृग संगधाई ।।
कपि सुग्रीव बँधु भय व्याकुल तिन जय छत्र फिराई ।
रिपु को अनुज विभीषण निशिचर परसत लंका पाई ।।
सिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक सेष सहस मुख गाई ।
तुलसीदास मारुत सुत की प्रभु निज मुख करत बड़ाई ।।

(०)

रघुवर तुमको मेरी लाज ।। टेक ।।

सदा सदा मैं सरन तिहारी तुमही गरीब निवाज़ ।।
पतित उधारण विरद तुम्हारो स्रवनन सुनी आवाज़ ।।
हौं तो पतित पुरातन कहिय पार उतारो जहाज़ ।।
अघ खंडन दुख भंजन जन के यही तिहारो काज ।।
तुलसीदास पर कृपा कीजे भगति दान देवहु आज ।।

(०)

गाइये गणपति जगवन्दन । संकर सुवन भवानि नन्दन ।।
सिद्धि सदन गज बदन विनायक । कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक।।
मोदक प्रिय मुद मंगल दाता । विद्या वारिधि बुद्धि विधाता ।।
मांगत तुलसी दास कर जोरे । बसहिं राम सिय मानस मोरे ।।

मीरा बाई की बाणी

- पूज्य शकुन्तला जी पदम अलंकार

मन रे परस हरि के चरण ।।
सुभग शीतल कंवल कोमल त्रिविध ज्वाला हरन ।।
दासी मीरा लाल गिरिधर अगम तारण तरण ।।

(०) मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई ।। टेक ।।

जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ।
तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई ।।
छाँडि दई कुल की कानि कहा करि है कोई ।
संतन ढ़िंग बैठि बैठि लोक लाज खोई ।।
अँसुअन जल सींचि सींचि प्रेम बेलि बोई ।
अब तो बेल फेल गई आनंद फल होई ।।
भगति देख राजी हुई जगत देख रोई ।
दासी मीरा लाल गिरिधर तारो अब मोही ।।

(*)

हे री मै तो प्रेम दीवानी मेरो दरद न जाने कोय ।।
घायल की गति घायल जाणै जो कोई घायल होय ।।
जौहरि की गति जौहरि जाणै की जिन जौहर होय ।।
सूली ऊपर सेज हमारी सोवण किस विधि होय ।।
गगन मंडल सेज पिया की किस विधि मिलना होय ।।
दरद की मारी बन बन डोलूँ बैद मिलिया नहीं कोय ।।
मीरा की प्रभु पीर मिटेगी जब बैद साँवलिया होय ।।

(*) मोहे लागी लगन गुरु चरणन की ।। टेक ।।

चरण बिना कछुवे नहीं भावै जग माया सब सपनन की ।।
भौसागर सब सूख गयो है फिकर नहीं मोहि तरनन की ।।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर आस रही गुरु शरणन की ।।

(०)

मैं तो तेरी सरण परी रे रामा ज्यूँ जोडे ज्यूँ तार ।।
अड़सठ तीथरथ भ्रम भ्रम आयो मन नहीं मानी हार ।।
या जग में कोई नहीं अपणा सुणियो श्रवण मुरार ।।
मीरा दासी राम भरोसे जम का फंद निवार ।।

शिव बाबा

ब्रह्म कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय
प्रेषक - बि. के. अनुपम दयाल

सत्यम शिवम सुन्दरम संसार सारं ।
अभयं करम दुख हरं । करूणा अवतारं ।
ज्योतिर्मयम स्वयंभू प्रकृति सुधारम ।
शिव स्मरामी जगत स्वामी निर्विकारं ।
इस जग से अलग रह कर रूहो उस रब से रूह रुहानि करो ॥टेक॥
जो ध्यान तुम्हारा रखता है, तुम भी उसका कुछ ध्यान करो।
हो कर विदेह चुप चाप बहो उस शिव के नेह की धारा में ।
आतम पंछी को उड़ने दो जो बंद है तन की कारा में ॥
शिव परमात्मा के दरस परस का सरस सरस रस पान करो ॥
इस जग से अलग रह कर रूहो उस रब से रूह रुहानि करो॥
कर्मों के बंधन बन्ध जाते हैं जो जाने अन्जाने में ।
है राज योग की अग्नि सक्षम उनको भस्म कराने में ।
अब वर दानी से वर पाकर निज का, परका कल्याण करो ॥
इस जग से अलग रह कर रूहो उस रब से रूह रुहानि करो ।
प्रभु जिन से खुद मिलना चाहे उन लोगों की क़िसमत क्या कहिये ।
शिव परम पिता को बच्चों से कितनी है महोब्बत क्या कहिये ।
गुण भण्डारी से गुण ले कर आओ खुदको गुण वाण करो ॥
इस जग से अलग रह कर रूहो उस रब से रूह रुहानि करो ।

(०)

शिव आपदा हरण करूणा कृपा करण ।
मन आशुतोष शिव का कर सर्वदा स्मरण ॥ - आशुतोष
ऐ साँसो शिव की याद बिना, चलते रहना किस काम का है ॥टेक॥
मेरे प्राणों प्रभु के प्यार बिना, तन में रहना बस नाम का है ॥
प्यासी धरती की प्यास बुझी, बादल बरसे बरसात बनी ।
मुख से सुख का अमृत बरसे, जब मन हर्षे तब बात बनी ।
गुण गान किया न भगवन का, गाते रहना किस काम का है ॥ ऐ०

दुनिया में लाखों आते हैं, आते और जाते रहते हैं ।
पर अमर है जो उपकार करें, और दिल से सेवा करते हैं ।।
मेरे मन ईश्वर के ध्यान बिना फिरते रहना तनमें किस काम का है ।।ऐ

(०)

जोति बिन्दु परमात्मा से ऐ मेरी आत्मा, अब चल करले मिलन ।।टेक।।
परमानन्द का अनुभव कर तू धन्य बना जीवन ।
प्रभु की प्राप्ति का मूल मंत्र है संपूर्ण समर्पण ।
ऐ आत्मा प्रभु को सोंप दे, तू सारा जीवन ।
ओ देख प्रभु तेरे निकट बिराजें करले अभिवादन ।। जोति बिन्दु०
जोति बिन्दु के प्रेम सिंधु में चल आज नहाले ।
परम पिता का प्रेम पात्र बन कर तू शुद्ध वर पाले ।
किरण किरण को निरख नयन से होजा मन में मगन ।।
जोति बिन्दु परमात्मासे ऐ मेरी आत्मा, अब चल करले मिलन ।
परमानन्द का अनुभव कर तू धन्य बना जीवन ।।

(०)

गाईये गुण गान प्रभु का बन सचेतन आत्मा ।। टेक ।।
खोल चक्षु ज्ञान के तुझको मिलेंगे परमात्मा ।।
ज्ञान से ही ध्यान है बिन ज्ञान के मुक्ति नहीं ।
साधना के द्वार तक आये बिना सिद्धि नहीं ।
हो फ़िदा परवान तू महफिल में आया **शिव समा ।**
गाईये गुण गान प्रभु का बन सचेतन आत्मा ।।
रौशनी अंतर में भरले सारे परदों को हटा ।
तेरे द्वारे प्रभु पधारे अपनी पलकों को उठा ।
चाँदनी राहों में बिखरे प्रभु बना है रहनुमा ।।
गाईये गुण गान प्रभु का बन सचेतन आत्मा ।।
मन का नन्दन वन महक जायेगा प्रभु की याद से ।
जिन्दगी खुशहाल होगी साथी प्रभु के साथ से ।
शिव से शक्ति ले बदल दे यह ज़मीं और आसमाँ ।।
गाईये गुण गान प्रभु का बन सचेतन आत्मा ।।

(०)

आंगन में शिव का यह शुभ आगमन है ।। टेक ।।

मिलन की लगन में मगन आज मन है ।।

पुलकित पवन है यह गुंजित गगन है ।

प्रभु की प्रतिक्षा में सारा भुवन है ।।

आंगन में शिव का यह शुभ आगमन है ।।

घड़ी यह बड़ी दे रही सुख सघन है ।।

धड़कन की तारें तुझ से जुडी हैं । राहों में अपलक निगाहें गडी हैं ।

युगों से जिसे हमने सर्वत्र ढूँढा ।

जन्म जन्मों से जिसको जीवन भर जी भर के पूजा ।

ना कोई दूजा मेरा प्राण धन है ।मिलन की लगनमें मगन आज मन है।।

आंगन में शिव का यह शुभ आगमन है

दृष्टि से सृष्टि सजने लगी है ।

वरदानों की वृष्टि होने लगी है ।

महका चमन चहका हर अंजुमन है ।

आंगन में शिव का यह शुभ आगमन है

---

(०)

पितुमात सहायक स्वामी सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो ।

जिन के कछु और आधार नहीं तिन के तुम ही रखवारे हो ।। पितु०

सब भाँति सदा सुख दायक दुख दूर्गुण नाशन हारे हो ।

प्रति पाल करो सगरे जगको, अतिशय करुणा उर धारेहो ।। पितु०

भूलिहें हम ही तुमको तुमतो हमरी सुधि नाहीं दिसारे हो ।

उपकारण को कुछ अंत नहीं छिन छिन जो विस्तारे हो ।। पितु०

महाराज महा महिमा तुम्हरी मुझसे बिरले बुद्धवारे हो ।

शाँति निकेतन प्रेम निधे मन मंदिर के उजियारे हो ।। पितु०

जीवन के तुम जीवन हो इन प्राणन के तुम प्यारे हो ।

सों प्रभु पाये प्रताप हरि तेहि के तुम आप सहारे हो ।। पितु०

परम संत नन्दु भाई जी महाराज की बाणी

प्रार्थना

तेरी दया का भरोसा है भारी । तूने मेरे सब काज है संभारी ।।
मेरे दाता दीन दयाल बने । तुम ही को लाज है हमारी ।।
मैं चरणों में आय पड़ा तेरे । सतगुरु तेरे चरणों की है बलिहारी ।।
मैं तो तेरी दया का पात्र बना । तेरा नाम ही है मंगल कारी ।।
तू राधास्वामी मेरा निज नाम हुआ । नाम तेरा बड़ा है परम हितकारी ।।

(०)

साखी

नाम जो रत्ति एक है पाप जो रत्ति हज़ार ।
एक रत्ति घट संचरे जार करे सब छार ।।

राधास्वामी नाम गास, कर वासना का त्याग ।
नाम को सुन घट में सदा, जागे जीव के भाग ।।

नाम से आवें क्रांति चमक दमक मुखनूर ।
शिवजी ने धारण किया चन्द्र ललाट भरपूर ।।

नानक कबीर राधास्वामी ने महिमा गाई नाम ।
शब्द सुरत का भेद दे निज घर में बिश्राम ।।

कलजुग का धर्म यह है नाम गुरु से ले ।
सुरत को नाम में दे पिरो बेफ़िकरी गहले ।।

नाम से आवे शाँति दुख संकट कट जाय ।
निज आपे का ज्ञान हो भूल भरम मिट जाये ।।

नाम गुरु की युक्ति है भक्ति करे फल लाये ।
आवागवन को दे नसा मुक्ति अमर पद पाये ।।

शिव दयाल सतसंग में नाम का भेद बतलाये ।
धर्मों से मुक्ति दिया अपने चरण लगाये ।।

गुरु ज्ञान से पहुँचा राधास्वामी धाम ।
सुरत शब्द में मिल गई आठ पहर बिश्राम ।।

राधास्वामी नाम गा और ज़तन सब त्याग ।
गुरु के चरणन शीश धर जागे पूरण भाग ।।

PARAM SANT DAYAL SWARUP NANDU BHAI JI **MAHARAJ**

परम सन्त दयाल स्वरुप नन्दु भाई जी महाराज

तुम नाम की महिमा का गीत गाओ जो कलियुग का धर्म है ॥

नाम भेद है सबका सारा । नाम दुखों से दे छुटकारा ॥
नाम ले तू त्रिलोकी पारा । तू ढूँढें जिभ्या रस द्वारा ॥
नाम ओम है नाम है सोहंग । नाम ही सारंग नाम ही रारंग ॥
नाम सत्त है सत की धुन । नाम की धुन ऊँचे चढ सुन ॥
पाँच नाम का लेकर भेद । गा निज नाम मिटे सब खेद ॥
बिन गुरु नाम हाथ नहीं आवे । गुरु मिले तब नाम बतावे ॥
नाम श्रवण कर नाम मनन । नाम धार चित निध्यासन ॥
साक्षात जब नाम नहीं करेगा । तो जग के लोभ मरेगा ॥
राधास्वामी संत स्वरूप । नाम दान दे मेटा भव कूप ॥

जननी जने तो संत जन असंतों का क्या काम ।
आवश्यकता है मनुष्यों की करें भारत में नाम ॥

(०)

आनन्द की साखी

राधा स्वामी खुश रखेंगे सबको अब आनन्द में ।
नन्दु आनन्द रूप बन कर आयेंगे इस जगत में ॥
आत्मा का रूप है आनन्द आनन्द उन्हे मिलता है ।
जो आत्मा में बसते हैं, वह आत्मा के रूप हैं ॥
गुरु देव राधा स्वामी रक्षक तुम्हारे आनन्द ।
सब काम पूरे होंगे, हो प्राप्त परम आनन्द ॥
गुरु पद कमल की वन्दना, गुरु पद कमल की सेव ।
आनन्द पूजे गुरु को और न दूजा देव ॥
गुरु वाणी प्रत्यक्ष है, प्रश्न उत्तर की खान ।
आनन्द सोच विचार लो, उसी से पावे ज्ञान ॥
मन में बन्धन मुक्ति की, देख पडी जब खान ।
आनन्द सत्पुरुष की दया सूझ पड़ा गुरु ज्ञान ॥
गुरु मानुष नहीं, देव नहीं, ईष ब्रह्म गुरु नाहीं ।
आनन्द सब में व्याप्त गुरु, मूर्ख समझें नाहीं ॥

प्रार्थना

मन में रहते हो मगर तेरा पता पाया नहीं ।
उमर गुज़री ढूँढने में पर तू हाथ आया नहीं ।।
गर न होता ज्ञान मुझको तसकीन पाता प्रेम से ।
हो गया मजबूर दाता खोज में पाया नहीं ।।
अब दया कर भक्ति दे तू सुरत चरणों में रहे ।
आत्मा को शाँति मिले प्रकाश से और शब्द से ।।
आता रहता शरीर मन में खोजाति मेरी शाँति ।
शरीर मन कमज़ोर दोनों पूर्णता इनमें नहीं ।।
इस लिये है प्रार्थना चरणों में अपने लीजिये ।
शब्द स्वरूप की भक्ति देकर मुझको अपना कीजिये ।।
पाया दुख सुख खेल में मन शरीरके बंधन में आ।
राधास्वामी परम तत्व अपने चरणों में मिला ।।

(०)

ओहो तुम खुद हो सुख के रूप ।। टेक ।।

सुख तुम में, तुम खुद सुख के रूप ।
भरम अज्ञान से डूबे हो तुम मन के कूप ।। तुम०
त्रिकुटि में चढ ज्ञान विचारों जो चाहो सो विचारो ।
सुन्न में जाकर मस्ती लो, मस्ती रूप निहारो ।। तुम०
क्यों बने नादान अपने इज्जत को तुम गवाँओ ।
मत्थे टेको धन लुटवाओ रोज़ रोज़ सतसंग कराओ ।। तुम०
तुम्हरे अंतर माल खजाना कहे फ़ख़ीर मस्ताना ।
तुम में सब कुछ तुम ही ज्ञान और रूप अज्ञाना ।। तुम०
तुम हो आत्म और तुम्हारा रूप है आत्म रूप ।
चेतन्य उजले रंग रंगे हो और हो अनहद भूप ।। तुम०
मैने जीवन अपना गुज़ारा पाया वार और पारा ।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी कहूँ बचन सार का सारा ।। तुम०

मानवता का झंडा रहे बुलन्द ।।

झंड़ा ऊँचा बुलन्द हमारा । अगम लोक में **सतगुरु** गाड़ा ।।
अगम लोक है शब्द प्रकाश । सबकी आग और सबकी आस ।।
अगम लोक के हम सब वासी । शब्द ब्रह्मा के अणु प्रकाशी ।।
सुरत शब्द से मिल कर खो गई । गुरु से मिलकर गुरु की हो गई ।।
राधास्वामी सतनाम अनामी । आप आप है अद्भुत स्वामी ।।
आप आप में आप समानी । न कहीं आनी न कहीं जानी ।।
परम संत धरा रूप फ़क़ीरा । निज स्वरूप के ज्ञान में धीरा ।।
दुखी जीव को चरण लगाया । आप आप में आप समाया ।।
भरम मिटाये सतसंग देकर । संत सत गुरु वक्त के होकर ।।
बीत राग है पुरुष अमूला । बाणी कहकर सबको तोला ।।
जो जो जीव चरण में आये । भव सागर से पार लगाये ।।
साहस हिम्मत अपना देकर । घर पहूँचाया युक्ति बताकर ।।
ले सतगुरु की सहायता, घट में साध गुरु जोग ।
इन्सान बनकर मानव, कर शाँति संजोग ।।

(०)

मानव जाति के कल्याण के लिये प्रार्थना

हम सब बालक प्यारे मालिक, तेरी महिमा गायेंगे ।
भले सयाने लड़के बनकर, मानवता अपनायेंगे ।।
माता पिता की सेवा करके, भाई बहन से प्यार ।
प्रेम का ज़ीवन काटेंगे और घर को स्वर्ग बनायेंगे ।।
मानवता ही धर्म है, सच्चा मानवता ही पंथ ।
इसी राह पर चलकर, हम भी मानवता फैलायेंगे ।।
मानवता की शिक्षा क्या है, मानवता का ज्ञान ।
मानवता के ज्ञान को पाकर मानव पदवी पायेंगे ।।
यह शिक्षा इस युग की शिक्षा दी है संत फ़क़ीरने ।
इस शिक्षा को पकर मालिक हम तेरे बन जायेंगे ।।
मानवता है शान बड़ाई सारी मानव जाति की ।
खेल था खेल गया दाता आप संभाल करेंगे ।।

मानवता का संदेश

मानवता के झंड़े कर जोड़ करें प्रणाम ।। टेक ।।

प्राणी मात्र का एक निशान, मानवता की शान गुमान ।
एक मालिक की सब संतान जुग जुग उड़े ऊँचा आसमान ।
तू प्राण है सबका तन मन आत्माराम ।। **मानवता के झंडे०**
वह मालिक अति महान, पा न सका उसका स्थान ।
तुझको बाँटा टुकडे आन, मानवता की माँस पल जान ।
अंधकार के बस में, बनगये धर्म तमाम ।। **मानवता के झंडे०**
जब देखा तेरा यह हाल, माँ वसुँधरा हुई बेहाल ।
दरिया उमड़ी पुरुष अकाल, प्रगटे जग में परम दयाल ।
भूतल ने गढ़ा तुमको मानवता के नाम ।। **मानवता के झंडे०**
ऐ मानव तू मानव बन, हिन्दु मुसलमान न बन ।
मालिक बस रहा सब तन, जिसकी सेवा करे सो जन ।
निज परिवार की सेवा भक्ति है निष्काम ।। **मानवता के झंडे०**
सचरित्रता के मारग आ, आशावादि ख़याल बना ।
सहित विवेक धर्म कमा, फिर मालिक को सकेगा पा ।
जियो और जीने दो, तू उड़ता, देता रहे पैग़ाम् ।। **मानवता के झं**
रंग तीन से शोभावान ब्रह्म जीव और माया जान ।
सतचित आनन्द की खान, भारत वर्ष का यही निशान ।
नीचे इसके आवें जीव त्रिलोकी धाम ।। **मानवता के झंडे०**
चमके सूरज तीन कमाल, कबीर नानक शिब्रतलाल ।
राधास्वामी नन्दु दयाल, मानवता का दिया खयाल ।
तीन लोक उडाना तुमको यह परम दयाल का काम ।। **मान०**
युग युगान्तर फैराता रहे, मानव सेवा करता रहे ।
राग एकता गाता रहे, दया दयाल की पाता रहे ।
सुख पावें संसारी दिन दिन प्रातः शाम ।। **मानवता के झंडे०**
मानवता के संत ने आ, इनसान बनो आदेश दिया ।
जीवन की आधारशीला, रोग सोग की एक दवा ।
संदेश मेरा पहुँचा दो, देश देशांतर नगरग्राम ।। **मानवता के०**
अद्भुत झंड़ा जग में आया इंसान बनो अस नाम धराया ।
जग कल्याण का रूप रचाया, एसा सतगुरु वक्त बताया ।
आओ भाई युवको, सब करें इसे प्रणाम ।। **मानवता के झंडे०**

उसकी मौज नज़र में आवे

प्रेम की आँख और दिल से देखें, फिर मौज ही मौज भावे ।
हानी लाभ उस प्रेमी को कुच्छ भी न सतावे ।।
मौज में तो मौज बडी है कोई कोई समझ पावे ।
तभी तो पीरे मोग़ाँ दिल से मोज मालिक इक गावे ।।
मौज मालिक ही वह मंत्र है जो मुसीबत में काम आवे ।
मौज मालिक की मौज समझ कर मुसीबत न सतावे ।।
ज़िंदगी में तो कुछ पता नहीं क्या मालूम क्या हो जावे ।
साँस का भी क्या भरोसा, आवे आवे न आवे न आवे ।।
मौज की राह जो चला पंथी, मोज से मंज़िल पावे ।
मोज में रह कर वह निस दिन अपने करम कटावे ।।
बासद जबाँ पीरे मुगाँ के दाता शिव जी यही समझावे ।
एक दिन मौज से मौज बन कर धुरपद गीत को गावे ।।

(०)

शरणागत बिन कोई चारा नहीं, मौज मालिक बिन सहारा नहीं ।
जप तप संजम कोई लाख करले, उसका तो मिलता किनारा नहीं ।।
जिस्म दिल और जान जब तक है, ग्रहस्थ से कोई न्यारा नहीं ।
सहारा मिला बेसहारे का जिसको, चले माया मोहका आरा नहीं ।।
ऐसा सहारा उसी को मिलेगा जिसे यह संसार प्यारा नहीं ।
छोडे जो दिल को दिल से, फिर तो भवपार, डूबे मंझधारा नहीं ।।
कथनी करनी एक नहीं गर तो खुद को खुद ही प्यारा नहीं ।
मौज मालिक बिन पीरेमुगाँ सुन अनहद अंदर बजे एकतारा नहीं ।।

(०) **मैं अपने बलि बलि जाऊँ ।।**

अपने आप में सुंदर बना अब कैसे तुम्हे बताऊँ ।
अपना आपा हुआ जो अपना अपने में रहाऊँ ।।
आपा अपना आप भी अपना, ग़ैर भी अपना अपनाऊँ ।
अपने मन में अपने खयाल से शीतलता में नहाऊँ ।।
रैन दिवस सराहूँ निःशंकित मौज सदा मनाऊँ ।
सतगुरु कहा अपना आपा तब राधास्वामी गाऊँ ।।

मनुआ प्रेम से उमर गुज़ार ।

अपने आप में आपे को करके कतल न मार ।।
निस दिन दौड़ संग्रह करने क्या देगा हुकुम तू टार ।
भाग्यम फलती सर्वत्र इसका करे न विचार ।।
जो कुछ दे, दे सो कुछ ले ले, समझले वही करोड दीनार ।।
धीरज सुख शाँति से होगी तेरी नय्या पार ।
झूट न बोलना हृदय न उबालना यही धन है अपार ।
पीर मोगाँ के दाता राधास्वामी तू मेरा दातार ।।

(०)

पुजारी अपनी पूजा में लाग ।। टेक ।।

ऐसा अद्भुत ठाकुर द्वारा ठाकर में ठाकुर से न्यारा ।
जितना हलका उतना भारा, जहाँ चलो वहाँ चलता सारा ।।
ऐसेको न त्याग पुजारी अपनी पूजा में लाग ।।
चला चल तू इसके अंदर नजर तुझे आवे एक बंदर ।
बंदर दिखलावेगा मंदिर या में बैठे श्याम सुन्दर ।।
फिर तो जागे पूरण भाग, पुजारी लाग सकेतो लाग ।
पुजारी अपनी पूजा में लाग ।।

(०)

मनुआ ऐसा गा तू गीत ।। टेक ।।

बन जाये जिस से तेरा श्याम सुन्दरवा मीत ।
तंबूरा अपना बना ले मन को सब तारों को मिला ले ।।
श्याम सुन्दर को उसमें बसाले, यह है प्रेम की रीत ।
इस जग में कुछ तो कमाले, लुटा दे सब कुछ उसको पाले।।
अपने सिर की बाजी लगाले, फिर तो तेरी जीत ।
अंधकार में होगा उजियारा, सूझेगा सब संसारा ।।
पीरे मोग़ाँ मृदंग बाजे बीन सितारा, सुन अनहद संगीत ।।
* चल मन अब तू श्याम की ओर ।
सब जग का रक्षक वह ही, वही है चित चोर ।।
तर गये जाकर चरण शरण में पाप किये जिन घोर ।
पतित पावन श्याम नाम वाही का निरखे पाप न मोर ।
अपने जीवन की नय्या विश्वास सागर में बोर ।
पीर मोग़ाँ मिट जायेगा झगडा मोर और तोर ।।

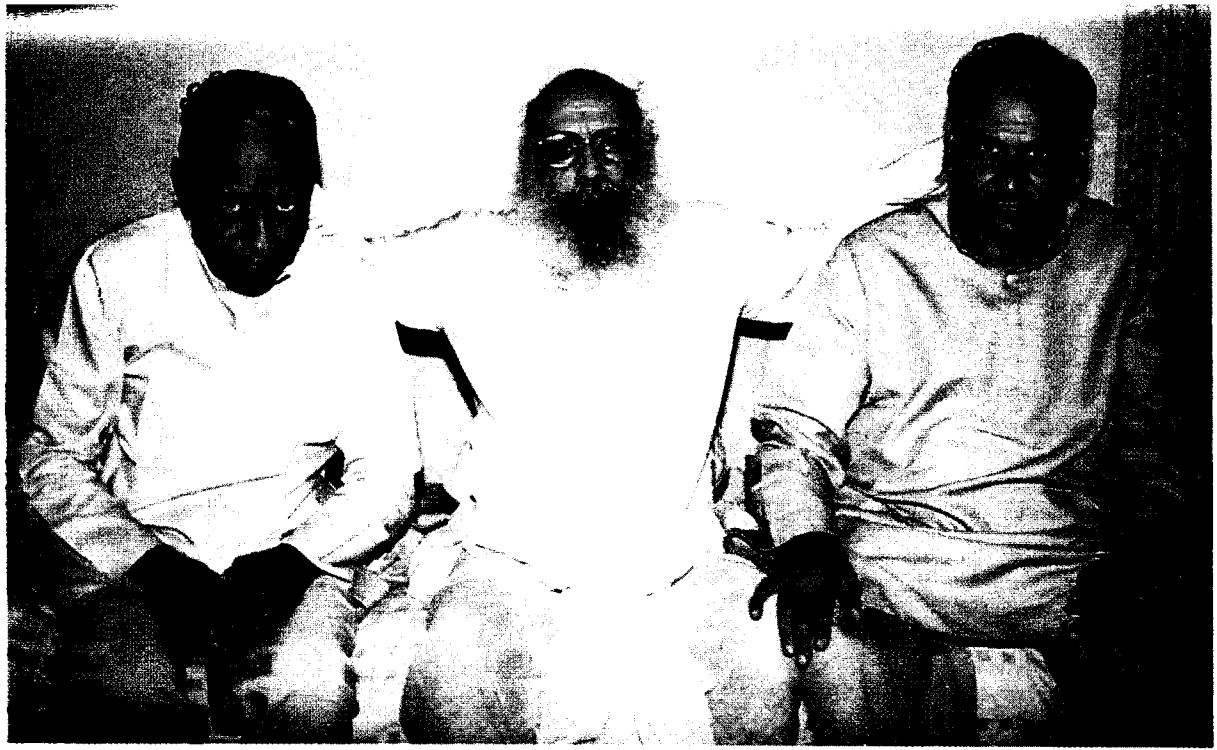

परम संत दयाल शिव मंगल सिंह जी महाराज,
परम संत हुज़ूर पीरे मोग़ाँ जी महाराज, (दिल्ली)
परम संत महात्मा कबीर जी महाराज (दिल्ली)

यह प्रेम सदा भरपूर रहे राधास्वामी तुम्हारे चरणों में ।
दुख संकट भव का दूर रहे, राधास्वामी तुम्हारे चरणों में ।।
आँखों में तेरा नूर रहे और मन मेरा मसरूर रहे ।
मन ध्यान में हरदम चूर रहे, राधास्वामी तुम्हारे चरणों में ।।
तेरा ही निस दिन ध्यान रहे, और मन मन्दिर स्थान रहे ।
मेरी अर्जी सदा मंजूर रहे, राधास्वामी तुम्हारे चरणों में ।।
सब में है सब से न्यारा है, आँखों का सबका तारा ।
चित भक्ति में बा शऊर रहे, राधास्वामी तुम्हारे चरणों में ।।
अब एक तुम्हारी आसा है, कुछ और नहीं अभिलाशा है ।
चित हर दम पेश हुजूर रहे, राधास्वामी तुम्हारे चरणों में ।।
अज्ञान का परदा दूर रहे, दिल प्रेम में हर दम चूर रहे ।
पद पदम की बन कर धूर रहे, राधास्वामी तुम्हारे चरणों में ।।

(०)

ओ राधास्वामी दीजिये अब मुझको सहारा ।
आता नहीं नजर में मेरे हाय किनारा ।
झूटी नहीं सच्ची है मेरी प्रेम कहानी ।
कर जोड के कहता हूँ सुनो मन की जबानी ।
कब टूटेंगे बंधन मेरे क्यों मुझको बिसारा ।। आता नहीं०
यह प्रेम का मंदिर है मेरे मन में समाजा ।
तू नाम सनेही है मेरी बिगडी बनाजा ।
तू प्राणों का प्यारा है मेरी आँख का तारा ।। आता नहीं०
शबरी मीरा को तूने पार लगाया ।
क्यों मेरे तारने में भला देर लगाया ।
हर रोज बिनती करता है यह दास तुम्हारा ।। आता नहीं०
पद पद्म में पडा हूँ हर दम संभाल हो ।
ओ राधास्वामी सतगुरु दाता दयाल हो ।
तू शब्द योग नाव चढ़ा जीवों को तारा ।। आता नहीं०

ओ गणपति गिरजा सुत शिव नन्द कुमारा ।। टेक ।।
संकट को मेरे दूर करो दे के सहारा ।।
मंजधार में नय्या है मेरी पार लगाना ।
है भँवर का खटका मुझे भव दुख से बचाना ।
अज्ञान अंधेरा है नहीं सूझे किनारा ।। **ओ गणपति० ।१।**
अज्ञान के बस लोग तुम्हे भूल रहे हैं ।
और भरम हिंडोले में पडे झूल रहे हैं ।
जो नाम लिया तेरा तभी विघ्न को टारा ।। **ओ गणपति० ।२।**
मन मूशक वाहन बना करते हो सवारी ।
यह मन मेरा चंचल है बडा मूढ विकारी ।
कर कर के जतन थक गया इस मन से हूँ हारा ।। **ओ गण०।३।**
कैलास गिरि पर है सदा बास तुम्हारा ।
जो सुन्न शिखर चढते हैं करते हैं नज़ारा ।
जहाँ ज्ञान की बहती है सदा गंग की धारा ।। **ओ गणपति० ।४।**
तुम राधास्वामी सतगुरु शंकर के रूप हो ।
सब देवों के सरदार और गणों के भी भूप हो ।
हर काम में लेते हैं प्रथम नाम तुम्हारा ।। **ओ गणपति० ।५।**

(०)

महिमा सतसंग की हमसे सुना लो जिसका जी चाहे ।। टेक ।।
करम को काट कर जीवन बनालो, जिसका जी चाहे ।।
तमन्ना गर है जीवन मुक्त की हालत में आने की ।
तो सेवा प्रेम से गुरु को रिझालो जिसका जी चाहे ।। **महि०**
सफ़ीने से नहीं संबन्ध सिर्फ यह इल्म सीना है ।
अमल कर खुद इसको आज़मालो जिसका जी चाहे ।। **महि०**
उलट कर आँख की पुतली नज़ारा देख क़ुदरत का ।
समाधी सुन्न में जा कर लगा लो जिसका जी चाहे ।। **महि०**
संत मत वालों को संदेश यह है राधास्वामी का ।
बहती गंगा है सतसंग की नहा लो जिसका जी चाहे ।। **महि०**

राधास्वामी नाम धुन

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।टेक।।

अलख अगम और अनामी
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।

परम संत का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया ।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुरपद धामी ।।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।

बनकर आये परम फ़क़ीर, हरने सब जीवों की पीर ।
परम दयाल दानी वीर, नाम दान के दानी ।।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।

राम भी हो और कृष्ण भी तुम । तुम महावीर बुद्ध गौतम ।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी ।।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।

मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार ।
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामी नमामी नमामी ।।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।

दाता दयाल जी के प्यारे तुम मानव के रखवारे तुम ।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सबके अंतरयामी ।।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।

मंगलाचरण

ओम गुरु देव महा, जय जय जय गुरु देवा ।
परम दयाला पावन चरिता, शुभ मंगल मय गुरु देवा ।। ओम जय०
आदि अनादि युगादि है तू जगदा धारा ।
पार ब्रह्म परमेश्वर परम ज्योति, तू सबा आधारा ।। ओम जय०
सत्त पुरुष तुम सतगुरु दाता, सच्चिदानन्द मूरति ।
मंगल मय शुभ मंगल दाता, मंगल प्रद ज्योत विभूति ।। ओम जय०
जागृत स्वप्न सुषुप्ति से है परे बासा तेरा ।
सत्तधाम का तू बासी राधास्वामी धाम तेरा ।। ओम जय०
जीव काज स्वामी जग में आये बनकर परम दयाला ।
दीन दुखी को अंग लगा बचन सुनाया बन आनन्द दयाला ।। ओम जय०
राधास्वामी प्रेम भक्ति का पंथ दिखाये, ज्ञान की ज्योत जला ।
निज दया से शरणागति का दे आसरा ।। ओम जय०

****

सामूहिक प्रार्थना

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी गाईये ।। टेक ।।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ध्याइये ।।
कबीर चरण कमल नमामी दरस आदि संत पाइये ।।
गुरु नानक देव पद स्वरोज शीष झुके, सत्तनाम पाइये ।।
अवतार धार स्वामी शिव दयाल सिंह संत सतगुरु पाइये ।।
दया मेहर शालिग्राम सतसंग तीर्थ राज नहाइये ।।
अनहद दयाल बाणी ''शिव'' सुन सुरत शब्द योग चित लाइये ।।
नन्दु दयाल स्वरूप दुलार से कहें सेवा भाव चित लाइये ।।
प्रेम सिंध परम दयाल प्रेम से कहें प्रेम भाव उर लाइये ।।
परम दयाल के वचनामृत सुन मानवता जोत जगाइये ।।
पीरे मुग़ाँ की राग में राग अनहद फ़िर सुनाइये ।।
दरस परस कर दयाल आनन्द, हर्ष उल्हास पाइये ।।
अमंगल भाव तज शिवमंगल गुरु चरण में त्रय ताप नसाइये ।।
विजय दयाल शून्यो जी की कृपा दृष्टिसे सुन्न समाध रचाइये ।।
हे राधास्वामी सतगुरु दीन की पुकार सुन करुणा चित लाइये ।।
सतगुरु राधास्वामी पद कमल में शीश झुकाइये ।।

लताओ पुष्प बरसाओ मेरे भगवान आये हैं ।
ऐ कोयल मीठे स्वर गाओ, मेरे भगवान आये हैं ।।
लगी थी आस सदियों से, हुये हैं आज वें दर्शन,
निभाने आज वादे को, पधारे खुद पतित पावन ।
मेरे कष्टोंको हरने को, यह नंगे पाँव आये हैं ।। लताओ०
करूँ कैसे तेरी पूजा न मन फूला समाता है ।
कहाँ जाऊँ मैं क्या लाऊँ समझ कुछ भी नहीं आता है ।
मुझे अपने ही रंग रंग कर, बढ़ाने मान आये हैं ।। लताओ०
न चाहिये दौलत मुझको, तेरी भक्ति मैं चाहता हूँ ।
मेरे सिर हाथ हों तेरा, यही वरदान चाहता हूँ ।
अधम मुझ नीच पापी का, करने उद्धार आये हैं ।। लताओ०

- आचार्य वेंकटेश्वर गण मुकुलवार, अहेरी

****

तुम नाम जपन क्यों छोड दिया ?

क्रोध न छोडा झूठ न छोडा सत्यवचन क्यों छोड दिया ?
झूठे जग में दिल ललचाकर असल वतन क्यों छोड दिया ?
कौडीको तो खूब संभाला, लाल रतन क्यों छोड दिया ?
जिन सुमिरन से अति सुख पावे, तिन सुमिरन क्यों छोड दिया ?
रे मानव एक भगवान भरोसे तन मन धन क्यों छोड दिया ?

गुरु दरियाव की महिमा भारी, कर स्नान तर जाना हो ।।टेक।।
प्रेमी जन सब जुड मिल आये, उत्सव परम महाना हो ।।
जल प्रवाह बचन की धारा सतसंग घाट बिठाना हो ।।
मंगल राग गुरु की स्तुति उमंग उमंग नित गाना हो ।।
पूजा गुरु की सेवा गुरु की, हिय गुरु ज्योत जगाना हो ।।
प्रेम ठाल में आरत लेकर गुरु छबि निरख धुलाना हो ।।
तीन ताप की तपन बुछाई शाँत चित बन जाना हो ।।
चंचल से जब हो गये निश्चल, सूझा अगम ठिकाना हो ।।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी कर स्नान मग्राना हो ।।

अनुक्रमणिका

अ

	पृष्ठ संख्या
अपने घट दियन बार रे	५
अब मैं भूला रे भाई	६
अपनी दो पहचान तुम मेरे सतगुरु दाता	२१
अब मैं नाथ शरण में आया	७२
अपनी शरण में ले लो मेरे कृपाल दाता	७६
अपनी ओर निहार री अलबेली सुरतिया	८२
अज्ञान का फंद कटा देना, गुरु ज्ञान ज्योति जगा देना	११३
अंत समय क्यों रोया है	१२६
अविगति कुछ कहत न आवे	१४६
मैं अपने बलि बलि जाऊँ	१५७

आ

आनन्द मंगल साज साज कर आरत करना	९*
आओ मेरे सतगुरु हे मेरी जान	१३
आखिर मौज पे बात आवे	२९
आँखों का तारा सबका सहारा हति चित से तू प्यारा है	४७
आओ गुरु की शरण फ़क़ीरवा	५८
आया तेरी शरण में रख मेरी लाज प्यारे	६०
आस लगी तुम्हारे दरस की दरस दिखा दो नाथ	७०
आई शाम भज गुरु का नाम	७९
आप तरें औरों को तारें यह साधु की महिमा	८४
आपके अर्पण है यह मेरा नहीं तन आपका	९३
आत्मा मेरी सुखी है देह सुख का ठाम है	११३
आसकर गुरु की दया की हो निराश न तू कभी	११८
आसा इस भव के कारागार में सचमुच जम की फाँसी है	११९
आये थे रोते चले हंसते हुये संसार से	१२३
आये गुरु शरणागत आये	१२४
आजा शरण बचा लूँगा	१२९
आली री गुरु भक्ति बिना नर जीवन निश्फल	१४०
आंगन में शिव का शुभ आगमन है	१५१

राधास्वामी नाम धुन

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।टेक।।

अलख अगम और अनामी
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।

परम संत का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया ।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुरपद धामी ।।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।

बनकर आये परम फ़क़ीर, हरने सब जीवों की पीर ।
परम दयाल दानी वीर, नाम दान के दानी ।।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।

राम भी हो और कृष्ण भी तुम । तुम महावीर बुद्ध गौतम ।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी ।।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।

मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार ।
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामी नमामी नमामी ।।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।

दाता दयाल जी के प्यारे तुम मानव के रखवारे तुम ।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सबके अंतरयामी ।।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।।

मंगलाचरण

ओम गुरु देव महा, जय जय जय गुरु देवा ।
परम दयाला पावन चरिता, शुभ मंगल मय गुरु देवा ।। ओम जय०
आदि अनादि युगादि है तू जगदा धारा ।
पार ब्रह्म परमेश्वर परम ज्योति, तू सबा आधारा ।। ओम जय०
सत्त पुरुष तुम सतगुरु दाता, सच्चिदानन्द मूरति ।
मंगल मय शुभ मंगल दाता, मंगल प्रद ज्योत विभूति ।। ओम जय०
जागृत स्वप्न सुषुप्ति से है परे बासा तेरा ।
सत्तधाम का तू बासी राधास्वामी धाम तेरा ।। ओम जय०
जीव काज स्वामी जग में आये बनकर परम दयाला ।
दीन दुखी को अंग लगा बचन सुनाया बन आनन्द दयाला ।। ओम जय०
राधास्वामी प्रेम भक्ति का पंथ दिखाये, ज्ञान की ज्योत जला ।
निज दया से शरणागति का दे आसरा ।। ओम जय०

****

सामूहिक प्रार्थना

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी गाईये ।। टेक ।।

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ध्याइये ।।
कबीर चरण कमल नमामी दरस आदि संत पाइये ।।
गुरु नानक देव पद स्वरोज शीष झुके, सत्तनाम पाइये ।।
अवतार धार स्वामी शिव दयाल सिंह संत सतगुरु पाइये ।।
दया मेहर शालिग्राम सतसंग तीर्थ राज नहाइये ।।
अनहद दयाल बाणी ''शिव'' सुन सुरत शब्द योग चित लाइये ।।
नन्दु दयाल स्वरूप दुलार से कहें सेवा भाव चित लाइये ।।
प्रेम सिंध परम दयाल प्रेम से कहें प्रेम भाव उर लाइये ।।
परम दयाल के वचनामृत सुन मानवता जोत जगाइये ।।
पीरे मुग़ाँ की राग में राग अनहद फ़िर सुनाइये ।।
दरस परस कर दयाल आनन्द, हर्ष उल्हास पाइये ।।
अमंगल भाव तज शिवमंगल गुरु चरण में त्रय ताप नसाइये ।।
विजय दयाल शून्यो जी की कृपा दृष्टिसे सुन्न समाध रचाइये ।।
हे राधास्वामी सतगुरु दीन की पुकार सुन करुणा चित लाइये ।।
सतगुरु राधास्वामी पद कमल में शीश झुकाइये ।।

लताओ पुष्प बरसाओ मेरे भगवान आये हैं ।
ऐ कोयल मीठे स्वर गाओ, मेरे भगवान आये हैं ।।
लगी थी आस सदियों से, हुये हैं आज वें दर्शन,
निभाने आज वादे को, पधारे खुद पतित पावन ।
मेरे कष्टोंको हरने को, यह नंगे पाँव आये हैं ।। लताओ०
करूँ कैसे तेरी पूजा न मन फूला समाता है ।
कहाँ जाऊँ मैं क्या लाऊँ समझ कुछ भी नहीं आता है ।
मुझे अपने ही रंग रंग कर, बढ़ाने मान आये हैं ।। लताओ०
न चाहिये दौलत मुझको, तेरी भक्ति मैं चाहता हूँ ।
मेरे सिर हाथ हों तेरा, यही वरदान चाहता हूँ ।
अधम मुझ नीच पापी का, करने उद्धार आये हैं ।। लताओ०

- आचार्य वेंकटेश्वर गण मुकुलवार, अहेरी

****

तुम नाम जपन क्यों छोड दिया ?

क्रोध न छोडा झूठ न छोडा सत्यवचन क्यों छोड दिया ?
झूठे जग में दिल ललचाकर असल वतन क्यों छोड दिया ?
कौडीको तो खूब संभाला, लाल रतन क्यों छोड दिया ?
जिन सुमिरन से अति सुख पावे, तिन सुमिरन क्यों छोड दिया ?
रे मानव एक भगवान भरोसे तन मन धन क्यों छोड दिया ?

गुरु दरियाव की महिमा भारी, कर स्नान तर जाना हो ।।टेक।।
प्रेमी जन सब जुड मिल आये, उत्सव परम महाना हो ।।
जल प्रवाह बचन की धारा सतसंग घाट बिठाना हो ।।
मंगल राग गुरु की स्तुति उमंग उमंग नित गाना हो ।।
पूजा गुरु की सेवा गुरु की, हिय गुरु ज्योत जगाना हो ।।
प्रेम ठाल में आरत लेकर गुरु छबि निरख धुलाना हो ।।
तीन ताप की तपन बुछाई शाँत चित बन जाना हो ।।
चंचल से जब हो गये निश्चल, सूझा अगम ठिकाना हो ।।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी कर स्नान मग्राना हो ।।

ज्ञान दीजे ज्ञान दाता ज्ञान के भंडार से	२७
ज्ञान दीजे ज्ञान दाता ज्ञान के भंडार से	१०४
संत कबीर दास जी के शब्द	५,६,१४३-१४४
गुरु नानक देव जी महाराज के शब्द	७,१४५
स्वामी शिव दयाल सिंह जी महाराज की बाणी	८-१०
हुजूर शालिग्राम जी महाराज की बाणी	११-१३
परम संत परम दयाल जी महाराज की बाणी, मानवता संदेश	२२,२३,१५४-१५
दयाल स्वरूप नन्दु भाई जी महाराज के शब्द	२४-२७,१५२-१५
हुजूर पीरे मोगाँ जी महाराज के शब्द	२८-३०, १५७,१
सतगुरु स्वरूपा माता निर्मला जी की गंगोत्री से	३१-३२
मीरा बाई के शब्द	१०, १४८
सूर दास जी के शब्द	१४६
संत तुलसी दास जी	१४७
शिव बाबा - (ब्रह्म कुमारी)	१४९,१५१
पूज्य पदम सिंह जी महाराज के शब्द	१५९,१६०

सतगुरु भेद बत
सतगुरु परम द
सतगुरु कीजे
सजनी सुमिरन
सजनी आँखें
सजनी तूने म
सुन फ़क़ीर अ
सबका आदि
सुनो मेरे भाई
साधु गुरु का
सुन फ़क़ीर ह
सदा नाम से
सखी लख म
साधु सतगुरु
सतगुरु हैं,
सतसंग तीर
संगत कर
सतसंग सुख
सजन तू क
साध जनम
सुरत मेरी
सुनो बिनती
साधु की सं
साधु मुझक
सबके घट
सब मन क
सब विधि
सच्ची बन
सजनी शी
सबसे उत्त
सुन फ़क़ी

मन रे भज राधास्वामी नाम ।

दयाल दीन बन्धु दया से जीव चेतावें, शरणागत हो भज गुरु नाम ।
काल करम मोह माया भरम फँसावे, जीव सहत आपत विपत कलेश मुदाम
भूल भूलय्याँ जगत पसारा संसार का मित्थ्या है सब काम ।।
कुछ साथ न आवे, हंस चले अकेला परलोक परमधाम ।
पल पल आयु घटत सजनी ढलती आरही जीवन सन्ध्या शाम ।।
सुन री सुरत सखी तेरा धनी पास तेरे, घट ही उसका धाम ।
संशय काल शरीर में, गुरु कृपा से सुफल जीवन होय पूरण सब काम ।।
काल करम की गति है न्यारी प्यारे भक्ति करे निश्काम ।
दीन हीन अधीन होय सोई पावे गुरु पद विश्राम ।।
सबका प्यारा सहारा सबसे न्यारा साँचा रक्षक प्रभु नाम ।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी वही बख़शेंगे दया से सत धाम ।।

- मालती